श्रीः

श्रीगणेशायनमः

श्रीरणवीरप्रकाशचिकित्साग्रंथः

श्रीमन्महाराजाधिराज जीकी आज्ञानुसार
प[illegible]जीकोंने संस्कृतसें भाषाकिया
और जम्बू राजधानी विद्याविलास
नामक मुद्रा यंत्रालय मैं बख्शी
कृष्णदिआल जीकेअधिकारसें
छपा और जम्बूवासीपंडित
नीलकंठजीनेशोध
करछपवाया

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीरघुनाथोजयति ॥ अथात्रश्रीरणवीरप्रकाशग्रंथप्रथम-भागस्यसूचीपत्रम्

॥ श्रीरणवीरप्रकाश ॥

॥ प्रथमभाग ॥

इसप्रथमभागमें शारीरकसेंआदलेकरवातरोगाधिकारप्रयंतछपाहै इससेंआगे रक्तपित्तरोगसेंलेकर अर्कविधिप्रयंतदूसरेभागमेंचिकित्साछपीहै जिसकिसीको श्रीरणवीरप्रकाशका दूसराभागलेनेकीइछाहोवे सोजंम्बूराजधानीमें विद्याविलासनामयंत्रालयसेंमूललेलेवेकीमतप्रथमभागकी ४॥) साडेचाररुपैए

॥ श्रीरघुनाथोजयति ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

उँस्वस्ति श्रीगणेशाय नमोविघ्नविनाशिने गजवक्त्रैकदंताय विद्याबुद्धिप्रकाशिने ॥ दोहा ॥ गौपती-गौरीगिरपती गुरुगणपतिगीर्देव नमोचर्णयुगध्यानधर वरपाऊंजहसेव प्रथमभवानीसारदा पूजोविष्णु-महेश वंदोविघ्ननिवारयो गौरिपुत्रगणेश श्रीरघुकुलसूरजप्रभा रामचंदवलवीर युगचरननवंदनकरो जिह्-होवतमतिधीर ॥ छपै ॥ श्रीशंकरशुभजटाधार शिरगंगविराजे कमलफूलत्रिशूल हाथवरडमरूसाजे नीलकं-ठफनियरफरे अंगविभूतीगाज वामभागगिरजारहे कोटीरविद्युतिलाज चर्मअंगमृगछाल भालचंदशीतल-वरन रोगहरेआनंदकर होप्राणीशंकरसरन ॥ राजवर्णनं ॥ दोहा ॥ श्रीकिशोरसिंहहिदियो रघुवरहितवरयेह-तीनोकारणकलायुत उपजेभूपतिगेह तिहकारणनागरनवल प्रघटभयेसुरराज ब्रह्मकलायुतउदित श्रीगुला-बसिंहमहराज विष्णुकलायुतशांतिमत ध्यानसिंहवलवीर रुद्रकलायुतप्रघटयोसुचेतासिंहरणधीर तिहभूपन-केवंशमेउपजेकलानिधान राजनपतमहराजश्रीरणवीरसिंहमतिमान जौलौंसूरजचंद्रमा गगनसुमेरसुरका-ज तौलौंअटलहिमालवतचिरंजीवमहराज ॥ पुरवर्ननं ॥ दोहा ॥ सप्तद्वीपनवखंडमे भारतखंडअनूप ताम-हिपुरजंवूलसें सभदेसनकोभूप अतिश्रेष्ठजंवूनगर द्विपऊजागरराज वर्ततश्रीपुरसोंअधिक इंद्रपुरीद्युतिसा-ज नामरहतजाजगतमे नामचलतहैसाथ तिहनामहिकेकारणे कृपादृष्टिरघुनाथ एकदिवसउपकारहित-हुकमदियोमतिमान पंडितश्रीजगद्धरहिको फुनिज्वाहरवैद्यसुजान ग्रंथएकअद्भुतरचो विवधाचीकित्सासार-जिहकरप्राणीछुटहिगे रोगक्लेशसंसार हुकमपायचिंतनकियो गणपतिपूरनआश ताहिरच्योशुभनामधर श्री-रणवीरप्रकाश उन्नीसैपच्चीसशुभ संवतविक्रमजात ऋतवर्षासावनशुदी गुरूवारतिथिसात तादिनफुनि-उद्यमकियो वैद्यशास्त्रहितजान सकलग्रंथमतसारले भाषारचीसुजान भाषासास्वासास्त्रकी श्रुतिकीस्मृति-ज्योकोय सास्त्रसंस्कृतकठिनहै भाषासुगमीहोय ॥ सोरठा ॥ रच्योग्रंथशुभआस ग्रंथसंस्कृतसारले श्रीरण-वीरप्रकाश नानाछंदप्रबंधसो ॥ दोहा ॥ आदिग्रंथमतसारले भाषारचीसह्यार जामेचूकपरे तऊलीजोवै-द्यविचार ॥ श्रीधन्वंतरदेवजो नारायणअवतार नमोचरणयुगतासके हरतयोरोगअपार जोविश्वंभरविश्व-गत विश्वरूपभगवान पांचतत्वसोध्याईए घटघटज्योइकभान संपूरणब्रह्मांडका सतचितआनंदरूप-परमात्माइच्छारहिंत कारणकरताभूप स्वयंब्रह्मकीप्रकृती मायानामअविनाश ज्योंरविछायाप्रकृति चैतन्य-रूपप्रकाश परमात्माचैतन्यहैमायाजडपहिचान सोमनमायासंगतें भ्रमतनर्तकीजान तिहमायाजगसा-जिकर नानारूपधरेय याअनित्यसंसारमहि नटवरस्वांगकरेय मायानामसुप्रकृती तिहउपजीमतिवुद्ध-ताहिवुद्धिकोशर्णहो योगीपावैसिद्ध महतत्वतिसवुद्धिको रूपस्वयंवरमान अहंकारकिउत्पती महतत्व-सेंजान अहंकारकेतीनगुण रजतमसत्वपछांन सतरजकेसंयोगतें दशइंद्रीजियजान मनकीउत्पतजा-नियै सतरजजुगसंजोग वाह्याभ्यंतरइंद्रियन प्रगटकरतसवजोग प्रकृतिपुरुषसाधर्महै जुगअनादिरहिअंत

नितव्यापतइहजगतमहि प्रकृतिपुरुषजुगतंत वैद्यग्रंथकोंफलउदित मूलइलाजपछान सोइलाजमानुषउचित देहधारवरजांन चौवीतत्वजीवात्मा इहसमूहनरमान तातेंप्राणीकोउचित ज्ञानतत्वविज्ञान ज्ञानेंद्रीइहजानियें कायामोंअतिसांच जिव्हानेत्रफुननासिका कानत्वचाइहपांच अतितमसतगुणमिलतहि अहंकारयेकत्र तन्मात्राकोरूपसोंउत्पतकरैविचित्र शब्दस्पर्शरसरूपहै पंचमगंधपछान तन्मात्रायाकोकहै जोगीतत्वज्ञान तन्मात्रनसोंउत्पत्ती महाभूनइहपांच अकाशपवनअरूतेजजल पृथ्वीहोवतसांच कर्मेंद्रियपाचोकही सास्त्रकारमतजोय हाथपादअरुवाकफुनि लिंगगुदामिलसोय अकाशशब्दतेंहोतहै वायुसपर्शतेंजान अग्नतेजसोंजानवुद्ध रसतेंजलहिपछान गंधतन्मात्रसेहोतहै पृथ्वीरूपहिग्राय यहतन्मात्रासृष्ठिसव ग्रंथकारमतभाय कानशद्दअरूत्वचास्पर्श नेत्ररूपकोयोग जिव्हास्वादनासासुगंध ज्ञानेंद्रियविषयभोग कर्मेंद्रियकेविषयहि वाणीवोलनसार हाथविषयसवग्रहणहै पैरविषयउपचार लिंगविषयमैथुनक्रिया गुदाविषयमलत्याग विषयरूपकेभेदयह ताहिजीवअनुराग अवप्रकृतीकेनामसुण महतत्वअहंकार पंचतन्मात्राप्रकृती यहप्रकृतीपुरुषविचार इंद्रीदशपंचभूतहीमन षोडसयाहिविकार ताहितेंजीवजुआवरै सुखदुःखकोंजीयधार मनइंद्रीदशमहाभूत प्रकृतिवुध्दिअंहकार तन्मात्राकोमेलकर चौवीतत्वतनसार चौवीतत्वकोतनरच्यो जीवात्मातिहवास मनरूपीदूतहिवरै कर्मशुभाशुभतास कायारूपीदेहको सुखदुःखआयवरेय पापपुण्यद्वयवासकर देहीनामधरेय.

॥ त्रिगुणवर्णनं ॥

तीनोगुणकेरूपइह भिन्नभिन्नतिहचीन सतगुणरूपप्रकाशहै ज्ञानजुसुखपरवीन रजगुणहैरागादिकर दुःखहेतूपहिचान तमगुण तोआवर्णगुण मोहहेतुकरमान अवत्रैगुणयुतमनुजहै ताकेगुणलषलेय ईश्वरधर्मदृढभावना समतावसहितत्तेय संतापहिनाहिकरतहै सत्यवचनस्थिरवुद्ध धारणशक्तिधैर्य्ययुत क्षमाज्ञानकरसुद्ध कपटवर्जनिर्धारतिह परधनहिंसानाहि सवआगेफुनिनम्रता हितसोंधर्मकराहि इहमनधर्मप्रमानहै सतगुणकेमनमाहि अवरजगुणकेहेतुमन धर्मकहितहोचाहि निष्कारणक्रोधहिकरै परताडनमोहित वहुतदुःखितसुखवांछना दम्भकाममदचेत मिथ्यावोलनधीरनहिं अहंकारअभिमान आनंदचाहैवहुतमन रजगुणयाहिपछान तमसंयुक्तमनधर्मइह इश्वरधर्मविहीन एकटौरदंभहिरहै अतिआलसकरक्षीण देवगुरनमोदुष्टमन निंद्यकर्ममोंप्रीत नितचितलगेजुस्वप्नमो मनआज्ञानाहिजीत क्रोधअंधइवमूढता मनमोरहेमलीन तमगुणयुक्तमनधर्मइह जानलेहुपरवीन चैतनआत्मारामको कामक्रोधफुनलोभ मोहवुद्धिहंकारयुत फासअज्ञानकरक्षोभ आत्मज्ञानजुहोतनर फासकाटमतयुक्त संसारहिवंधनछुटे अंतहोयसोमुक्त इतिशारीरेसृष्टिस्थितिप्रथमःप्रकारः

॥ षट्रसवर्णनं ॥

॥ दोहरा ॥ षटरसकोअहारसुन भक्षभोज्यचर्व्यलेह चोष्यपेयकरहोतहै षटरसइसविधतेह ॥ दोहा ॥ मधुरअम्लअरुलवणहि कटुककशैलाजोय अवरतिक्तजगभाखहे षट्रसजानोसोय भक्ष्यभक्तकोकहितहै भोज्यसु-

लडूआद चिडवेचर्व्यसुलेह्यक:डी पेयदूधइत्याद चोष्यआम्रमनुषचरै प्राणवायहृदचाहि आमाशयमोपा-
यकर नाभिऊर्धलेयाहि क्लेदननामाकफहिमिल मधुरताहिकरहोय पाचकनामाअग्निजो नाभिस्थानगतसो-
य समानवायुभखवायकर आमाशयलुपकाय पुनअहारसोपाककर फेनभावहोजाय ज्योंकरदेगचआंच-
घर उछलफेनवरहोय त्योंकरअन्नसुउदरमहि फेनभावसंजोय जेकरप्राणजुवायातिस कुक्षीऊर्धउटाय पाच-
कपित्तगर्मितिसै पहुचैनहिकचभाय ताहुतेषट्टापडै अन्नउदरमोजान फुनसमानजोवायुहै नाभिस्थानप-
छान सोवायुअन्नचायकर ग्रहणीमोपहुचाय आमाशपक्काशयमध्यमेसोग्रहणीहैभाय पाचकआधारपित्त-
सोनाभिसमानविचार छठीकलावैद्यसुकहै ग्रहणीनामसुधार ग्रहणीअन्नअहारपक्क पित्तजुग्रहणीमाहि
तिहकौडारसामिलनकर अतिकौडाहोयजाहि विशेषहारपाकहिकहो पंचभूतात्मकदेह पंचअन्नपंचभूतमोर
हितजानकरलेह पांचभूतआहारमिल अग्निपांचसोंजान पाचकअग्निप्रभावकर अग्नीकोप्रजुलान सोअहा
रमोपांचभूत अग्नीकोप्रजुलात अपनेअपनेगुणनकोंअन्नपाचकरजात याप्रकारसेंगुणाहिको सोअग्नीनित-
क्षेम आठपाहिरचौसठघडी अन्नपकावतनेम भक्ष्यकमधुरालवणजो सोमीठाहोजाय अमलअमलही-
रहितहै तीक्ष्णकटुकखाय तिनकोरसातिहठौरमो कौडाहोतअवश्य इहरसविधपाचनाविषें जानलेहुम-
तिपश्य जाविधअन्नजुपाकहै तेरसतत्वस्वजान शेषरहितग्रहणीविषै सोमलद्रवाहिजुमान मलद्रवका-
जोभागजल सिरामार्गचलवस्ति मूत्ररूपमलजाहुकी विष्टारूपसमस्ति अपानवायुप्रेरितकरै लिंगभ-
गद्वारनिकार सोयिवायुफुनमलहिको काडतहैगुदद्वार पुनसोरसजोउदितहै समानवायुतिहचाय धम-
नीमारगउछलकै हृदमारगमोल्याय देहधाररससंगमिल व्यानवायुतिहचोय सोसवधातूपुष्टकर ज्योंक्षेतर-
जलजोय सवधातुमलभागकर स्थुलभागकरमान सुक्ष्मभागकेरूपजोसोअवआगेजान स्थुलभागइस्थितर-
हैसुक्ष्मभागचलधातु मलभागशरीरारंभक धातुमलहोजात जिहाविधिअग्निप्रत्यक्षकर इक्षुरसपकताजान ता-
हिशरीरारंभरस अग्निपाककरमान पंचदिवसअरुरात्रफुन डेडघडीतकजान सप्तधातुमोठहरता पक्करससार-
पछान इक्षुरसज्योंपकनकर मलतिहऊपरआहि त्योंकररसधातुविषे कफमलरूपसुचाहि सोकफप्राणजुवा-
युकर प्रेरितधमनीराहि क्लेदननामेकफहिको पुष्टकरैसोजाहि पाछेसारअहाररस जुगभागहितिहहोत स्थूल-
सूषमदुइकारणे तांकेवर्णोजोत स्थुलसुक्ष्मद्वयसुक्ष्मजो शरीराधाररसपुष्ट व्यानवायुतिसप्रेरकरि धमनीमारगइष्ट
उदराग्नीसंतापकर हरगुणपुष्टकरेय स्थुलभागप्राणाहिमरुत धमनीमारगनेय शरीराधारजुअन्नरस निकटयकृत-
होजाय रंजकनामपित्तकर रक्तहोयमनभाय तिहमलवात समानले धमनीनाडीराहि शरीरारंभकपित्तको जाय-
पुष्टकरवाहि साररसहितिहरक्तके दोहीभागहोजाय स्थुलसुक्ष्मकरहोतहैं इहयुगभागदिखाय सुक्ष्मभागशरी-
रारंभकपोषणलहुकराहि व्यानवायुधमनीगती रक्तदेहपहुचाहि स्थुलभागइहविधकरै सिरामार्गकरक्षेम शरि-
रारंभकमासमो जातारहेसुनेम अग्नीमांसपकायकर जोमलनिकलेसोय व्यानवायुप्रेरिततिसै कर्णआयमलहो-
य पुनसाराहिरसताहिको दोहिभागहोजात सुक्ष्ममांसकोपुष्टकर स्थूलभागयहभात वायुव्यानप्रेरितकरै उदर-
जुमेदस्थान जायअग्निपाकाजुमल तिहपसांहोयजान सोअतिशीतलहोयकर उदितनाडठहरात जवसोय-
कायअग्नीतपै प्रेरितव्यानसुवात नाडीद्वाररोमकूपकर वाहरआवतसोय जिन्हादांतकछुलींगमल मेदजम-
लतेहोय सारभूतरसताहिको जुगभागहीसोमान सुक्ष्मभागसोउदरमे पोषणमेदसुजान व्यानवायुप्रेरिततिसे
श्रोतमार्गकरजाहि सूक्ष्महाडोंसारमे मेदजुइस्थितताहि स्थूलभागप्रेरितकरै व्यानवायुधमनाडि सिरा-
मार्गशरिरारंभक हाडितिनोमेंवाडि हाडअग्निमलपाककर तिहमलव्यानसुचाहि शिरामार्गअंगुलीनमो

आयजुनस्वप्रघटाहि रोमकूपरोमहिवरै सारभुतरसभाग स्थूलभागव्यानहिपवन श्रौत्रमार्गकरलाग अस्थिउदितमध्मजायकर अस्थिकायवलदाय सूक्ष्मभागव्यानहिमरुत वढेअस्थिमोजाय मिझअग्रम-लपाकजो सिरामार्गकरसोय नेत्रनमोसोआयकर नेत्रमैलसोहोय औरत्वचाकोसनेहकर सारभुतजु-गभाग सूक्ष्मभागमिंजहिवरै स्थूलव्यानकरलाग धमनीसिरासुमार्गकर काषाशुक्रमोजाय शरिरारंभ-कशुक्रामिल शुक्रअग्रसुपकाय पुनमलताकोनहिरहै ज्यौंकंचनस्फटकसझार निर्मलशुद्धस्वरूपवर होवततासहिविचार फुनसारभुतरससेषजो दोइभागहोजाय सूक्ष्मभागतिहतेजहै लक्षणताकेगाय सभ-शरीरमोंस्थिररहै स्निग्धशीतसुविचार स्थिरअरुश्वेतफुनपुष्टकर चंद्रदेवतासार भाराकोमलस्वादरस सांद्रप्रस-न्नमलभाज्य चिपचिपाटसूक्ष्मरहै अष्टविंदुकरसाज्य नीलपीतरंगअल्पहै औसोताहिनिहार कर्मकथनताकों-कहै तेजरूपानिरधार सप्तधातुसारसरहै हृदयमाहितिहवास सर्वशरीरव्यापीरहै देहस्थितकाभास याहिअधि-कतादेहिजव प्रसन्नपुष्टवलहोय घटतयेहिजवकायमो नाशरूपकरसोय जीवयाहिमोरहतहै फुनउत्तमइह-कार तीक्ष्णबुद्धिफुनधैर्य्यधर तेजसकोमलधार स्थुलभागइहिमासप्रति स्त्रीनरहितवरभाय पुरुषशुक्रस्त्रीरु-धिरसो होतदेहचितचाय इस्त्रीजोनिशुभरुधिरहै नरशुद्धवीर्य्यमिलान दोनोसंगममिलनकर जोनिगर्भप्रमा-न गर्भस्थानजववासकर शुक्रश्रोणितकीधार एकदिवसरलमिलरहै वीरजरुधिरविकार पंचरात्रसमरूपध-र बुदवुदकारतिहहोइ दसदिनमोगोलावनै रक्तमांसमिलसोइ पक्षमात्रसोगोलहोय पैठरुधिरकोचित्र दि-नपचीसवीततजवै अंकुरपंचपवित्र मासवितितेप्रगटव्है पांचोस्थानअनूप सिरग्रीवास्कंधसोउदरहै पृष्टभा-गसमरूप दोमासनमोहोततिह पंचअनूपस्थान हाथपैरपसलीतथा कटिजानूयहमान संधीजोइनअंगमो सोहोवतत्रैमास संपूर्णअंगुलक्रिया वनतचतुर्थकमास पांचमासमोपाचहींप्रगटहोतसुनताहि नाकनेत्रअरु-कर्णनख पंक्तीदंतसमवाहि छठेमासमोहोतहै छिद्रकानअरुनास नाभिछिद्रजिह्वआसरे गुदइंद्रीयशुभतास सातहिमोसिरप्रगटव्है रोमभ्रुवानखसोध आठहिसंपुष्टदेहवर वलवीरजसंवोध नवमेमासमोहोततिस वोध-चैतन्यसंभार माताजोखावेपीवे नाभिनाडातिहहार नवदसभीतरहोतहै गर्भस्थाननिकार भगद्वारावाहरतउ-प्रगटकरनहंकार जेकरवीरजअधिकहै ताहिपुत्रपहिचांन रुधिरअधिकतवनारहै ग्रंथकारमतमांन वीरजरु-धिरसमानजव तवविहंडुलाहोय पूर्वशुभाशुभकर्मले तनधारीजगजोय इतिशरीरउत्पत्तीबालवर्णनं द्वितीय प्रकारः

॥ अथमानुषकेदेहमो जोवस्तूहै उन्कावर्णन. ॥

॥ दोहरा ॥ मानुषकीकायाकहौं जोवस्तुतिहमाहि वातपित्तकफधातफुनि उपधातुजोताहि उत्पत्तीऔल-यकारणे आदिसोयनिर्लेप यथाअर्थविधताहिको प्रगटकहौंसंक्षेप याशरीरमानसवसै एतेवस्तुसुहात कला-सातआशयरहै सातधातउपधात सातोंधातनकेमलय सातत्वचाफुनसात दोषतीनअरुमांसमेद अस्थीमज्जा-ख्यात दोसौदसअस्थीरहै मर्मस्थानशतसात रधैसातसौधम्मनी चौवीनाडीज्ञात मांसहीपीडीपांचसौ स्त्रीको-पंजसौवीस षोडशनाडीकायमोंव्यापकविश्वेवीस मानुषकेयाकायमो दसोद्वारनौछेद इस्त्रीकेरंध्रविचारिए विशेषतीनदशभेद.

॥ अथत्रिदोषवर्णनं ॥

॥ दोहरा ॥ वायुपित्तकफदोषत्रै मलभीजानप्रमाण पांचप्रकारकोरूपवर भिन्नस्थानसुजाण.

॥ प्रथमपवनस्वरूपं ॥

॥ दोहरा ॥ तांमोपवनअतिहीवली जोकारकअन्नविभाग नसैद्वारवर्ततरहै रसइंद्रीसमभाग पित्तक-फहिपिंगुलदऊ वातशरीरवलकार रसादिककोजुविभागकर पहुचावतरससार रजगुणमारुतसूक्ष्मबहु सी-तलरूक्षयहलकास आश्रयमलकेरहतसो पांचकोष्टघरवास मलनाभीहृदवासतिह कंठस्थानसुजान सर्व-देहव्यापकरहै पवनजानवलवान अपानगुदामेवसतहै नाभीस्थानसमान प्राणहृदेपहचानिए कंठस्थान-उदान व्यानसुसर्वशरीरमही व्यापकदेहमंझार ताहीतेंप्रगटतरहै सुखदुखइहसंसार.

॥ अथपित्तस्वरूपं ॥

॥ दोहरा ॥ पित्तगर्मपतलाअधिक सतगुणमयकटुवाही दग्धरूपकरहोतहै खटारूपस्वभाही पांच-स्थानमोरहतसो अग्न्याशयहितवास तिलप्रमाणतिहथानमो अन्नपचावनस्वास त्वचामध्ययहकांतिकरने-त्रनदृष्टकराय यकृतमोयहवासकर सबरसरुधिरदिखाय हृदैवासकरकरतहै वुद्धिदीरघविशाल तांतेपित्तउत्त-मकहैं वुधजनरूपदयाल नामपांचतिहपित्तके पाचकभ्राजकजान रंजकआलोचककहैं साधकपांचप्रमान

॥ अथकफस्वरूपं ॥

॥ दोहरा ॥ कफचिकनापिछलअधिक तमगुणरूपस्वभाय दग्धहोइखारारहे आमाशयमोजाय मस्तक-कंठहृदसंधिउर पांचस्थानहैताम तहांरहतइहगुणकरै थिरताकोमलपास क्लेदनश्लेहश्लेष्मनर मनअवलंव-नतिहनम श्वायअर्थतिहजानिये नसैरूपजिहकाम तीनवस्तुइहकायमो जवलगसमतामाहि तवलगप्रा-णीस्वछन्है रहैचैनमतिजाहि इतिशारीरेत्रिदोषस्वरूपवर्णनं तृतीयप्रकारः.

॥ अथउत्पतिकारणनिरूपणं ॥

आहारऔरपरिपाकसव गर्भस्त्रीउत्पत्त बालककेपोषणादिसव वर्णनकरोंहितमत्त भोजनादिजोकरतहै हृद-यप्राणआधार पवनजुप्रेरितप्रथमतिह आमाशयमोडार प्राप्तहोयजवउदरमहि षटरसकोआहार मधुरप-नेकेफेनवर भावप्राप्तिकरसार तवअन्नपचनप्रभावपित्त कटुकअम्लमतहोइ पाछेतिहआहारको पवनप्रे-रिकरसोई नाभीमोछटग्रहणकी कलामोप्राप्तसार तवआहारकोछठीकला ग्रहणीअग्निमंझार तवकौडाहो-जातहै अग्निभेदपरकार कोष्टअग्नकीआंचकर पचिरसताहिविचार जोअछापाकेनही काचभावहोयआम अग्निप्रज्वलितजोपकै मधुरस्निग्धरसनाम तववहिरसहोयचीकनो भलेप्रकारपकजाय सोरसनाडीउछलकर

धातूपुष्टकराय तबवहुरसअमृतकला देहीवलआरोग्य रसस्निग्धफुनचीकनो आनंदउरसोंभोग्य मंदअग्नि-करदग्धरस सोकटुउदरमंझार वारससोषद्वापडै सोरसविषहिविचार इनविकारकरसोइरस रोगरूपकोभाव ताहीतेरससारहै देहीमाहिस्वभाव नाभिसमानजुपवनहै सोइहृदयमोजाय पित्तरूपकरअग्नसो परपककरू-पहोजाय पवनप्रभावयादेहमो जोकरहैसंचार सरिरगजोदेहमो रसपहुचावनहार जोउत्तमअर्कसुखिचै सोदायकवलवीर मध्यभागतिहअर्कको लहूमांसगंभीर अधोभागतिहजलहिको मूत्रपुरीषमोडार फोग-रहैजोअन्नको काडतहैगुदद्वार फुनहिसारतिहरसहिको नाभिपवनसोचाय हृदयमाहिप्रापतकरै पित्तकर-पचनकराय पाचनकरसोलालहो सोरसरुधिरप्रभाव प्राणउत्तमआधारसो रुधिरपैष्टमनभाव मधुरसोइवल-वानहै पित्तदग्धजिहजाय एकधातुअधचारदिनहि प्रगटहोतनरसाय स्त्रीकोएकहिमासमो इस्त्रीभावरज-होत तवइस्त्रीनरसंगकर उत्पत्तक्रियाउद्योत.

॥ अथसातधातूवर्ननं ॥

॥ दोहरा ॥ सातधातवर्णनकरों ग्रंथसकलपरमांन रसरुधिरमेदमांसअरू अस्थिमिंजबलजान पिततेजकरधातसत मांसवीर्य्यप्रगटाय पांचोपांचोदिनाहिमो धातूभिन्नदिखाय.

॥ अथउपधातूवर्ननं ॥

॥ दोहा ॥ अवउपधातूकहतहों शास्त्रमाहिजोसात जिव्हादांतगलमैलजो रसधातूउपधात वातकफ-अरूपित्तत्रै रूधिरउपधातविचार कानोंमैलपछानिये मांसउपधातजियधार छातिमैलजोउछलै मेदउपधा-तुपछान वीसनखोंकोंकहतहैं अस्थीकोउपधात नेत्रमैलजोश्रवतहै मिंजउपधाततिहजान मुखउज्जल तनकांतिजो उपधातूशुक्रप्रमान अन्यप्रकारसातधातूवर्ननं स्त्रीकेदोधातूआधिक स्तनदुग्धत्रीयभाय स्त्रीकेभा-वखिनभंगुरे जैसेआवहिजाय शुद्धमांस सेउत्पतजुहै घृतवसासोयधात अर्कपसीनातीसरा दांतमुखहिजिह-भातकेशसर्वकायारहै सीतलबलहितकार निर्मलताचीकनवरै पुष्टधातवरसार

॥ अथसातत्वचावर्णनं ॥

॥ दोहरा ॥ उपरत्वचअवभासिनी स्निग्धविभूतिस्थान दूसरिलालजानामहै तिलउत्पन्नप्रमान तीजी-स्वेतजानामहै चर्मदलहिकोरोग चौथीताम्रसुवर्णहै स्वेतकुष्ठजिहजोग पंचमवेदनानामहै तामोसर्वउपाध छटीतुचाजोरोहिणी गंउमालमिरजाद सतत्वचास्थूलाकहै विद्रधिरहैजिहमाहि इहसातहितुचजानिये कायामेप्रगटाहि इतिशारीरकेसातप्रमाणदेहवर्णननामचतुर्थोप्रकारः ॥ ४ ॥

॥ अथसातआशय ॥

॥ दोहरा ॥ आशयसातवर्ननकरों भावप्रकाशअनुसार प्रथमहृदयआशयलहो कफहिकोघरधार दूजो-

घरनीचेहृदय आमस्थानप्रमाण तीजोऊपरनाभिके बांईऔरसुजाण अग्रस्थानसुजानिये जहांपचतआहार अग्रहिऊपरनाभिथल वातस्थानविचार पवनसुनीचेपेटमें मलस्थानसोपांच ताहिपरकछुरहतहै बस्तीमूत्र-हिसांच हृदयऊपरकछुजीवका रहतरुधरकोस्थान संपूर्णस्त्रीवापुरूषकेआशयएकसमान स्त्रीकेआशयत्रै-आधिक गर्भस्थानस्तनदोय आशयसातवर्ननकिए ग्रंथकारमतहोय.

॥ अथकलास्वरूपवर्णनं ॥

॥ दोहरा ॥ धातऔरआशयजहां मध्यझिलीपरमांन ताहीमेंसभवलरहै कलारूपतिहजान सातरूप-हैताहिको मनअरूहृदयजुलेय मासरुधिरअरुमेदमध्य चौथीझिल्लीसुतेय औरतिलीकेबीचमें झिल्लीकला-सुपांच छटीआतौकेवीचमें उदरअग्निधरसांच वीर्य्यधारणकलाइक जिहकरपुरुषपुरुषार्थ इहसातहिक-लदेहमो ताहीजानसमर्थ.

॥ अथकायानिरूपणं ॥

॥ दोहरा ॥ मानुषकिदेहीविषैं सातोसातदिखाय जाहीतेइस्थितरहै सोईकहोंमनभाय हाडजुमर्म-स्थानफुन नसांधम्मनीनाडि मांसपीडीअरकंडुरा रसरंध्रहिसतकांडि.

॥ अथहाडोंकास्वरूप ॥

॥ दोहरा ॥ कायामाहिजुअस्थिहैं जिनकरदेहखरेह सारताहिकोजानकर विनअस्थीनाहिकेह.

॥ मर्मस्थानस्वरूप ॥

॥ दोहरा ॥ जीवअधारसुजानिये मर्मस्थानविचार जोसबअंगनमेलकर हावभावमोसार.

॥ अथनसोंकास्वरूप ॥

॥ दोहा ॥ नसैदोइइनमोउदित वायुपित्तकफकार सातोधातूकोंवरै नसैवहनकरधार.

॥ अथधमनीनाडीस्वरूप ॥

॥दोहरा ॥ धमनीनाडीरसभरी वहैसर्वकेकाय पवनदेवताकोवरे कायारूपस्वभाय.

॥ अथमांसपींडीस्वरूप ॥

॥ दोहा ॥ मांसपिंडकायावरै सारजाननतनधार इहनरमांससरूपहै ईश्वरनामअधार.

॥ अथकंडुरास्वरूप ॥

॥ दोहरा ॥ सबहीनसमोउदितनस कंडुरानामशुभाय षोउशकलायुतअंगको प्रसरसंकोचदिखाय-

॥ अथदसरंध्रोंकास्वरूप ॥

॥ दोहा ॥ नासानेत्रकाननविषे लिंगगुदामुखजान दसवांमस्तककेविषे रंध्रसूक्ष्मनरमान स्त्रिकेतीनोंअ-धिकहैं दोस्तनगर्भस्थान इहहैछेदप्रमाणबुध कायशरीरमहिजान याशरीरमोरोमदुइ सूक्ष्मअनंततिहछेद नाभिनिकटबायेतरफ दोफुफुसरहैनिषेद उदानवायुआधारजो ताहिफुफुसमनलेय प्लीहनामऔरहितिली

ताहिनिकटवरसेय नाभिस्थानकेदाहने यकृतरुधिरवहुनाडि ताहिमूलद्वहिजुफिया ऐसेउचितसुनाडि रंजक-नामापित्तहै ताकोस्थानप्रमाण तिहमोरकस्थानहै सोयकृतमनजाण नाभीवायेभागमें आमाशयमाहि-परंत जोतिलहैसोजानिए जलवाहननसवंत सोतिलतांकोढाककर अंतरजलहिवहंत कुक्षमाहिदोगोलहै तिन्हकोवृक्ककहंत सोदोनोमिलजठरको मेदापुष्टकरंत वृषणजुपोतावीर्य्यको नसलेनेविचरंत नाहिअधा-रसुजानिये पुरुषारथचलमान लिंगगर्भदेनेउचित वीर्य्यमूत्रघरजान हृदयमनचित्तवुद्धिइह अहंकारका-स्थान नाभिस्थानसभइंद्रियन धमनीसारप्रमाण सभकायामेंफिररही नाभिगंभीरनसभाय नाभिवायुधातू-मिलत सवशरीरबलदाय नाभिपवनहृदयकमलमो जायस्पर्शकरदेय सोवाहिरहोकंठते विष्णुपदांमृतपेय-नासिकद्वारास्वधापीय फुनमारुतआकाश अमृतपानकरनासामुखहि उदरजायपरकाश फिरसंपूर्णदेहको जीवजठरवलदेहि प्राणपवनहृदजोगकर आयुर्बललषलेहि समापायइनदुहनको योगदूरहोजोय ताही-कोमृतयुगकहैं मरणनामहैंसोय यासंसारअसारमो अमरजीवनहिकोय जोजन्मैसोमृत्युवस अमरनामप्र-भुहोय रोगनिवारणकारणे वैद्यचिकित्साकार मानसचित्तविचारकर औषधरोगनिवार जोसोनरपथ्यनहिकरै जाप्यहोयसोरोग तिहकरसाध्यअसाध्यकर निश्चैमृत्युकजोग चतुरवैद्यसोजानिये कायवचायहितलाय धर्मअर्थअरुकामकर कर्ममोक्षमतभाय जोमानुषकोहिंसहै सोसभहिंसकजान रक्षाकरैयुकायकीसो-सभरक्षकमान सातोधातुअवरमल वातपित्तकफजान सबसमरहितजुकायमो तनपुष्टकरतहितमान ज-बसोनरकोघटवढै कुपितहौयतनमाहि तवनाशनगेदेहको निश्चैजानोनाहि तातेप्राणीउचितहै रामना-ममुखसार प्रतिश्वासभवमोक्षहै ताहिजीवउद्धार ॥ इतिश्रीरणवीरप्रकाशेशारीरके गृहस्थितिकलादि त्रि-दोषस्वरूपदेहविचार कायानिरूपणं देहातिसारवर्णनंनामप्रथमअधिकारः. ॥ १ ॥

अथान्यप्रकारधातूकथनं

॥ चौपै ॥ सातोधातुदेहमंझार दोषतीनमतसुश्रुतधार स्तंभहोतघरभीतरजैसें धातुमांनदेहमेतैसे प्रथमधातु रसनामकहावे कयलूसनाममतफारसगावे भोजनजातजठरकेमाही रसविपाककर उपजतताही तींनहजार पंदरांजोई कलप्रमांनवीतेरसहोई गिर्देजठरनाडवहुजानो हृदेजातउनद्वारामानो रससुभावइंदूवतहोई पत-ला स्निग्धसर्दसमसोई हृदयगत प्राणनामजोवायु रसबलदायकवृद्धिआयु चौवीनाडहृदेगतजानो दसो-ऊर्ध्वदसनीचेमांनो दोदोदक्षणवांमविचार इनद्वारारसदेहमंझार सिंचतज्यों जलपल्लवधावे तैसेंरसनाडीग-तजावे हृदाप्रसंनजाहुनेहोई अधिकहोएफुनित्यागतसोई ताकरतिलीकलेजेधावे रसकरतनवलवृद्धीपावेजा-प्रकारहिंदामतहोई गुनानिभेदऔरसुनसोई ॥ दोहां ॥ प्रथमहोतरसजठरमेताहिकलेजेधाय कयमूसनामधरदे-हमेनाडीद्वारपुजाय ॥ चौपै ॥ रुधिरधातसुनदूसरजोई षूननाममतफारससोई सोरसतिलीकलेजेआवे मिले-पित्ततवरुधिरादिखावे तीनहजारपंदराजोई वीतेकलारुधिरतवहोई सोफुनिरुधिरदेहमेधावे पसरतवलकां-तिप्रघटावे जेकरअधिकवातजवहोई रुधिरंगलालिपरसोई अतीअधिकजववातदिखावे रुधिरंगकाला-प्रघटावे अधिकपित्तजवहीलखपाय हरेआरंगरुधिरप्रघटाय अतीअधिकपित्तलखपावे जलेरंगवतश्यांम-दिखावे रुधिरगंधऐसीतवहोई मखीआदनसेवेकोई अधिकहोतकफऐसामांनो गुलबिरंगरुधिरकाजांनो ती-नहजारपंदरांजोई वीतेकलामेदतवहोई चौथीधातमेदतनजांनो उत्पतहोतमांसतेंमांनो तीनहजारपंदरांजोई

वीतेकलाअस्थितवहोई अस्थीधातपांचमीकहिए उत्पतहोतमेदतेलहिए तीनहजारपंदरांजोई वीतेकला-मिझतवहोई छेमीधातमिझतनजांनो उत्पतहोतअस्थितेमांनो तीनहजारपंदराजोई वीतेकलावीर्यतवहोई वीरजधातसातमीकहिए उत्पत्तीक्रमतनमेंलहिए पुरषनारक्रमएकोहोई वीरजरुधिरआर्तवीसोई भोजनजठ-रवीचजवआवे क्रमकरसातोधातदिखावे भोजनआदजठरकेमांही दिवसतीसलगवीरजतांही ज्योवीरजत्यों-आर्तवमांन पुरुषनारक्रमभेदपछान अवआगेमलनिआहोई धातूदोषहोततनसोई.

॥ अथमलवर्णनं ॥

॥ दोहा ॥ परसाहैमलमेदकाचमकमिझमलहोय कर्णनेत्रमलहोतहैजांनमांसमलसोय अस्थीमलनखबा-लहैजाप्रकारमलमांन वीरजकीमलनाकहीआगेदोषविधान.

॥ अथदोषवर्णनं ॥

॥ चौपै ॥ तीनदोषतनमाहिविचारो वातपित्तकफनिआधारो इनमेवातप्रवलतापावे जोतनसातोधात हिलावे सभकाप्रेरकवातविचारो ताकरवातआदमनधारो पित्तप्रघटदुर्गंधील्यावे उवाललेतशिरगरमीधावे तौफुनिगरमीभीतरजाय चित्तसक्तितिसदूरहटाय चित्तशक्तिहूकावलवात त्यागततुचामाहिविख्यात जेकरता-हिजतननाहोई तौफुनिऔरजोडमेसोई वातदोषतुमरोगपछानो समतागतीजहातहांमानो रुधिरसंगजव-वातविचारो सर्दखुष्कफुनिकृष्णानिहारो जेकरवातसंगकफहोई असलसुभावदूरकरसोई ताकरसर्दखुष्कक-फजांनो गैरतवीकफकोपपछानो जेकरवातपित्तसंगहोई गैरतवीपैंतककहुसोई वलीवातसभहूपैंजांनो च-र्चावहुतग्रंथमतमांनो अवसुभाववर्ननसुनसोई वातपित्तकफवर्ततजोई वातसीतअरुरूक्षपछांनो हलकास-कलदेहगतमांनो सूखमताकरद्दष्टनआवे सरदीसंगसर्दहोजावे गरमीसंगगर्मकहुसोई तरीसंगतरनिश्चेहोई-खुष्कीसंगखुष्कतुमजांनो हर्कतसकलवातगतमांनो छीकझमानीखांसीआवे रोदनधावनवातदिखावे उछ-लनवोलनभारउठाय जाप्रकारसभवातदिखाय वायूदोप्रकारकीकहीए सनातनवातवाह्यइकलहिए वातस-नातनलक्षनऐसा शुश्रुतग्रंथआदिमतजैसा रूक्षकेशासिगरेप्रघटावे मंदमतीपरलापदिखावे दयाहीनाजिव्हा-अटकाय अतीक्रोधतनदुर्वलभाय टूटतकांशपात्रज्योंसोई वोलततैसेंक्षुधानहोई एकांतस्थानमनअधिकलगा-वे रागरंगहांसीचितचावे खट्टागर्मसलूनाहोई मीठाआदमांनहितसोई इस्त्रीसंगप्रीतनाहिराखे व्यत्तयकार्यइंद्रि-आभाखे परांधीनजिव्हावसनाही स्वप्नवीचअतिवातदिखाही अथवापर्वतवृक्षदिखावे स्कंधमांसउचालख-पावे गोलनेत्रअरुछोटेहोई रूक्षधूसरे मांनोसोई वातसनातनलक्षनजांनो आगेवातआरजीमांनो ऊपरवा-तआरजीसोई लक्षनआदलिखे सभहोई औरमूत्रविटछीकपछांनो हिडकीवमनअवासीजांनो रोकतअ-धोवातमिलसोई क्षुधावंतनिद्रानहिहोई भूमाऊपरसयनसुखावे सहारतवरषामैथुनभावे प्रातकालजलपांनसुखा-य मदिरापांनअधिकमनभाय वातउत्पत्तीलक्षणजांनो सोजासकलजोडपरमांनो सिथलतावातगंठिआजै-सें परसारहैपीडतनतैसें भयानकअतिचिंतामनमाही भ्रफडसकलजोडपरताही षटेदांतकंपतनताको खु-ष्कीफर्कतदेहीजाको भारीकर्णतुचाफटजावे कर्णवीचकछुपीडदिखावे हृदेजलनसंभ्रममनमाही स्वप्नवी-चभयदेखलताही अथवाकृष्णांगलखपावे क्षुधानासनिद्रानहिआवे जेकरवातदेहकेमांहीं गरमीसरदीकिंच-

तताही जेकरवातरुधिरगतजांनो जहांवातउतपीडामांनो गरमीप्रघटलाललखपावे भोजनकरेअफाराधावे पडतछालकेखुष्कीहोई दुर्वलदेहक्षीनअतिसोई जेकरवातमांसगतजांने ग्रंथीपडेपीडकलुमांने सिथलताहोए चुवकलखपावे जैसेंसूई चुवकदिखावे सघनमांसग्रंथीवतसोई मानोमालांसूत्रपरोई जेकरवातअस्थिगतजांनो लक्षनश्वेतजंघपरमांनो उरूसंधिमेचुवकादिखावे अस्थिवीचचुवकलखपावे जेकरवातमिंझगतसोई निद्रानासदीर्घदुखहोई चुवकहोतअस्थीकेमाहीं जहांमिंझपीडालखताहीं जेकरवातवीर्यगतहोई वीर्यपाततहीछिनसोई अथवाभीतरवीर्यरुकावे अथवारुधिरवीर्यसंगआवे रसगतवातहोतजवजाको करेयक्षमफुनिपीडाताको जेकरवातपेटअतिधावे वातोदरकरपेटफुलावे जहांतहांसोजहोततनमाहीं करपदखैंचतपीडाताहिं गर्भाशयवीचवातजवजांनो गर्भपातताहीछिनमांनो अथवागर्भवीचरुकजावे अथवामूढगर्भप्रघटावेजेकरवातजठरगतजांनोखांसीकोतादमीपछांनो वैठतकंठतृषाअतिहोई वमनहोतचिंतातुरसोई नाभीऊर्धगेगजोजांनो सोसभवातकोपकरमांनो करपदवीचवातप्रघटावे अजीरनहोतवातवलपावे वातजठरनाडीकिमांहीं सहायकपित्तमिलेउतथाहीं अथवाकफघरजावतसोई छातीस्थांनभुजागतहोई जेकरवातकर्णवलपावे वधिराकरेपीडप्रघटावे जेकरवातजीभगतहोई जिव्हास्थूलअटपटीसोई जेकरवातनासिकाधावे सुगंधीदूरपीडप्रघटावे जेकरवातनेत्रगतहोई पाढाकरेदृष्टिहरसोई लक्षनप्रघटवातकाजांनो पीडाफिरेचुवकसंगमानो जेकरवातरुधिरकफहोई फूटतजोडपीडकरसोई फूटतजोडक्षुधाहटजावे वैठतठुडीखुष्कीधावे जेकरवातसंगकफमानो सोजासकलजोडपरजांनो कांपतजोडपीडप्रघटाय रूक्षकाष्टवतजोडदिखाय हर्कतसकलदूरकरसोई रहेतापखेदातुरहोईजेकरवातपित्तसंगजांनो फुनसीप्रघटपीत्ततनमांनो जेकरवातरुधिरसंगहोईनाडीलालऊर्धगतसोई मुखअरुजोडहोततवऐसें लालीकृष्नरंगपरजैसें सभकायतनएकसमहोई रुधरीयतनभिन्नसुनसोई वासलीककारुधिरछुडावे औरयतनकररुधिरहटावे एकवातवादीकहुसोई वजउलमुफसलअर्वीहोई फारसवादहफतअंदांम वातदोषवहुविधकेनाम प्रथमवातभीतरजवजावे पित्तश्लेष्मपरपीडदिखावे वहविधनामवातकेऐसें रीगडवातगंठिआजैसें कमरपृष्टपीडातनमाहीं वहुविधरोगवातउपजाहीं.

॥ अथवातवर्णनं ॥

॥दोहा ॥ मुख्यपांचविधवातहै इकइकषोडसजांन जाप्रकारअस्सीकहे वातग्रंथपरिमांन प्राणउदानसमानहै अपांनव्यानपरमांन पांचोनामकहे यथाभिन्नभिन्नगुणजान ॥ चौपै ॥ प्राणनामजोवायूहोई हृदयकंठगतमांनोसोई बुद्धीस्मृतीदृष्टिबलदेवे छीकथूकनिगलतसुखसेवे उदांननामजोवायूकहिए छातीकंठनासिकालहिए सकलउपायकार्यमेधावे चिंतकवाणीबोलसुखावे समानतीसरीवायूजांनो छातीनाभीजठरपछांनो खांनपांनरक्षामनलावे मलहूतेंरसजुदाकरावे अपांनवातचौथीमनधारो गुदालिंगकटिपादविचारो आर्तववीरजगर्भकहावे मलमूत्रादिकवाहिरल्यावे पंचमव्याननामकहुसोई मुख्यहृदयसिगरेतनहोई हिलावतनेत्रपलकसोजांनो शस्त्रक्रियादिककर्मपछांनो षटऋतुभेदवातगतजैसें अवअगेवर्ननसुनतैसें ग्रीषमजेष्टअषाढकहावे प्रतिदिनवायुवृद्धीपावे श्रावणभाद्रोवरषाहोई वातकोपतनपसरतसोई असूंकार्तिकसर्दकहावे वातकोपहानीकरधावे विनापित्तजिगरीकेनाहीं इनदिनकोपवातकाताहीं उत्पत्तीकारणसुनिएसोई वातकोपजाकारणहोई गर्मखुष्कवस्तुजगजांनो वातकोपकाकारणमांनो तरअरुगर्मवस्तुजोहो-

ईवातकोपदूरीकरसोई वातदोषहोवेतवजांनो निजनिजस्थांनभेदजवमांनो मुख्यस्थांनवायूहितजोई आ-गेभेदसुनोअवसोई नीचेजठरकमरगतमांनो वृषणदोईअरुकर्णपछांनो अस्थीतुचानाडकेमांही असीभेद-वातइनथांही.

॥ अथवातहरऔषधवर्णनं ॥

चौपै सकलवातहरऔषधजोई आगेलिखाभेदसुनसोई असगंधभडिंगीहिंगूजांनो रहसनअमलतासपछांनो पाषानभेदपाडलहितहोई प्रसारनीवाविडंगहितसोई पतूनीवालविल्वहितजांन दोकंडेआरीअरनीमांन जढएरनअरुकौंचपछांनो साजजहिंदीथोहरमांनो काष्टनाजतौवंद:सोई तीनतूचोकजुआंइनहोई जऊे-खारविडलूणकहावे इटसिटनिंवूकिंवसुखावे सुंठीजीराश्वेतपछांनो जढजमालगोटेकीमांनो तिंतडीक-सालूनीहोई चित्रातजकांएफलसोई भखडाककडसिंगीजांनो काकैनीमाषैनीमांनो अनौलनामजोमह-दीहोई मुंडीवान्नीअतिहितसोई सींसासांभरलूणकहावे त्रिफलामेथीवातहटावे हीनकूतरीलाचीजांनो ता-लीसपत्रमघसौंफपछांनो नारदयनगजपिपलजोई पिपलामूलमर्चहितसोई पुरातनगुडअजमोदाजांनो के-शरकणकलौंगहितमांनो गुगलएरणतैलसुखावे कटूतैलकस्तूरीभावे धनिआंवीजकौडहितहोई अगरथोंम-हितजांनोसोई सकलवातहरऔषधजांने लखसुभावसेवेसुखमांने फकीअथवाचूंरणसेवे वंधनमर्दनहुकना-लेवे गोलीगोघृतमेलवनावे करेयतनदुखवातहटावे अवसंजोगीऔषधजांनो आगेलिखीग्रंथमतमांनो वछजुआंइनमघांमंगावे मर्चपिपलामूलरलावे काष्टनाजदौसौंफमिलाय सीसालूणचित्तरापाय वाविडंग-समऔषधल्यावे साडेत्रैत्रैमासेपावे सुंठीकंदविधारालीजें साडेत्रैत्रैतोलेदीजें हरडडूडतोलासंगजांनो पुरा-णागुडसततोलेमांनो गोलीमासेपांचवंधावे तप्तनीरसंगप्रतिदिनखावे जोडवातवाकरपदहोई रींगडवात-आदहरसोई गुदापीडकफदूरहटावे सकलवातकाखेदमिटावे वाविडंगाहिंगूमंगवावे धनिआंगजपिपल-संगपावे पाद:जीराश्वेतमंगाय मघसुंठीचोकचित्तरापाय वरेआमर्चभडिंगील्यावे सर्षपकौडभागसमपा-वे सभतेदूनात्रिफलापाय सभसमांनगुगुलमंगवाय करइकत्रघृतमेलकुटावे गोलीमासेतीनवंधावे प्रतिदि-नएकमधूयुतखाय सकलभेदकावातहटाय त्वचापीडमुखपीडाजावे प्रमेहदूरवलवीर्यवधावे संग्रहणीववा-सीरहटजाय सेवनकरदुखदूरहटाय सीसालूणचोकमंगवावे वाविडंगअजुआंइनपावे हिंगुमेलवरावरली-जें अंवलकिंवभावनादीजें सातभावनादेवेकोई फुनिरसभखडालीजोसोई सातभावनाताकीदेवे तौफुनि. रसआद्रककालेवे सातभावनाताकीदीजे फुनित्रैलचनेऊेकीलीजे एकभावनाताकीदेय फुनिपीसगोलीक-रलेय गोलीमासेतीनवंधावे प्रतिदिनगर्मनीरसंगखावे कांजीछाछकिंवरसहोई अनुपांनलखसेवेकोई सकल-भेदकावातहटावे वातसीसछातीकाजावे अरुचीदूरकंठदुखखोई आगेतैलसुनोअवसोई असगंधभलावा-तैलसुखावे सर्षपतैलातिलोंकाभावे सतावरतैलभखडाजोई प्रसारनीगजप्रसारनीसोई गर्मतैलकरमर्दन-कीजें वातरोगनिश्चेहरलीजें अथवाऔरऔषधीपावे तैलपकायमलेदुखजावे गर्मतैलजलवैठेकोई अथ-वाहुकनाकरसुखहोई अवउुटनेकीविधीवखांनो मर्दनकरदुखदूरपछांनो अगरतेलिआकुठमंगावे छडअस-गंधकस्तूरील्यावे जरंवादहलदीमंगवाय दारुहर्दलसंगरलाय आटामसरताहिसंगपावे करइकत्रउुटनावन-वावे निर्वातस्थानमर्दनकरवाय सकलभेदकावातहटाय निर्धूमअग्नसुखदायकसेवे रूंईआदपश्मतनलेवे स्ना-

नगर्मजलसेवनभावे करेपथ्यदुखवातहटावे मांसरसाचनेओंकाभाय कणकगावघृतपथ्यसुखाय कुलथीमा-षचिरींजीभावे तितरमांसकेरलेखावे कोमलसागसतावरहोई ककोडासागसौंफाहितसोई दधीछाछगोकी-मनभावे किंवखटाईपिस्ताखावे कंडेआरीफलवदांमाहितजांनो दाखवतांऊमूलीमांनो अखरोटनेउजाआद्र-कहोई छिलकेविनमुंगीहितसोई पुरातनतंडुलाखिचडीखावे कूपनीरहितवातहटावे जाप्रकारसभपथ्यविचा-रोआगेऔरकुपथ्यनिहारो दिवासयनजागेनिशिमाहीं शीतलजलमदिराहितनाहीं वातिकनरमैथुननहिभावे चनेकणकमीठानहिखावे सावतमुंगीमटरजोहोई मसरआदघृतकचासोई सकलवातपरसिक्षागावे पथ्याप-थ्यविचारसुखावे आगेवास्तववातपछांनो ऊनवातकालक्षणमांनो वातऊनतनसिथलादिखावे टुटतजोड-वालनहिभावे प्रतिदिनकफकीवृद्धीजांनो बुद्धिमंदचिंतातुरमांनो जहांवातकफतहांविचारो कफहरऔ-षधनिश्चेधारो.

॥ अथान्यमते कफवर्णनं ॥

॥ चौपै ॥ आदवातकफदूसरजांनो आगेलक्षणकफकेमांनो कफसुभावसरदीतरहोई लेसदारकोम-लहैसोई हर्कतसकलएकनाभावे करेसिथलकफलक्षणगावे अवलक्षणकफजाकोहोई धीरगंभीरविचार-तसोई भरामांसतनमोटाभावे अस्थीसकलदृष्टनहिआवे सीतलतनभोजनरुचिनांही कार्यखेदलखधीरज-ताहीं गोघृतरंगहोततनतैसें अथवाकंचनरोपनजैसें छातिमस्तकचौडाजांनो कृष्णकेशतनास्निग्धपछांनो नि-र्मलनेत्रताहुकेहोई नेत्रकोणलालीपरसोई मैथुनसमेहोतवलवांन अधिकतरीरसवीरजमांन अधिकपुत्रकंन्या-कमहोई स्वछसुभावक्रोधाविनसोई मित्रवंधुलखआनंदपावे आयूअधिकनींदमनभावे मातपितागुरुसेवा-जाने लज्जावांनज्ञानमनआने वाणीभारीसाफादिखावे कौडीतीक्षणचीजसुखावे गर्मखुष्कभोजनमनभाय लघुभोजनअतिकवहुनखाय गुणीआपगुणसभकाजांने रोदनअधिकनाहिमनआने वागवृक्षस्वपनेमेदेखे ह-रेधासकुसमावलिपेखे कफीपुरुषकरडातनजांनो भारीकंठसीसमनआंनो कोतादमीकासातिसहोई खाज-नेत्रमुखनासिकसोई अधिकनासिकानीरचलावे खाजजोडपरसोजदिखावे सायंकालप्रातवलहोई कफ-लक्षणऐसातनसोई.

॥ कफहरऔषधवर्णनं ॥

॥ चौपै ॥ आगेकफहरऔषधगावे सकलग्रंथमतखेदहटावे गिलोपतीसगोरोपनहोई चिरायतानिंव-खैरहितसोई वालाश्वेतधमाहपछांनो हलदीदारुहदंलमांनो कांफलश्वेतपापडाजोई काष्टनाजपाडलहि-तसोई मुंडीवीजकसौंडीजांनो वथूनीलूणवावचीमांनो सेवतीपाडलरंगणजोई मैनफलनागदौनहितसोई ककोडात्रिफलामहदीजांन अनौलात्रिवीपुटकंडामांन जढजमालगोटेकीजांनो त्रायमानविडलूणपछांनो मालकंडुनीलाचीजोई अजुआंइनसुंठीअतिहितहोई किकरसौंफसारिवाजांनो असगंधसौंफसज्जिहित-मांनो जउोखाराहिंगूमनभावे धनिआंकेशरनागसुखावे त्तज्जतमालपत्रहितहोई तालीसपत्रसितजीरासोई थोमचोकगजापिप्पलभावे चित्रापिप्पलमूलसुखावे अंमलतासवकमजोहोई वछजुआंइनअतिहितसोई अगरसिलारसमुंगपछांनो सुपारीमुत्थरआद्रकमांनो कवावचीनीजलपत्रीहोई मघांमचंहाल्महितसोई

चंदनजैफललौंगपछांन कुलंजनककडासिंगीमान मस्तकीकुठभडिंगीजानो पुष्करमूलवतीरामांनो ताम्र-
भस्मलौंअतिसुखदाई कफहरऔषधसभीसुनाई आगेऔषधजोगविचारो कफकरदूरसत्यमनधारो आद्र-
कसुंठीमघांमंगावे चिरायताहलदीमर्चमिलावे लेसमऔषधपीसवनाय दुंवेकाफुनिपित्ताल्याय ताकेवीच-
सातदिनसोई संपुटकररारखेजवकोई फुनिसुकायचूरनवनवावे अंगुलसेंतालूपरलावे मलेजीभकफवाहि-
रआय निश्चेकफकृतदोषहटाय जरदीसकलदेहकीजावे कृष्णकेशकरसुखउपजावे कांफलपुष्करमूलमंगाय
भडिंगीककडासिंगीपाय मघमिलायसमभागपिसावे चूरनप्रातमधूयुतखावे मासेतींननिताप्रतिखाय निश्चे-
कफकृतदोषहटाय अथवावमनकरेकफजावे गरारेकरदुखदूरहटावे निंवूरससुंठीमघलीजें आद्रकलूणाहिं
गुसंगदीजें इनकेजलसोंकरेगरारे निश्चेकफकृतदोषानिवारे गर्मनीरकरताहिपिलावे गर्मरेतकरजोडसिकावे-
अतिमैथुनाहितजागेसोई अतीखेदचिंताहितहोई पुरातनमदिराअतिहितजांन खुष्काभोजनकफहरमांन
कंडेआरीवीजमघांमंगवावे सुंठीमेलवरावरल्यावे पीसनासिकापावेसोई निश्चेकफदुखवाहिरहोई लूणफ-
डकडीमघांमंगावे पलासवीजअरुछिलकाल्यावे पीसगर्मजलनासिकपाय सिथलताकफमूर्छाहटजाय
सगेहवीजमनासिलामंगावे लूणफडकडीसंगरलावे लेसमगूत्रपायपिसवाय अंजनकरकफदोषहटाय
तापवीचमूर्छाप्रघटावे अंजनदूरकरेसुखपावे त्रिफलात्रिकुटाद्यारमंगाय वीजमीचकालूणरलाय लेसम-
औषधखर्लंकरावे तुलसीनीरपायपिसवावे मूर्छासंनिपाततपमांहि अंजनकरकफनासेतांहि तोलात्रिकु-
टालूणमंगावे आद्रकरसत्रैतोलेपावे गरारेकरकफदूरहटाय कछुपीवेकछुनासिकपाय पाउोएकसिरका-
मंगवावे आद्रकरसत्रैतोलेपावे राईसुंठीपीसमिलाय मासेतीनतीनसमल्याय पादभारपरवैठेसोई गरारे-
करकफवाहिरहोई मुखपसारवैठेदुखजावे छातीकंठसीससुखपावे चमकतनेत्रशुद्धहोजाय क्षुधाप्रवलक-
फदोषहटाय मुंगीरसफुलकामनभावे कुलथीमांसजांगलीखावे आद्रकनिंवूथोंमपछांनो मधूसौंफमेथी-
हितमांनो तोरीसागवतांऊखावें कफहरपथ्यदेखवलभावे आगेकफकुपथ्यसुनसोई जाकारनकफवृद्धि-
होई दधीदूधसीतलसोजांनो वासीसीतलभोजनमांनो दिवासयनमूलीहितनाहीं मिसरीलौंमीठातजताहीं
अतीस्निग्धचिकनाजोहोई कफीपुरुषत्यागेसुखसोई असलोकफदेहीकेमांहीं घटजावेसुनलक्षणताहीं
कफस्थानसूकेसभजांनो घूंमतशिरआलसवहुमांनो सिथलजोडसिगरेतनहोई आगेऔषधसुनिएसोई
तरअरुगमर्चीजाहितजांनो जैसेंगावदूधघृतमांनो अनूपदेसकेजीवविचारे उनकामांसकफीमनधारे मिठे-
आईचिकनवस्तुनरखाय मालसघृतअतिनिद्राभाय पांचभेदकफहूंकेजांनो तिनमेलंवकनामपछांनो छाति-
स्थानजाहुकाहोई रहेसदावलदायकसोई दूसरकफकलीदकरकहिए जठरस्थानजाहुकालहिए कौडीस्थान-
जठरमुखजांनो उवालत्तेतदुर्गंधीमांनो खांनपांननीचेकरसोई रहेसदावलदायकहोई वोधकनामतीसरीजांनो
जिव्हास्थांनानिवासपछांनो सकलस्वादकाकारणसोई जाप्रकारइकनिश्चाहोई औरवैद्यमतऐसाजांनो वात-
स्वादकाकारनमांनो चौथीकफतिर्यककहुसोई निवासस्थानसीसमेहोई जासोंजलनेत्रनतेंआवे जाप्रकार
तिर्यकगुणगावे श्लेष्मकानामपांचमीकहिए निवासस्थानजोडसभलहिए दृढकरकोमलरक्षाधारे जाप्रका-
रकफगेहविचारे विनारोगदेहीजवहोई पांचभेदकफनिश्चलसोई जवविगाडतनमाहिविचारे स्थानछोडकफ-
पसरतसारे कफउछालदेहीजवजांनो परस्परदोषविरोधीमांनो करेयतननिश्चामनमाहीं विनावमनऔषधहित-
नाहीं अथवाप्रतिदिनमधूखुलावे धीरजकरकफनिश्चलथावे शिशरवसंतदोइऋतजांनो कफउछालतनअ-
धिकपछांनो ग्रीखमऋतसंधीजवहोई कफउछालतननिश्चलसोई कफकरऔषधभोजनजांनो आगेलिखा-

ग्रंथमतमांनो तरऋरुसर्दवस्तुजोहोई कफकरभोजनमांनोसोई कफपैदाकरनिश्चलराखे इतनाभेदसर्दतर-भाखे तरऋरुगर्मवस्तुजोहोई कफकरदेहपसारतसोई गर्मखुष्कवस्तुजोजांनो घढावतकफनिश्चामन-ग्रांनो.

॥ अथपित्तवर्णनं ॥

॥ चौपै ॥ जाप्रकारकफतनमेंहोई आगेपित्तभेदसुनसोई पित्तदोषतीसरपहचांनो सफरानामफारसी-मांनो पित्तसुभावगर्मतरहोई पतलासूषमतीक्षणसोई गरमीतनअगनीवतजांनो सकलपित्तकाकारणमांनो अगनीजठरपित्तकरसोई वाग्भटकहेरुधिरमलहोई कईवैद्यऐसामतमांने रुधिरपित्तसमभेदनजांने पित्त-गर्मतरसूषमहोई रुधिरगर्मतरभारासोई किताबकफायाभेददिखावे चर्चाअधिकतहांमनभावे क्रोधसुगंधी-प्रीतीजोई रतीआदवलपित्तजसोई आगेलक्षणकारणजांनो जिनकरपित्तअधिकतनमांनो धनीतेजचंचल-मतिहोई सीघ्रकार्यकरक्रोधीसोई सीघ्रश्वासमैथुननहिभावे उदारखेदकरकार्यदिखावे निर्मलवस्तुसुगंधभाय सरणागतरक्षामनलाय होएखेदचिंतामननाहीं अग्नीतेजक्षुधाप्रगटाहीं खट्टामीठाकौडाभावे सर्वतसीतलनी-रसुखावे परसाअधिकहोततनमाहीं दुरगंधीचलेदेहतेताहीं कणकरंगवतजोडलखावे मुखपरछाईदाघदि-खावे पीलेकेशलालकछुजांनो वृद्धापनसीघ्रदेहकृशमांनो अतीधूपवामदिरापांन लालनेत्रताहींछिनजांन स्वप्नवीचपुष्पांकुरदेखे पलासवृक्षवाअग्नीपेखे विजलीनिकटासिंहलखपाय मर्कटविल्लीव्याघ्रदिखाय.

॥ अथपित्तहरऔषधवर्णनं ॥

॥ चौपै ॥ आगेऔषधकोशविचारे प्रवलपित्ततनखेदनिवारे चिरायतानिंवकौडहितहोई वालविल्वपि तपापडसोई हलदीपांनसेवतोजानो पादःपाडलमूलीमांनो तोरीमिठीसौंफसुखावे त्रिफलात्रायमानमनभावे इलाचीचंदनस्वेतसुखाय कपूरवचंजढमेंदीभाय कंदूरीकत्थवावचीभावे गुलावपुष्पकमिश्रांचितचावे कंगु-णीजढजढकिकरभाय खव्वलजढगूलरसुखदाय मुलठीनागरमोथाजांनो नारदयनवांसामनआनो दूध-लुहारामिश्रीहोई मखनआदगावघृतसोई अंगूरफालसाअतिहितजांनो सकलपित्तहरऔषधमांनो गोली-चूरनक्काथवनावे सेवऔषधीपित्तहटावे चाहेसीघ्रदूरकरकोई विनरेचकहितऔरनहोई जेकरदेरसंगनिकसा-वे ताहिगावघृतअधिकसुखावे सीतलओषधचंदनजोई गुलावकपूरसुगंधीसोई अतरसुगंधीवस्त्रवनाय पुष्प-मालीहितरागसुखाय प्रथमपहरसुखरातविचारे वैठचांदनीपित्तनिवारे सवजीवागहोदमनभावे सुंदरतिरिआ-प्रेमदिखावे वालखेलवंधूमनधारे सकलपित्तहरयतनविचारे जेकरअधिकपित्ततनजांने रुधिरनिकालसीघ्रसु-खमांने त्रिवीदाखत्रिफलासमल्यावे गोलीमासेपांचवंधावे प्रतिदिनसीतलजलकेसंग सेवनकरेपित्तरुजभंग-दाखपुष्पकमिश्रांमंगवावे दुधकलमिठीलाचील्यावे ककडसिंगीकत्थरलाय नूतनऔषधपीसवनाय मोतीभ-स्मकपूरमिलावे लेसमचंदननीरपिसावे गोलीमासेतीनवंधाय सेवनकरेपित्तदुखजाय सुर्षवादाआदयक्ष्मतन-होई पित्तविकारहरेसुखसोई जउोकणकचावलमनभावे मुंगीगोघृतमखनखावे दूधनीरसीतलहितजानो चंद-नश्वेतकपूरपछांनो दुधकलमिठीअतिहितहोई कंदूरीसागचुलाईसोई इत्यादिकपथ्यपित्तहितजांनो आंगेपि-

त्तविरोधीमांने तीक्षणगर्मवस्तुजोहोई दधीतैलतिलहितनहिसोई खारीखट्टासोनहिभावे वतांऊषट्टीछाछन-
खावे गर्मतैलसिरकानाहिभाय आद्रकथोंमधूपनहिभाय वस्त्रलालकालेनहिलावे अतीस्वेदव्यायांमनभावे ती-
क्षणसर्द वस्तुजोहोई अतीपित्तपैदाकरसोई तीक्षणगर्मवस्तुजोजांनो पसारतपित्तदेहमेंमांनो सर्दपित्तकोदूरह-
टावे जाप्रकारतनपित्तादिखावे पैदापित्तवर्षऋतहोई सर्दऋतूतनपसरतसोई ऋतहिमंतसिगराहटजावे जाप्र-
कारऋतुपित्तदिखावे असलीपित्तहोततनमांही ऊनअधिकसुनल्लक्षणताही घटेपित्ततवक्षुधाहटावे सीतल-
जोडतेजतनजावे तिक्षणगर्मखुष्कहितहोई पांचभेदआगेसुनसोई आमासयपाचकपित्तपछांनो भेदचारपर-
वलवतमांनो पकावतखांनपांनतनसोई रेचकपित्तदूसराहोई आमासयमुखकौडीजांनो रहेतहांरसवृद्धीमांनो
विचा रकवुद्धीउघमहोई सावकपित्तहृदयगतसोई तीसरपित्तरंगवतजांनो आलोचकचौथानेत्रपछानो
वराजकपित्तपांचमाकहिए त्वचागतपित्तपांचतनलहिए.

॥ अथऊनाधिक सातधातूवर्णनं ॥

॥ चौपै ॥ सातोधातूतनगतजांनो आगेलक्षणजतनपछांनो ऊनअधिकधातूतनहोई स्थांनत्यागदुखदा-
यकसोई रुधिरऊनतनमाहिविचारो सुस्तजोडतनखुष्कनिहारो षट्टीसर्दवस्तुरुचिआछे करपदश्वेतस्नानकेपा-
छे रुधिरआधिकलक्षणसुनसोई करपदलालउलटगतहोई ऊनरुधिरपरयतनाविचारे कफहरऔषधकोइसह्लारे
रुधिरवृद्धिकरऔषधजोई भस्मफुलादगर्मतरकोई गंधकआमलसारसुखावे निर्मलरुधिरसीघ्रतनल्यावे जे-
कररुधिरअधिकतनजांने रुधिरछुडायसीघ्रसुखमांने अवरसधातदूसरोकाहिए ऊनअधिकलक्षणतनलहिए
ऊनहोएरसलक्षणजांनो सूकतकंठजीभमुखमांनो आमासयनिर्वलवलपहुंचावे करेपथ्यरसवृद्धीपावे अ-
धिकहोएरसलक्षणजांनो श्वेतहोएतनसीतलमांनो सिथलजोडखांसीप्रगटावे कोतादमीनींदवहुल्यावे निं-
वूरसहिंगूसंगलीजें गरारेआद्रकरसयुतकीजें सुंठीलौंगक्काथकरपांन होवेरसवृद्धीकीहांन मासेदसतरुंजर-
सल्यावे छेमासेजीराल्लूणमिलावे चूरणगर्मनीरसंगखाय रसवृद्धीदूरपथ्यमनभाय अधिकमांसलक्षणसुनसोई
वडापेटमुखगिरदाहोइ गिलटीतालुजिव्हाजांनो भुजापृष्टअतिमासपछांनो सरीरअधिकमोटाहोजावे
अधिकपित्तकायतनसुखावे ऊनमांसलक्षणसुनसोई सिथलइंद्रिआंताछिनहोई ग्रीवाकर्णमसूडेजांनो पिं-
नीआदषुष्कसभमांनो नीचेउतरकनपटीआवे श्वेतरंगलक्षणप्रघटावे कफवृद्धीकायतनसुखाय मांसजी-
वपक्षीकाखाय. चरवीअधिकहोततनमांहीं मांसवधेकालक्षणताही तंगश्वासनिर्वलतापावे कफहरऔ-
षधफाकाभावे मपीरनीरप्रातिदिनकरपांन होवेअधिकामिंझकीहांन ऊनमिंझलक्षणमनधारो अधिकमांससभ-
खुष्कनिहारो तिलीरोगतनदुर्वलजांनै माषमांसमीठा।हितमांने भोजनकरजलपांनसुखावे कफवृद्धीकायतनक-
रावे. अस्थीवीचामिंझजोहोई आधिकहोएलक्षणसुनसोई नेत्रजोडसभभारेजांनो सकलअंगपरसोजप-
छांनो छालकेसकलजोडपरजांन वलिष्टअंगाचिकनेपरिमांन कफहरऔषधताहिसुखावे मैथुनअधिककरे-
सुखपावे अस्थीगतमिंझऊनजवहोई घिरेसीसदृष्टीकमसोई छिद्रहोतअस्थीकेमाहीं कफवृद्धीकरऔषध-
ताहीं दूधमांसमीठाघृतजांने सेवनकरअस्थीसुखमांने वीरजआधिकहोतहैजवहीं रुचिहोतमैथुनपरतवहिं
जेकरमैथुननाहिविचारे मूत्रासयरोगपत्थरीधारे ऊनवीरजकालक्षणजांनो वीर्यपातचिरकालपछांनो अथ-
वाथोडावीरजआवे वीर्जस्थानवारुधिरचलावे वृषणउपस्थजलनप्रगटाय चुवकहोएतनसिथलदिखाय क-

फवृद्धीकायतनकरावे ताकरवीरजवृद्धीपावे ओजनामवलहूंकाजांनो सप्तधातुकातत्वपछांनो छातीस्थान-जाहुकाहोई लालरंगकछुपीलासोई निर्मलचिकनास्निग्धविचारो वलहुंकावलओजसह्मारो जवसुभाव-गतफर्कदिखावे निरवलतनचिंताप्रगटावे सकलजोडनिरवलप्रगटाय खुषकीतनवलवीरजजाय जवतन-ओजनष्टहोजावे तवजीवनअतिकठिनादिखावे खांनपांनतजानिद्रानाहीं अतिचिंताअतिभयमनमाहीं अतिफाकाअतिमैथुनकीजें ओजनष्टइनकारणलीजें मीठास्निग्धमासरसखावे निर्मलहलकाभोजनपावे भयचिंतादिकक्रोधनधारे इनकारणकरडोजविचारे.

॥ अथवातपीत्तकफस्थानकथनं ॥

॥ चौपै ॥ वातपित्तकफतनमेचीन्है मुख्यस्थांनपाछेलिखदीने कधुकभेदआगेसुनसोई नाभीस्थांनवा-तकाहोई पादअंगुलीतकपहचांनो आमाशयस्थांनपित्तकामांनो पित्तेवीचआंदरांभावे छातिकफकास्थां-नदिखावे अथवासिरग्रीवाकेमांही कफअरुपित्तरहितथिरतांही रहेस्थानपरआपनजावे मिलेवाततवआगे-धावेजहांवातइनकोलेजाय तहांपित्तकफकोपदिखाय वातवेगकाकारनजांनो भोजनअधिकअजीरनमांनो वासीअंनयथाजलपांन दुरगंधितभारीरूक्षपछांन इनकरवातकोपतनहोई कफअरुपित्तचलावेसोई अथवा-धूंमजठरकोधावे सोभिकफअरुपित्तचलावे अथवाअधिकसुआरीहोई गजअरुअश्वदुडावतकोई अतीखेद-करदेहहिलावे वातपितकफस्थांनछुडावे सातोधातुतनमेजांनो स्थिरतानिजनिजस्थानपछानो वातवेगकरप-सरतसारे नातरथिरतादेहमझारे धातूपसरस्थानतजधावे ताकरतनमेरोगादिखावे विनावातपसरततननाहीं प-सरकोपतनदोषदिखाहीं धातूसकलदोषथिरहोई विनावातपसरतनहिकोई रसअन्नादिकजठरदिखावे ताक-रवातकोपतनधावे धातुदोषहिलावतसोई ताकररोगनेकविधहोई निश्वेदोषतींनविधजांनो वातपित्तकफत-नमेमांनो मिलेदोइद्वंदजकहुसोई संनिपाततींनोसमहोई भिनतींनमिलचारवखांने सातभेदऐसेतनजांने चतु-रवैद्यलक्षणलखपावे निश्चाकरहितजतनवनावे आदयतनपाचकीहितहोई कचादोषपकावेसोई धातूदोषमि-लेवानांही पाचकदेवाहिरकरतांही रेचकपाचकअतिहितहोई पकायदोषवाहिरकरसोई सामविरांमनामदो-जांनो कचापकादोषपछांनो इनकापाचकगरमीहोई विनगरमीदुखदूरनकोई .

॥ अथआठभेदगरमीवर्णनं ॥

॥ चौपै ॥ आठभेदगरमीकेजांनो भिंनाभिंनसभनामपछानो अगनीकीगरमीइकहोई सूरजअगनी-दूसरसोई गर्महुआडतासिरीजांनो गरमवस्त्रकरचौथीमांनो गरमनीरपंचमकहुसोई षष्ठमगरमीमारगहोई लेपादिकसप्तमपहचांनो अष्टमक्काथादिकमनमांनो आठभेदगर्मीतनहोई सकलदोषवाहिरकरसोई.

॥ अथपाचनौपधवर्णनं ॥

आगेपाचनऔषधजांनो करेयतनदुखदूरपछांनो सुंठपिप्पलामूलमंगावे चोकनामजढमर्चकहावे चित्राम-घहरीडसंगहोई कौडवछअजुआंइनसोई मुत्थरवाविडंगमंगवाय त्रिविसौंफमिठीसंगपाय छिलकानिं-

वईंद्रजउौआंनो वहारात्रायमानसंगठांनो सातूरीचंदनश्वेतमिलावे गोंमाधारताहिसंगपावे इत्यादिकसभ-पांचनजांनो इनसेंजोहितसोमनआंनो सुभावतुल्यगुणदायकजोई गोलीचूरनसेवेसोई अथवाक्काथवना-यपिलावे पाचनऔषधदोषहटावे दिवसतीनअथवादिनसात सेवनकरेदोषमिटजात जवतकदोषपकेआ-जावे तवतकऔषधसेवनभावे दोप्रकारविधऐसीहोई पकायदोषविधपाछेसोई तहलीलनामकरसोइकहावे विरांमदोषलगसेवनभावे गोलीचूरनक्काथवनाय सेवनकरेदोषमिटजाय दूसरभेदसुनोअवसोई ऊपरयतनक-रेसुखहोई मरदनगरमहुआडलगावे अतिनिद्राअतिमारगभावे अथवाऊपरलेपकराय विरांमदोषनिश्चेप-कजाय देषेछिद्रचुडाईहोर्इ लंवाईहोतिरजककहुसोई तहलीलविधीताहीछिनकरिए सुकायदोषनिश्चेक-रहरिए जेकरदेरताहुमेजांने तौफुनियतनऔरविधमांने जेकरछिद्रयथारथहोई ऊनाधिकहोवेनहिसोई ताहियतनऐसामनभावे उपायकरेभीतरपहुचावे ओषधकरेउदरपहुचाय आमाशयमुखपासपुजाय तौफु-निवमनविरेचनठांने जाप्रकारदुखवाहिरआंने आमाशयमुखऊपरहोई वमनसंगकरवाहिरसोई नीचेजठ-रहोतहेजवहीं रेचनदेवाहिरकरतवही जेकरसीसकंठकेमांहीं गररेकरवाहिरकरताहीं जेकरवीचआंदरांजां-ने हुकनादेकरवाहिरआंने दुष्टदोपलक्षणजवहोई फोडाकुष्टरसौलीसोई फुलवहरीआदगंजदरसावे सो-जातापदुष्टप्रघटावे ताहियतनजाहीविधकीजें भीतरवाहिरऔषधदीजें मुहल्ललऔषधनासिकपावे रेचक-दाफयनामसुखावे मुनजजातपाचनकहुसोई यथाजोगवर्तेसुखहोई प्रथमऔषधीदोपसुकावे मुहल्ललकर-तनखेदहटावे दूसरदोषपकावेसोई कचादोपनऔषधकोई वमनविरेचनसमाविचारे कररक्षातनरोगनिवारे पकायदोषवाहिरकरसोई कचादोपनछेडेकोई जेकरदुष्टदोषतनमाहीं रुधिरआदधातुगतताहीं ताहियत-नऐसामनधारे निराहारव्रतकरदुखटारे कलुकदोषतनऊनदिखावे पाचनदेतनमाहिसुकावे अथवारेचकय-तनकराय यथाजोगलखऔषधखाय फाकेअधिकनदेवेकोई अतिफाकेकरअतिदुखहोई ताकरवमनवि-रेचनदेवे पाचनहुकनाहितलखसेवे दुष्टदोषलखदूरनिकारे जाप्रकारविधयतनविचारे अतिलंघनकरदेहघ-टावे रोगीमरेदोषनहिजावे श्रेष्टवाग्भटमतीविचारे देखवलावललंघनधारे फुनिपाचनदेदोषहठावे अथ-वारेचकक्काथपिलावे धातूगतहोवेवानाहीं दुष्टतापदूरीकरताहीं.

॥ अथपांचभूतोंकावर्णन ॥

॥ चौपै ॥ भूमीजलअगनीहैसोई वातअकासपांचतनहोई पांचोभूतदेहमेलहिए अनासरअरकांनफा-रसीकहिए ऐसेंमहाभूतमिलपांचहीं होतदेहजांनोयहसांचहिं तामेकठिनसोभूतलजांनो योद्रावकसोईजल-मांनो जोजहउष्मतेजकहुसोई प्रघटप्राणगतवायूहोई योपुलारसोकह्योअकाशहीं ऐसेंपांचभूततनवासाहिं अस्थिमांसनाडीत्वकभेदा एतेपांचमहीकेभेदा वीरजरुधिरमूतपरसेवा पांचमीलालजानजलभेवा क्षुधातृ-षाअरुकांतिक्रोधा तृष्मापांचतेजगुणवोधा प्रसरसंकोचनवाणीधावन उछलनवायूआवनयावन जडतानींद-मूकतामोहे विसरनश्रवणव्योमतेंहोहे फुनिअकाशतेश्रवणभयोहे वायुतत्वतेंतुचालह्योहे तेजतत्वतेंनेत्रप-छांनो वारितत्वतेंरसनाजांनो नासाभूमितत्वतेंत्योही उपजीपांचइंद्रियांयोंहि व्योसमव्दसोइसुनेसोकांना तुचासपर्शेपवनप्रधाना तेजरूपसोदेखतनेना रसनाजांनोरेनरसऐना पृथवीगंधपछांनतनाना ज्ञानेंद्रीजहपां-चप्रकासा ऐसेंपांचभूततनजांनो लक्षनाभिनऔरमतमांनो भूतभूतगतलीनदिखावे आगेभेदयथारथगावे

भूमीवीचलीनजलजांनो जलअगनीमेलींनपछांनो अगनीलीनपवनमेहोई आकासवीचलयवायूसोई आकासवीचसिगरेगतजांनो ताकरचारोतत्वपछांनो अगनीगरमखुष्ककहुसोई फारसआतसनामाहोई नीरसरदतरसोईपछांनो आवनाममतफारसमांनो पृथवीसर्दखुष्कप्रघटावे जमींननाममतफारसगावे बायू-पृथवीजोगपछांनो सर्दखुष्कताहिकरमांनो वादनाममतफारसकहिए चारोगुणऐसेंतनलहिए.

॥ गुणआठमाव्याख्यानरसकच्चेऔरपकेका ॥

वेरबाउनरोगोंका जोरसकच्चेतेहोताहै. ॥ चौपै ॥ दोईभेदकारसपहचांनो कच्चापक्कादोईपछांनो जठ-राग्निनिर्वलजवहोई अथवाऊनहोतहैसोई खांनपांनतवकच्चाराखे आमनामरसताकोभाखे आमजठरमु-खकौडीजांनो विगडेतहांनिवासपछांनो तीनोदोषताहिढिगहोई विगडतएकदोषकरसोई ताकोआमना-मरसकहिए विगडतदोषनेकविधलहिए आमासयरसनीचेहोई दुष्टहोएफुनिपक्केसोई ताकरदोषनेकविध-जांनो दृष्टांतएकआगेपहचांनो जैसेंअन्नकोदराहोई सिद्दापडेभारयुतसोई भारीहोभूमिपरआवे पडेतेलनव-वृद्धीपावे निजगरमीकरदानाहोई सुंदरअन्नसुखावतसोई जेकरनिजगरमीनहिजांनो ताकरतेलसोईविष-मांनो भीजतनिंमदारहोजावे जोखावेविषरूपदिखावे ऐसेंरसविगाडतनमाहीं सोग्रयतनकरसुखउपजाही जेकरयतनकरेनहिकोई रसविगाडमारकतवहोई जैसेंरससिरकाहितहोई फसेजठरमुखदुखकरसोई विषस-मांनसोईमनधारो उत्पत्तीवहुविधरोगविचारो वातपित्तकफतीनोहोई विगाडतआंमनांमरससोई ताकर-सांमनामप्रघटावे फसेवीचरगवंदकरावे धंमनीआदइंद्रिआंजांनो फसेवंदकरदुखवहुमांनो निर्वलतनभा-रीप्रघटावे कार्जहीनकरवातरुकावे रुंधवातनामाकहुसोई डकारअधोवायूनाहिहोई पाचकअगनीनिरव-लजांनो तडफडाटकाःलीअतिमांनो अतीनीरमुखउतरतसोई मलअरमूत्रशुद्धनहिकोई भोजनपरअर-चीप्रघटावे दुरवलतनवलहींनदिखावे मलअरुमूत्रनेत्रनखजानो त्वचादंदपीलेसभमांनो जेकरपीलेहोव-तनाहीं ताकरकालेलालदिखाहीं पृष्टसीसअरुजोडपछांनो अस्थीवीचपीडतनमांनो सिथलदेहअतिनि-द्राआवे मुखवेस्वादतापप्रघटावे पेटनर्मसोजातनहोई वहुविधलक्षणकरहैसोई जेकरआमदोषसंगजांनो सांमदोषतवनामपछांनो किसीधातसंगआंमविचारो धातसंवंधीनामउचारो जैसेंआमरक्तयुतहोई सामरक्त-करकहिएसोई जेकरआममांसगतजांने साममांसतवनामपछांने जेकरआमवातसंगलहिए सामवात-नामाकरकहिए ऐसेंजासंगआंमविचारे तैसेंभिननाममनधारे आगेलक्षणभिनेविचारे सांमवातआदीमनधारो उदरसब्दतनसोजदिखावे पीडाजोडचुवकलखपावे जोडजोडप्रतिऐसाजांने मानोसूईचुवकपछांने जेक-रवातअधिकतनहोई आगेलक्षणसुनिएसोई हर्कतजोडदूरतवऐसे खैचतजोडसिकंजेजैसे प्रातरातझडवा-दलमांहीं अतीवातअतिलक्षणताहीं कचादोपहोनहैजवहि करेयतनदुखदायकतवहि जेकरदोषपकेआ-जावे करेयतनदुखदूरहटावे जेकरआमपित्तयुतहोई सांमपित्तकरकहिएसोई सांमपित्तलक्षणप्रघटावे छातीकंठजलनअतिपावे जेकरअतीपित्ततनहोई प्रघटदुरगंधीलक्षणसोई हरेआरंगश्यांमवाजांने लक्षण-देखयतनमनआंने कदाचितसर्दऔषधीनाही सर्दगर्ममिलदेवेतांही जैसेंधनिआंसुठीजांनो तैसेंकरदुखदूर-पछांनो जेकरआंमसंगकफहोई आगेलक्षणसुनिएसोई गाढाकफचिकनातवजानो तारतारवतटुकडेमांनो श्वेतरंगफिकीथिरहोई रुकेकंठदुरगंधीसोई अरुचीअरुडकारनहिआवे लक्षणकच्चाआंमदिखावे पकजावेतव-

उलटाहोई पांचोइंद्रीवलवतसोई श्रोतवंदसिगरेखुलजावे ऐसालक्षनकफीदिखावे जेकरवातदूरजवहोई भिनपुष्कमलनिरमलसोई उदरसब्दअरुकवजीजावे जोडिचुवकदुखदूरहटावे सकलवातहरऔषधकीजें सनिगधवस्तुहितताकोदीजें आंमपित्तजवपाकदिखावे निरांमपित्तसोनामकहावे पतलीलालपीतनहिजांनो प्रवलक्षुधावलदायकमानो तीक्षणस्वादवीर्यवहुल्यावे पाकापित्तलक्षणप्रघटावे जेकरकफानिरांमगतहोई आवतमुखजलदूरीसोई मुखसुगंधदुरगंधहटावे सामदोषउलटाप्रघटावे.

॥ गुणवर्ननअजीर्णभोजन तथा जलके फारसीवदहजमी ॥

॥ चोपे ॥ अजीरनजवतनमेंप्रघटावे वदहजमीमतफारसगावे भोजनअधिकखायनरकोई अनूपांनसेवेसुखहोई जेकरअतिनरेलफलखावे अनूपांनतवलूणमुखावे अथवाचावलमुखमेपाय चापेचूपेरससुखदाय समुद्रझगवासेवेकोई नरेलअजीरननासेंसोई खावेअंवअजीरनपावे अनूपांनगोदुग्धसुखावे सुंठीसौचरलूणमुखाय अथवागोघृतवोझहटाय संगतरानारंगीसेवे होएअजीरनमिसरीदेवे अथवागुडसेवेसुखहोई अनूपांनाविनयतननकोई जोकोअतिवद्रीफलखावे अनूपांनजलगर्मसुखावे अतिकटहलफलसेवेकोई अनूपांनकदलीफलहोई पित्ताअंवगुलीकाल्यावे खावेपनसवोझहटजावे ताडवृक्षफलखावेकोई तंडुलमुखरसचूपेसोई अथवामर्चखायदुखजावे अनूपांनसेवेसुखपावे तुरंजखायअतिवोझदिखाय सर्करसर्षपलूणमुखाय महुआफलीफालसाखावे खावेपिरनीवोझदिखावे छुहाराअथवाखाएखजूर अनुपांनसेवेदुखदूर तरकापित्थफलवोझदिखावे गिरीनिंवफलताहिसुखावे खजूरचिरौंलीगोझदिखाय हरीडसेववामर्चसुखाय फगूडेफलअंजीरवाखावे वटपीपलफलवोजदिखावे वासीजलसीतलहितहोई अनूपांनहितऔषधसोई अंगूरछुहारामिसरीजांनो संघाडानीलोफरअतिमांनो कसेरूफलइत्यादिकखावे मुस्थरइनकावोझहटावे जामनविल्वखाएजोकोई सुंठीसेवदूरदुखहोई मौलसरीमेवाअतिखावे फलसरीहकावोझदिखावे अनुपांनजीराहितजांनो वोझदूरसुखनिश्चेमांनो वीजसारतरखीराखाय आंमलेपेठावोझदिखाय कदूंलालकुंमडाखावे खायकरकालूवोझदिखावे मीचकजढवासुंठीखाय निश्चेसकलवोजहटजाय करौंदाककडीवोझदिखावे धोवेसिरजलताहिपिलावे खावेघृतअतिवोझदिखाय जमीरीरसानिंवूसुखदाय मर्चछाछवामिठीहोई वोझहोएघृतनासेंसोई खावेमांसवोझअतिजांनो अनूपांनरसकांजीमांनो जौखारकपूरकचरीहितहोई घृतवागर्मनीरसंगसोई खावेतंडुलवोझदिखावे जउखारजलवोझहटावे खावेकनकवोझअतिहोई तरषीराहितमांनोसोई मैदाखायवोझप्रघटावे गर्मनीरतववोझहटावे कोद्राअन्नखाएजोकोई अनूपांनापेंडालुंसोई आटाकणकवोझप्रघटाय गरमनीरकांजीसुखदाय सक्करअथवाल्रनखुलावे कणकचूंनकावोझहटावे भेडदूधअतिखावेकोई मिठिछाछपांनहितहोई जाकोमदिरावोझदिखावे मधूपायजलताहिपिलावे तंडुलमांडखाएजोकोई वाटीरोटीमिंडेहोई अजुआंइनइनकावोझहटावे अजीरनसकलभेदकाजावे अलसीतेलकंगुनीजांनोसउीचावलजउोपछांनो वस्त्रछानातिसदधीखुलाय अनूपांनसेवेसुखपाय तैलतातिलौंकावोझदिखावे इमलीकुलथीकांजीभावे खिचडीमहिषदूधअतिखाय सीसालूंणसेवदुखजाय कपूरसुपारीकेशरजांनो दारचीनीकस्तूरीमांनो वाजलपत्रीवोझदिखावे समुद्रझगअनुपांनसुखावे गन्नेकारसवोझदिखाय आद्रकरससेवेसुखपाय पलासखारवाताहिखुलावे रसगन्नेकावोझहटावे गावदुगधअतिसे

वेकोई अनूपांनरसमुंगीहोई वातुपदावताहुकोदीजें दुगधदोषसिगराहरलीजें अन्नउवालअधिकरससेवे मघजढफिलफिलमोयःदेवे जमीरीचूंनाआद्रकहोई अनूपांनकोद्राहितसोई चनेमाषमुंगीअतिखावे मसरकडांएआंवोझदिखावे तंडुलकांजीअतिहितहोई वोझदालकानासेंसोई पकायदूधवस्तूजोखावे अनूपांनरसमुंगीभावे जवमुंगीरसजाकोदेवे ऐसीविधकरसोरससेवे चांदीहोएस्वर्णवाल्यावे तपायवीचरसमाहिवुझावे सोरससेवे अतिसुखदाई सकलदोपपरसिक्षागाई मांसरसाअतिवोझदिखावे अनूपांनअग्नीजढभावे तरकारीसकलवोझप्रघटाय गोघृतअनूपांनसुखदाय कांजीखायवोझअतिहोई सामुद्रीलूणमांनहितसोई पित्तपापडावोझादिखावे वीजसुहांजनदोषहटावे तोरीआदवोझप्रघटाय तंडुलधोयनीरसुखदाय वाआंवलरसपट्टादेवे वोझदूरनिश्चेसुखलेवे थोंमखायअतिवोझदिखावे पनीरवनायसेवदुखजावे मछीमांसवोझप्रघटाय मिठाअंवसेवदुखजाय कवाववनायमांसदुखदाई सेवेअंवदोषमिटजाई अतीगरमजलवोझदिखावे सीतलजलसेवेसुखपावे सीतलजलअतिवोझदिखाय गर्मनीरसेवेसुखपाय सकलधूंमदुखदायकहोई गलघोलजलसेवेसोई सकलधूंमकादोषहटावे पीवेनाकनेत्रपरलावे चरवीआदचिकनअतिसेवे मुंगीपीसनर्मकरदेवे सागचुलाईपालकहोई चचेंडाभठामूलीसोई अतिकदूंवावासअचार अनूपांनसर्षपमनधार पलासखारवाताहिखुलावे चुलाईआदवोझहटजावे सर्षपचोकसागअतिखाय चाकोतसागवावोझदिखाय सिकडखैरक्काथकरदीजें अथवाकत्थवोझहरलीजें जिमीकंदअतिवोझादिखावे सेवेगुडदुखदूरहटावे तरकारीसागनेकाविधहोई अतिसेवेपाचनसुनसोई वृटाएकतिलोंकालीजें फूकभस्मपाचनहीतदीजें सागत्रकारीवोझहटावे निश्चेतनसुंदरप्रघटावे खांनपांनवहुविधकाजांनो दोपअजीरनवहुविधमांनो पत्रवीजवाधनिआंलीजें करकेक्काथताहुकोदीजें अथवासुंठीकाथपिलाय वोझनेकविधदूरहटाय सकलवोझपरसिक्षागाई सुंठीधनिआंअतिसुखदाई

॥ अथपृथवीअवयवरूपवर्णनं ॥

॥ चौपै ॥ अवपृथवीकावर्णनहोई अवयवरूपनिर्णयसुनसोई भूमीसकलगोलमनधारो दोहेसेकरसोईविचारो दक्षणउत्तरहेसेदोई फुनिदोदोकरचारोहोई हेसेतीनवीचजलमाही उत्तरार्द्धजलवाहिरताही उत्तरार्द्धदोदक्षनमांनो हेसेतींनवीचजलजांनो चौथाभागविनाजलहोई तापरलोकअवादीसोई वैद्ययुनांनअवेमनलहिए रुवामसकूंननामकरकहिए चौथाहेमारुवापछांनो मसकूंननामजलवाहिरमांनो तापरविश्वअवादीकहिए रुवामसकूंननामज्योंलहिए उत्तरभागअवादीहोई हेसेतीनवीचजलसोई हेसेतींनसिंधुगतजानो उत्तरभागउचेरामांनो भागउचेराहेसेतींन तापरदेसअवादीचीन्ह जांगलदेसभागइकहोई अनूपदेसदूसरहेसोई साधारनदेसतीसराकहिए तींनभेदजलवाहिरलहिए जांगलदेसभेदमनधारो अतिनीचेजलतहांविचारो मारवाडगुजरातकहावे मध्यआगरादेससुहावे अतीदूरजलकूपपछांनो विनाढोलजलगतीनमांनो वजायढोलउतखवरपुजावे तवपाणीवाहिरनिकसावे अतीदेरजलवरषाहोई सूकतसीघ्रहितनहिसोई छोटेउपजतवृक्षतहांही पवनवेगअतिकोपदिखाही उतपतछोटेपुरुषविचारो जाविधजांगलदेसनिहारो अनूपदेसलक्षणसुनसोई निकसतसीघ्रनीरअतिहोई कोकनदेससंज्ञाकहिए सवजावृक्षतहांअतिलहिए होवतअतीपेटनरऐसें मानोरोगजलोदरजैसें ताकरपुरुषदुखीमनधारो लक्षणदेसअनूपविचारो साधारनदेससुनो-

अवसोई पाणीतलेदूरनहिहोई नानेडेनांदूरदिखावे छोटेवडेवृक्षमनभावे उतपतपुरुषतहांसमजांनो बलवुद्धीतनसमतामांनो आठोरोगअसाध्यकहावे नेकभेदकरगिनतीआवे साध्यअसाध्यहोततनमांही भिननामअवसुनिएतांहि कुष्टएकफुलवहरीजांनो संग्रहणीरोगजलोदरमांनो भगंदरववासीरजोहोई नयूरसुजाखपथरीसोई सातोजहीरोगपछांनो होएपितापुत्रादिकमांनो सिल्लरोगफिफरेकाकहिए नकरसपीडअंगूठेलहिएफुलवहरीकुष्टरसौलीजांनो ववासीररुधरीमनआंनो वादीरोगपिताकोहोई निरवलजोडपुत्रकासोई आठोभेदऔरसुनआगे होएरोगफुनिदूसरलागे रोगीसंगरहेजोकोई खांनपांनतनलागतहोई खउोरोगफुलवहरीजांनो छोटेवडेछालकेमांनो श्रोतवंददुखनेत्रविचारो जुषांमतापकुष्टादिकधारो होएएकतनदूसरलागे रोगीसंगतकरदुखजागे.

॥ पुनःपांचभूतकथनं ॥

॥ चौपै ॥ पृथवीआपतेजअरुवात आकासभूतपांचोविख्यात इनकेभेदकहेसभपाछे जाप्रकारजगवर्ततआछे इनविनवातएकजगनाही ऐसेंकहाग्रंथमतमाही पांचभूतगतविश्वविचारो संवंधसकलगतनिश्चाधारो जैसेंपांचभूततनहोई लक्षणभिंनसुनोअवसोई अस्थीमांसमिंझजोजांनो पृथवीअंसदेहमेंमांनो परसावीरजरुधिरविचारो लालमूत्रजलअंसनिहारो क्षुधातृषारुचिक्रोधविचार तेजरूपअगनीगुणधार गमनागमनअलापदिखावे वलावलसकलपवनप्रघटावे जडतानींदमूकताजोई गुणअकासतनवर्ततसोई निवासस्थानइनकेतनमाहीं आगेलक्षणसुनिएताही पृथवीस्थांननासिकाजांनो ताकरग्रहणसुगंधीमांनो जिव्हास्थांननीरकाकहिए ताहीकररसटपकतलहिए नेत्रस्थानअगनीकाहोई दृष्टीतेजदिखावतसोई वातस्थानतुचामनआंनो ताहीकरकेस्पर्शपछांनो अकासस्थांनकर्णकहुसोई सब्दज्ञानताहीकरहोई निजनिजस्थानतत्वतनमाही एकदूसरेजावतनाही.

॥ अथपांचभूतस्वादकथनं ॥

॥ चौपै ॥ पृथवीआपतेजअरुवात लिखेस्वादइनकेविख्यात पृथवीषट्टास्वाददिखावे जलखाराफिकाप्रघटावे मिठास्वादवातकाजांनो अगनीकौडास्वादपछांनो षटास्वादजाहुमेंहोई पृथवीअंशअधिकलखसोई जाप्रकारजोअधिकदिखावे ताकिअधिकअंसलखपावे वहुविधस्वादभूतगतजांनो भूतादिगतसकलपछांनो अवव्याख्यानवैद्यकाकरीदाहै.

॥ अथवैद्यलक्षणं ॥

चौपै आगेलक्षणवैद्यवखांनो ऐसावैद्यरोगहरमांनो सुंदरतनमननिर्मलराखे अमितवोलमिथ्यानहिभाखे शुचिपवित्रशुचिवस्त्रलगाही सुगंधितरहेक्रोधमननाही विद्याअधिकचिकित्साजांने गुरूवचनमुखसत्यपछांने निदानचिकित्सालक्षणसारे देषतहीमखवचनउचारे नाडनेत्रमखजिव्हाजांने लक्षणमत्रआदपछिचाने सत्रक्रि

यासिगरीमनधारे नेत्रआदिदुखदूरनिवारे पापलोभत्यागेमनवानी दयादानंश्रद्धायुतज्ञानी सभकाप्रियप्रीती मनधारे ऐसाहोतनरोगनिवारे कुलीनवैद्यऐसाहितहोई करेचिकित्सादोषनकोई.

॥ अथषटरसवर्णनं ॥

॥ चौपै ॥ षटरसभेदसुनोअवसोई जाप्रकारजगवर्ततजोई मिठाषट्टाकौडाजांनो कसयलातीक्षणल- वणपछांनो भिनभिनगुणवर्ततजैसें आगेभेदसुनोअवतैसें मिठाकफअरुपित्तवधावे आगेकिंचितभेदसुनावे थिदामिठेसंगाविचारो ताकरकफवृद्धीमनधारो विनाचिकनाईमिठाखावे ताकरकफवृद्धीनहिपावे किंचितभे दऔरमनआंनो मिसरीमधूवातकरजांनो षटाकफकरपित्तवधाय किंचितभेदसुनोमनलाय अनारआमलाआ- दिजांनो कफहरवातवधावतमांनो जहांपित्तकफमिश्रितहोई कसयलादूरकरेहितसोई केवलनिश्चेपित्तव- धावे मिलीवातकफदूरहटावे खारीलवणवातहरहोई कफअरुपित्तवधावतसोई कौडातीक्षणपित्तवधावे वातऔरकफदूरहटावे.

॥ अथप्रकृतिभेदलक्षणं ॥

॥ चौपई ॥ वीरजमोअरुरुधिरमंझार अवरजुमध्यगर्भनीनार भोजनमोअरुचेष्टामांही अरुजोजेरहुंसों- प्रगटाही अरुबसंतआदिकऋतजोय अधिकदोषवातादिकहोय तिनअनुसारमनुष्यस्वभाय होवतहैसो- कहोंसुनाय १

॥ अथवायुप्रकृतिलक्षणं ॥

॥ दोहरा ॥ छोटेकेशशरीरकृश रूषापणवाचाल मनआकाशभ्रमेस्वप्नमें वायूप्रकृतिसुभाल- ॥ चौपई ॥ कृशतनबहुजुरोषिताहोई अल्पकेशचलचितजोसोइ भ्रमतस्वप्नमेंमध्यआकाश वहतवकेइस्थितमनतास इनलक्षणकरवातस्वभाय प्रगटसभनकोंकह्योसुनाय.

॥ अथपित्तप्रकृतीलक्षणं ॥

॥ दोहरा ॥ युवाकेसस्वेताहिवेरै बुद्धिवानश्रुतलेज तनपर्साक्रोधीरहेस्वप्नलषेअतितेज ॥ चौपई ॥ विना- समयस्वेतहेंकेश गौरावर्णस्वेदतनवेश क्रोधीपंडितहोवतसोयी अतिहीदीप्तमाननरहोयी स्वप्नविषैप्रकाश- वहुदेषै पित्तस्वभावइनलक्षणलेषै

॥ अथकफप्रकृतिलक्षणं ॥

॥ दोहरा ॥ जोगंभीरअतिमतिरहे स्थूलअंगाचिकनाय केसचीकनेवलअधिक स्वप्नेजलहिदि- खाय ॥ चोपई ॥ इस्थिरचित्तस्थूलजोअंग होइसोपुत्रसुपुत्रहिसंग होहिस्निग्धकेशतनतास स्वप्नविषै- बहुजलतिसभास कफस्वभावकेलक्षणकहे जैसेग्रंथईतेलषलहे

॥ अथभेदलक्षणं ॥

॥ दोहरा ॥ दोयदोयअरुतींनतींन मिश्रतदोषवषांन मिश्रतहीजुसुभावतिह आगेसुनोसुजांन कफतनअधिकजाकोरहै तिहमूर्छाप्रगटात वायुपित्तरजगुणअधिक घुमेरभ्रांतिअधिकात कफअरुसतगुणअधिकहोय भौरभ्रांतिहोयतास कफवायुतमगुणअधिक तौतन्द्राकोवास वलजावेमनग्लानदुख औरअजरिणस्वेद याहीसेभीग्लाननर मनहिकरतसोछेद जवबलथकतउत्साहनहि आलसकहिएजोय इन्हआदीकरजानियो वुद्विवानहितसोय

॥ अथवायुकोपलक्षणं ॥

॥ चौपई ॥ वातकोपलक्षणव्यवहार सोसुनलीजोचतुरविचार हलकीरूषविस्तुजुखाइ स्वल्पअरुशीतलस्वेदवदाइ संध्यासमैमैथुनजोकरै भयचिंतानितजागरवरै चोटलगनअरुअन्नअजीरण धातुक्षीणदेहीदु:खकारण इनविकारमारुततनछीजैं ताहिनिवारणयत्नकरीजैं.

॥ अथपित्तकोपकर्नेकालक्षण ॥

॥ चौपइ ॥ पित्तकोपलक्षणव्यवहार सोसुनलीजोविविधप्रकार कडवीखटीतीक्षणअरुगर्म अत्यंतषायविकारातिहकर्म क्रोधधूपगर्मसेवनतें मघ्यानतृषाक्षुधारोकनतें अन्नअजीरणपेटविकार पित्तकोपतनताहिनिवार.

॥ अथकफकोपकर्नेकालक्षण ॥

॥ चौपई ॥ कफकोपनकाकहोंविचार जातेंहोवतजीयविकार मीठाचिकनाद्रव्यखावनसे सीतलभोजनदिनसोवनसें अग्नमंदसेभीइहजांन अवासीभोजनप्रातविधांन इनविकारकरकफअतिवरै ताहिउपायनरमतिसोकरै

॥ अथरोगभेदलक्षणं ॥

॥ दोहरा ॥ चालीसपित्तकफवीसहैअरसीवग्तविचार तीनदोषपरिमानहैदंदजाभिंनसह्मार जोरोगाहिकायारहे नामव्याधिहैताहि चौदसभेदतांकेलिखे चरकग्रंथमतिजाहि सहजरोगगर्भरोगफुन जातजातकेरोग पीडाजनितकालहिजनित प्रभावजनितसंजोग स्वभावजनितदेशहिजनित आगन्तुकइहजान कायिकरोगअंतरहैकर्मजरोगपछांन दोषजरोगसुतेरमा कर्म्मजदोषजरोग इहचौदशरोगहिकहे दैवकर्मसंजोग

अथचतुर्दशरोगपृथक्पृथकलक्षणं

॥ दोहरा ॥ मातपिताकेवीर्य्यसों जोदोषहिप्रगटंत संततरोगसुहोतहै सहजमवेसीश्रंत जोगर्भहिमो-कुबजहो पंगुलश्रंगुलखंज रोवणादिजोरोगहै गर्भरोगसोगंज मिथ्याहारव्यहारकर माताकेश्रनुसार वि-कलजुगुंगावुरासुकृत जातरोगव्यवहार शस्त्रादिककेप्रहारसें श्रस्थिभंगजोहोय ताहीपीडाजनितकहि नि-श्रैजानमनसोय शीतकालवहुशीतवर उष्णकालमोधूप वर्षाऋतभीजनश्रधिक कालजरोगस्वरूप गुरूदे-वश्ररुभूपती पिताश्रादिसुतजाहि तिहशापजुरोगहिवरै प्रभावजकहिएताहि क्षुधातृषाश्ररूवृद्धपन उत्प-न्नहोएजोरोग स्वाभाविककहिएताहुको वुद्धजनदैवसंजोग भूतादिकफुनकामक्रोध रागद्वेषश्ररुलोभ मो-हादिकउत्पन्नजो श्रागंतुकजानोक्षोभ ज्वरहिश्रादिविषव्याधिकर जोवर्तेजगमाहि कायकरोगताकोकहैं वैद्यसमझमतिजाहि हौलदिलीश्रादिकजिते श्रर्द्धविक्षिप्तहोजाय श्रांतररोगतिहजानियो शास्त्रमतीप्र-घटाय जाहिदेशमोरंगवर कालेभूरेलाल मानसजातीउत्पती देशककहियेबाल पूर्वजन्मवाइहजुगहि ह-त्याब्रह्मइत्यादि पापजरोगसोउपजहै कर्मजजातविखादि वातपित्तश्ररुकफाहिसों जोरोगहिउपजाय दो-षजताकोंकहतहैं वुद्धजनताहिसुनाय हत्यापापश्रत्यंतकर वातपित्तकफजाहि कर्मजरोगतिहजाननर च-र्कग्रंथमतमाहि इहचौदशरोगजुकहे सोहैदोइप्रकार एकसुसाध्य श्रसाध्यफुन सोकीनोपरचार वहुतयतन-करजातइक स्वल्पयतनसौंएक सोभीसाध्यजुद्विविधगुण जाप्यगंभीरकरटेक ववासीरमिर्गीक्षई स्वासश्र-र्द्धांगप्रमान जामोश्रधिकरोगाहिमिलै तिहश्रौषधइहमांन पथ्यचलैजुसदैवही वैद्यवाक्यश्रनुसार जबतक-रोगसुश्रंतहोई जाप्यताहिनिस्तार फुनश्रैसाइकरोगहै जाहिचिकित्सानाहि जेउहकलुश्रौषधकरै मरैश्र-साध्यहैताहि श्रौरश्रत्यंतरोहिगलिखें जिनकापारनवार चकित्साउनकीएकहैपरमेश्वरश्राधार तिहकारण-वैद्यसुउाचत वुद्धिशास्त्रश्रनुसार श्रन्तरगतईश्वरधरै ताहिहोतउद्धार.

इतिप्रकारान्तरेचतुर्दशरोगक्रमलक्षणं ॥ अथचतुर्दशवेगानिरूपणं

॥ दोहरा ॥ जोमानुपमनचैनहै सावधानतनधार वृथावेगरोकेनहिरोकेश्रतिदुखदार स्वयंसिद्धजोवेगहै-कवहुनरोकेकोय चौदसभेदविचारिए क्रमकर श्रागेसोय.

॥ अथविस्तीर्णक्रम प्रथमश्रधोवायुरोकनरोग ॥

क्रमपूर्वकताकोकहैं सुनलीजैमनधार श्रधोवायुरोकनक्रिया गोलाउदरश्रफार वहुरोगनकीउत्पती श्रधो-वायुरुकहोय पुनवायूकरहोतहै मूत्रकोष्टवद्धसोय नेत्ररोगमंदाग्निकर हृदयपीडइहजांन श्रधोवायुरोकेन-हि रोकेइहदुखमांन.

॥ अथमलरोकनरोग ॥

॥ दोहरा ॥ मलरोकनतेंहोतहै हाथपैरहडफूट पीनसमस्तकपीडश्रति वायुऊर्द्धगतछूट मलरोकन-श्रौरहिकरै हृदयपीडउदावर्त गोलाफायाउदरक्रम पीडमूत्रकृच्छ्रदर्त बद्धकोष्टमंदाग्नियुत नेत्ररोगभीहोय-

मलरोकनकेगाफल प्रगटहैसमोयोग

॥ अथमूत्ररोकनकेरोग ॥

॥ दोहरा ॥ मूत्ररोकनेरोगजोसोसुनलीजेमीत अंगहाडफूटतरहैपथरीरोगसुचीत लिंगइंद्रीकेसंधिमोपीडागोलतिलिभाय मलरोकनकेरोगजोसोभीयहप्रगटाय.

॥ अथडकाररोकनेकेरोग ॥

॥ दोहरा ॥ डकाररोकनमोरोगयहअरुचिशरीरकंपाय हृदयरुकेअफराहफुनखांसीहिचकीआय.

॥ अथछीकरोकनेकेरोग ॥

॥ दोहरा ॥ जोछीकहिकोरोकहै ग्रीवाअकडिहसोय मध्यवायपडकायमो इंद्रीदुर्बलहोय मुखटेडाहोजायतिह छीकरोकनेमाहि असेरोगनउत्पत्ती करतदेहकोताहि.

॥ अथतृषारोकनेकेरोग ॥

॥ दोहरा ॥ तृषाबहुतरोकैजुनर मुखसूकेहृददूष अंगहाडफूटैभ्रमै मोहबधिरतारूष.

॥ अथक्षुधारोकनेकेरोग ॥

॥ दोहरा ॥ भूषबेगरोकैजुनर अंगटूटनेलाग अरुचिहोयभ्रमशूलकृश शरीरग्लानहृदआग सबवस्तूचितनहिकरै विनश्रमश्रमपडजाय सिथलहोयकायासकल वर्णरंगनरहाय.

॥ अथनींदरोकनेकेरोग ॥

जोउनींदनरअतिरहै ताहिप्रगटइहहोय मस्तकनेत्रभारीरहैं आलसपीडितसोय.

॥ अथखांसीरोकनेकेरोग ॥

॥ दोहरा ॥ खांसीरोकेजोमनुष स्वासअरुचिहृदरोग हिचकीआदिजुरोगहै तिहप्रगटेमनसोग.

॥ अथश्रमकेस्वासरोकनेकेरोग ॥

॥ दोहरा ॥ श्रमस्वासैरोकैजुनर गोलाहृदयविकार मोहप्रमेहप्रगटैतिसैस्वासरोगतनकार.

॥ अथउवासीरोकनेकेरोग ॥

॥ दोहरा ॥ मस्तकपीडाइंद्रियां दुर्बलक्षीनतनजोय गर्दनमुखवक्रतकरै इहलक्षणहैसोय.

॥ अथआसूरोकनेकेरोग ॥

॥ दोहरा ॥ जोपुरुषहिआसूरुके पीनसहृदयविकार नेत्ररोगमस्तुकदुखै गर्दनपीडभ्रमकार.

॥ अथवमनरोकनेकेरोग ॥]

॥ दोहरा ॥ वमनबेगरोकेजुनर रक्तपित्तफुनकोढ नेत्ररोगपांडूज्वरहि खांसीखाजकरप्रौढ हृदयशूलमुखकीलकर मुखछायीतिहहोय वमनरोकनेहोतहै एरोरोगसमोय.

॥ अथकामरोकनेकेरोग ॥

॥ दोहरा ॥ कामबेगरोकेजुनर सुजाखप्रमेहतिहहोय लिंगइंद्रीमेंपीडअति शोथचिंतमनजोये भोजनअरुचिविकल्पहोय अमुतसीसफिरताहि इहलक्षणकामहिक्रिया रोकनमेंप्रगटाहि.

॥ अथान्यमतेत्रयोदसभेदवर्णनं ॥

॥ चौपै ॥ त्रयोदसभेदश्रौरसुनश्रागे रोकेश्रापरोगतनजागे जैसेंअधोवातइकहोई रोकेकवजशूलकरसोई उदरशब्दकरक्षुधाहटावे छातिरोगनेकउपजावे वातदूरकरमालसजोई मूत्रासयवृषणमलेसुखहोई संभालुपत्रसुहांजनल्यावे सेजवनायसयनकरवावे सावनलूणमघांमंगवावे एरनतैलपायपिसवावे वत्तीकरगुदभीतरपाय अधोवातरोकनदुखजाय कुलथीजलहिंगुसंगपावे करेपांनदुखदूरहटावे. दूसरभेदश्रौरसुनसोई मूत्रवंदकरदुखवहुहोई अधोवातकालक्षणजांने प्रघटलिंगमुखपीडामांने मूत्राशयवीचपथरीहोई भारीअंगजोडसभसोई अधोवातकायतनकरावे भोजनश्रादगावघृतखावे. तीसरश्रापवंदमलकीजें ताकररोगअधिकतनलीजें पिंनीसीसपीडप्रघटाहीं चलेनीरअतिनासिकमांहीं मूत्राशयनाभिवातदिखावे उदरफिरेनहिवाहिरश्रावे करमालःहर्इचौकमंगवावे मुत्थरकौडक्काथमनभावे कवजीहितचूरनजोहोई ऐरनतलसंगसेवेसोई अथवागर्मनीरसंगखाय कवजीदूरताहिसुखपाय त्रैमासेएरनतैलमंगावे मघहरीडछेमासेपावे आधसेरगोदुग्धमंगाय दूधसंगनितचूरनखाय मुंगीमांसरसामनभावे चनेमसरश्रंगूरसुखावे लापसीश्रादक्काथहितहोई मीठाश्रादनसेवेसोई. चौथाभेदछीकमनधारे करेवंददुखनेकविचारे इंद्रीसिथलपीडसिरपावे करडीत्वचाक्षुधाहटजावे लकवारोगहोततनमाहीं नजलाश्रादनेकदुखताहीं मघांमर्चहिंगूमंगवावे सुंठीमेलभागसमल्यावे रगडेनीरपायकरकोई पायनासिकाअतिसुखहोई नकछिकनीवूटील्यावे सुंहत्तहींसिरहलकापावे पत्रवातहरक्काथवनाय गर्मनीरसंगसीसधुलाय श्रौरवातहरश्रौषधजोई सेवनकरेसीघ्रसुखहोई. पंचमतृषावंदजवकीजें ताहिरोगवहुविधकेलीजें घूमतशिरमूर्छाप्रघटाय सूकामुखश्ररुकंठदिखाय जोडखुष्कछातीदुखहोई सवंतजलसीतलहितसोई. षष्टमक्षुधावंदकरकोई अतिफाकाकरअतिदुखहोई भोजनमेंअरुचीप्रघटावे दग्धजोडकाहलीश्रतिपावे गर्मीखुष्कीदुर्वलहोई पेटपीडमुखपीलासोई पाचकअगनीनिर्वलजांनो क्षुधावंदकरलक्षणमांनो क्षुधाप्रवलकरश्रौषधखावे भोजनगर्मनर्मनितपावे. सप्तमनिद्रावंदकरावे ताकररोगअधिकतनपावे भारीतनविचारमननाहीं उद्यमदूरक्रोधउपजाहीं अकडाहटवहुतप्रवासीश्रावे ताकरसुखनिद्रामनलावे. श्रष्टमवंदप्रवासीहोई छातीरोगनेकविधसोई हिडकीश्वासरोगउपजावे क्षुधादूरदुर्वलतापावे खांसीरोगश्रौषधीजोई करेसोईदुखनासेहोई. नवमश्वासनिजवंदकरावे भयादिकशूलरोगप्रघटावे छातीरोगविस्मृतिहोई ताकरजलसीतलहितसोई खुष्कवस्तुकामर्दनभावे पवनश्रापतनअधिकलगावे सुगंधितअतरश्रादमनभाय कपूरमेलनितपांनखुलाय सुखसज्जानिद्रामनलावे रागरंगप्रियवचनसुनावे. अकडाहटरोकेदसमीसोई छीकवंदकालक्षणहोई छीकवंदकायतनकरावे अधोवातगतलाजसुखावे. एकादसरोदनवंदकराय नजलापीनसरोगदिखाय प्रतिदिननीरनासिकापावे गोलाउदरक्षुधाहटजावे दांतदांतपरवैठतसोई दंदकडनामकहितसभकोई ताकरअतिनिद्रानाहिभावे मदिरापांनकरेसुखपावे रागरंगप्रियवचनसुनाय रोदनरोकेतनदुखजाय. रोकेवमन-

वारमाकहिए ताकरअधिकरोगतनलहिए फुलबहरीकुष्टखाजप्रघटावे पांडुसोजछालकेपावे श्वासकास-
दमरोगलगावे इत्यादिकनेकरोगप्रघटावे शरीरकरदुखदूरहटाय घृतविनमांसरसामनभाय जासोंवमनहोएकर-
सोई अथवारेचककरसुखहोई जउोखारअरुलूणमंगावे मेलतैलतिलमर्दनभावे. त्रयोदसरोकेवीरज-
कोई द्दारामूत्रवंदतवहोई पडेसोजपीडाप्रघटाय छातिदुखअरुलापद्दिखाय मूत्राशयवीचपत्थरीजानो
रुकेमूत्रदुखअधिकपछांनो कुर्कटमांसरसामनभावे कर:लूणदधिनीरसुखावे चावलधोएनीरसोंदीजें हुकना-
तैलतिलोंकाकीजें नारीप्रियमैथुनमनभावे ताकरवृद्धीवीरजपावे तरहरीवीजभखडाल्याय दाखहरडसम-
भागामिलाय त्रैत्रैमासेऔषधल्यावे सेरदोइगोदुग्धमंगावे गडकायदूधमेदूधपिलाय बलवीरजानिश्चेप्रगटाय.
इतिचिकित्सासंग्रहेश्रीरणवीरप्रकाशभाषायांचतुरदसवेगकथननामद्दितीयोऽधिकारः ॥ २ ॥

॥ अथऔषधकालवर्णनं ॥

॥ चौपै ॥ आगेऔषधसमावखांनो होवेगुणदसभेदपछांनो प्रथमप्रातऔषधमनभावे पचेऔषधीभो-
जनपावे चरवीअधिकहोएकफजाको प्रातऔषधीसेवनताको. अपांनवातजाकोवलपावे नीचेपेटको-
पप्रघटावे ताकोऔषधदेवेकोई औषधपरभोजनाहितहोई भोजनसीघ्रऔषधीपाछे दूसरभेदसेवसुखआछे
तीसरभेदमांनहितताको समांनवातमूत्राशयजाको भोजनमध्यऔषधीखावे आदअंतहितभोजनपावे चौथा-
भेदसुनोहितसोई व्यानवायुलनकोपितहोई भोजनअंतऔषधीखावे व्यांनवातकाकोपहटावे पंचमभेदसु-
नोहितताको उदांनवातछातीवलजाको भोजनसंगऔषधीखावे ग्रासग्रासप्रतिऔषधभावे षष्टमभेदसुनो-
हितसोई प्राणवातशिरकोपितहोई ग्रासग्रासप्रतिऔषधखावे औषधविनाग्रासनाहिपावे सप्तमभेदहोतहि-
तताको हिडकीतृषाकाशअतिजाको विषकृतदोषरुधिरबलपाय वारबारसोऔषधखाय औषधकरचूरणध-
रपास वारवारसेवेसुखआस अष्टमभेदसुनोहितताको क्षुधादूरनिरबलताजाको औषधभोजनवीचरलावे
प्रतिदिनऐसाभोजनपावे नवमभेदहितताकोहोई झौलावातकोपतनसोई आदअंतऔषधमनभावे भोजन-
मध्यकरेदुखजावे दसमाभेदहोतहितताको उदररोगशिरनाभिजाको रातसमेऔषधहितमांने औषधसेवसयन-
सुखजांने जाप्रकारदसभेदविचारे औषधसेवनेकदुखटारे.

॥ अथदसभेदरोगिलक्षणं ॥

॥ चौपै ॥ आगे औरभेददससुनिए विचारवैद्यदोषहरगुनिए चतुरवैद्यदसभेदविचारे निश्चाकरऔष-
धमनधारे प्रथमपरीक्षाजाविधहोई दोषवलावलदेखेसोई रसगतदोषरुधिरगतजांने मांसअस्थिगतभेदप-
छांनें दूसरदेसभेदलखसोई वलावलदेखेतीसरहोई चौथाऋतूपवनमनआंने पंचमक्षुधाप्रमांनपछांने सुभा-
वलखेछेमाकहुसोई वातपित्तकफद्दंदजकोई सप्तमरोगीमतीपछांने अधीनलखेवागरवीजांने अष्टमरोगी-
आदतदेखे गर्मसुभावगर्महितपेखे नवमअवस्थादेखेसोई बालतरुणवावृद्धाहोई दसमाभेदवैद्यमनआंने
वातपित्तकफतीनपछांने जैसेंकफप्रभातबलपावे मध्यांनापित्तबलअधिकादिखावे दिनकेअंतवातबलहोई
उलटाईपउलटलखसोई जेकररोगीहठीपछांने करडारोगसुगमकरमांने वारोगीकमादिललखपावे
थोडारोगअधिकदरसावे वैद्यभेदऐसामनआंने देखबलाबलऔषधठांने रोगीपासवैद्यनितजावे पूछेहाल-

प्रीतमनलावे लक्षणदेखऔषधीदेवे जाप्रकाररोगीसुखलेवे लक्षनदेखपरीक्षाहोई करेस्पर्शपूछेहितसोई मखीअधिकजाहुपरलहिए चिकनादोषअधिकतनकहिए जाहूपरमखीनहिंआवे कीडीआदभागसभजावे चतुरवैद्यतवऐसाजांने तरीदूरखुषकीपहचांने.

॥ अथवैद्यलक्षन ॥

॥ चौपै ॥ औरवैद्यमतऐसीधारे ग्रहनक्षत्रतिथिवारविचारे पढेचिकित्साजोतिषधारे ऐसावैद्यरोगतनटारे शुभाशुभलक्षनकरेविचार करेचिकित्सारोगनिवार.

॥ दोभेदऔषधलक्षणं ॥

॥ चौपै ॥ दोईभेदऔषधीजांनो सोधनएकसमनपहचांनो सोधनलक्षनऐसाहोई वाहिरदोषनिकालतसोई सोधनचारभेदकाजांनो रेचकहुकनावमनपछांनो नसुआरभेदचारोमनधार आगेलक्षनसमनविचार लक्षनभीतररोगसुकावे तहलीलनाममतफारसगावे जैसेकफकासमनपछांनो मखीरपुरातनकफहरमांनो पित्तसमनघृतगोकाहोई वातसमनतैलादिकसोई सोधनकफकावमनशुभाय रेचकसोधनपित्तहटाय वायूसोधनहुकनाजांनो आगेभेददोईपहचांनो प्रथमदयालज्जाप्रगटावे दूसरचिंताक्रोधदिखावे समनभेदइकवुद्धीजांनो गुणदायकवस्तूदूसरमांनो.

॥ अथऋतुचर्याकथनं ॥

॥ चौपई ॥ चैतवशाखवसंतऋतुकहिये ज्येष्टअषाढग्रीष्मशुभलहिये श्रावणभाद्रवर्षऋतुजांन असूकार्तिकशरदप्रमांन मार्गपौषहिमऋतूकहावे फाल्गुणमाघशिशिरऋतुगावे.

॥ अथषटऋतुवायुपित्तकफकोपसंचयशांतिवर्णनं ॥

॥ चौपई ॥ वसंतऋतूकफकोपदिखावे वर्षाऋतुमारुतअधिकावे शर्दऋतूपितकोपसुजांन इहहैकोपऋतुपरमांन ग्रीष्मऋतुकफशांतिदिखाय सर्दऋतूमारुतमिटजाय हिमऋतुशांतिपित्तकीजांन इहशांतीहैऋतूप्रमांन संचयवातग्रीष्मऋतहोई संचयपित्तवर्षऋतसोई शिशिरऋतूकफसंचयजांन इहसंचयहैऋतूप्रमांन.

आहारव्यववहारऋतूप्रमाणवर्ननं प्रथमवसन्तऋतुकेआहारव्यवहारलिखतेहैं

॥ चौपई ॥ ऋतुवसंतकफकोपदिखावै सोरोगोंकिउत्पत्तल्यावै जठरअग्नकोनासकराय ताकरहरडमधूयुतखाय इहविधकायामोवलहोय वसन्तऋतूत्र्यूषणहितसोय.

॥ अथग्रीष्मऋतुकेअहारव्यवहारवर्णनं ॥

॥ चौपई ॥ ग्रीष्मसूर्य्यअतितप्तवलहरे तिहकरसीतछायाबटवरे गुडसंजुगतहरडहितलाय द्रव्यमधुरभोजनलघुखाय सतूमिसरशिर्वतपांन शीतलजलखसगेहप्रमांन फुहारवगीचोसैरविचार चंदनादि-

लेपनअंगधार दिनसोवनभोजनगंभीर तस्मईआदमुनभोगशरीर सुंदरदृढभोजनमनभाय कटूतीक्षनखट्टान-हिखाय इति.

॥ अथ वर्षाऋतुके आहार व्यहारवर्णनं ॥

॥ चौपई ॥ सैंधानोनसंयुक्तहरीर चीकनद्रव्यमधुरगंभीर शालिवमिसरीऔरखटाई सोंठमिरचपीपलधरचाई चित्रापिप्पलमूलमंगाय लूणपायदधिप्रतिदिनखाय कूपोदकलघुभोजनखावे वस्त्रनवीनजुलावकरावे. ॥ दोहा ॥ दिनमहिकोसोवेनही करेनश्रमकेकाम वर्षाऋतमैथुनतजे सहेनतकडीघाम ॥ सोरठा ॥ नदीनालसरिताल मलिनहोतजलवर्षमें इनमेंवर्षाकाल स्नानपाननरनाकेरे इति.

॥ अथसर्दऋतूवर्णनं ॥

॥ चौपई ॥ वर्षाऋतुपित्तसंचयजोय सर्दऋतूमेंकोपितसोय ताहिउपायप्राणीयहकरै मिसरीसाहितहरडसंचरै मिसरीआदिमधुरजोहोय सठीचावलमुंगसुजोय सरोवरजलदूधयहपथ्य तीक्षणवस्तुखटाइअपथ्य आसवधूपादिनसोनमंदमन पूर्वपवनकुपथ्यसोवुधजन.

॥ अथहिमऋतूआहारव्यवहारवर्णनं ॥

॥ चौपई ॥ हिमऋतुकेआहारविहार सोमेंकहोंचर्कअनुसार गोघृतनवीनमाहिषकादूध दहीमधुरगुडलोनससूद मर्दनतैलअंगनकोकीजै गेहूउडदमिश्रीद्रवलीजै सोंठसंयुक्तहरडकोंखाय निर्वातस्थानइस्त्रीसंगशुभाय नूतनवस्त्रअंगमोधरै हिमऋतुऐसोहितकरवरै.

॥ अथशिशिरऋतुआहारव्यवहारवर्णनं ॥

॥ चौपई शिशिरऋतूकासुनव्यवहार पीपलयुक्तहरीडअहार आद्रकनवीनघृतसंधालोन शर्करवडेगुडदधिहिततोन औरहिमऋतमेजोव्यवहार शिशिरऋतूमेंतेहिविचार ॥ दोहरा ॥ ऋतुउत्तरनमहिसातदिन पाछेऋतुविधिजान अठमेंदिनसोनवीनविध ऋतुविधीयहकरमान.

॥ त्रिदोषकोपऋतूप्रमानकथनं ॥

॥ दोहरा ॥ कोपेकफपितवातजो जिनजिनमासनमाहि तिनतिनमासनकोप्रगट ऐसेशास्त्रसुनाहि

॥ चौपई ॥ असूंकार्तिकजेठविशाख करैकोपपित्तऐसोभाख फाल्गुनचैत्रकोपकफहोई जाप्रकारलखभेदनकोई श्रावणभादरमार्गजोमास पौषमाघआषाडप्रकास इनषटमासनकोपैवाय त्रिदोषराजप्रतिमासादिखाय.

॥ अथमासप्रमाणजलविधिवर्ननं ॥

॥ दोहरा ॥ जलकीविधसुनकाहितहों षटऋतुकेअनुसार जाविधिसोंरोगीनकों जलसोंहोइविकार ॥ चौपई ॥ ऋतवसंतऐसाजलभावे चाउअगनदोभागजलावे तीसरभागशेषरहिजाय सोजलरोगिनकोसुखदाय ज्येष्टअषाडग्रीष्मऋतकहिए तौफुनिअर्धशेषजललहिए श्रावणभाद्रोऋतुवर्षाऊ अष्टमभागशेषसुखदाऊ आश्विनकार्तिकऋतुशरदाय षष्टमभागतोयसुखदाय मारगपौषहिमंतकहीजै हितकरपंचमभागभनीजै फाल्गुणमाघदोइइहमास शिशिरऋतूलखलीजोतास भागचतुर्थशेषजलजोय निर्विकारहितकरहैसोय ॥ दोहरा ॥ जवतनवृद्धीरोगकी तवजलजाविधजांन औषधजोगअधारजल ताकरविधिप्रमांन चतुर्थांसकफकोपपर अर्धपित्तपरदेय पादहीनदेवातपरऐसोक्रमलखलेय.

॥ अथान्यप्रकारऋतूकथनं ॥

॥ दोहा ॥ सिसरवसंतग्रीषमअवरवरखासरदहिमंत माघआदयुगमासक्रमजानहुषटऋतुवंत ॥ चौपै ॥ फगुनमाघसिसरऋतुजांनो वसंतचैत्रवैसाखपछांनो ग्रीषमजेष्टअषाडपछांनश्रावणभाद्रोवरषामांन असूंकार्तिकसरदकहावे मघेरपौषहेमंतसुहावेपटऋतुजांप्रकारजगहोई वर्ततदोपभेदसुनसोई ॥ दोहा ॥ राजावातविचरिएसिसरऋतूजवजांन कंफमत्रीतबहोतहैजाप्रकारगुणमांन कफवसंतराजाकह्योमंत्रीवातविचार ग्रीषमराजावातहैकफप्रधांनमनधार वायुराजावर्षमैंमंत्रीपित्तपछान सर्दपित्तराजाकह्योवायुहोतप्रधान हिमंतराजहैंवातकाकफप्रधांनसंगहोय जाप्रकारषटऋतसुनोदोषप्रवलजगसोय ॥ चौपै ॥ आगेऋतऋतवर्णनहोई ग्रंथवाग्भटगावतसोई ऋतऋतवसंतऐसामनभावे स्नानहेतजलगर्मसूखावे चंदनमुसककपूरमंगाय केशरआदलेपतनलाय पुरातनजऊकणाकनरखावे मखीरमांसजांगलमनभावे मीठासर्वतआतिहितहोई सुंदरतिरिआसेवेसोई इक्षूआदअंगूरीजांनो मदिराऋतवसंतहितमांनो वालखेलमनप्रीतिधारेजासोंहृदाप्रसंनविचारे सुंठीकाथपांनमनभावे नागरमोथाकाथसुखावे मषीरनीरसर्वतकरकोई कोसाऋतवसंतहितहोई रागरंगजलहौदसुखावे सनमुखदक्षनपवनलगावे अतरसुगंधीवसनसुभाय भारीस्निग्धसर्दनहिखाय षटामीठासोनहिखावे दिननिद्राऋतवसंतनाहिभावे ऋतवसंतकफराजाहोई हरडमधूयुतसेवेसोई ऋतवसंतऐसागुणमांनो आगेग्रीषमऋतूपछांनो ॥ दोहरा ॥ चैत्रओरवैसाखमिलऋतवसंत कहुनांम आगेजेष्टअषाडमिलवर्नतग्रीषमघांम ग्रीषमऋतसूरजवलपाय वलीपवनकफदूरहटाय धूलीअधिकतेजवलपावेखारीतीक्षणर्चा जनखावे अतीखेदअतिमारगहोई अतीधूपसेवेनहिकोई भोजनमीठास्निग्धपछांनो पनलासी तलअतिहितमांनो सक्करसतूंनीरमिलाय सेवेऋतग्रीषममनभाय मदिरापांनकरेनहिकोई मृतकपात्रजलपीवेसोई सुगंधितसर्दवस्तुजलपावे ऐसानीरपांनमनभावे वाजलरात्तचांदनीमाहीं पांनकरेअतिसीतलताहीं सघनवृक्षछायामनभावे सुगंधित नीरतहांछिडकावे हरहररंगसगूफेदेखे कदलीपुष्पवाटिकापेखे जलफुहारलखआनंदपावे मोतीपुष्पगलेलटकावे अतिआनंदहृदेमेधारे शोकदुखसभदूरविडारे चित्रतनूतनगेहसुखावे जाप्रकारऋतग्रीषमभावे पित्तकोपऋतग्रीषममाही हरडसंगगुडसेवेताही ॥ दोहा ॥ ग्रीषमऋतवीतिअवेआईवर्षवहार श्रावणभाद्रो मासदोवर्णतवुद्धिउदार

॥ सोरठा ॥ सेवेहरडसलौनअरुऊचेसुप्रकासघर सुकेचित्रतयौंनअगरधूपसौगंधिवर अवरपुराने-धान स्निग्धऔरअंवललवन भोजनरुचिरविधान जवआदिकवरषासमनेदीनालसारिताल मलिनहोतजलवर्षमे इनमेवरषाकाल स्नानपांननरनाकरे ॥ दोहा ॥ दिनमहिकौसोवेनहीकरेनश्रमकेकाम वरषाऋतमैशुनत-जेसहेनतकडीघाम ॥ चौपै ॥ मुंगीमांसरसामनभावे आसवमूत्रलचीजसुखावे ताजीछाछकूपजलसेवे स्नान-हेतजलसीतललेवे मनखमर्दनतैलसुखावे जाप्रकारवरषाऋतभावे आगेऋतूसर्दहितजांनो आश्विनकार्तिक-मासपछांनो पित्तभूपमलकोपदिखावे सर्करसंगहड़ैनितखावे तैलआमलावृतमनभाय सोसनजढमजीठानि-तखाय रेचकऔषधसवेसोई रुधिरनिकालसीघ्रसुखहोई कसयलाकटुमीठामनभावे कोमलभोजनपथ्यसुखा-वे मखीरनीरसर्वतकरकोई दिवसधूपमेराखेसोई रात्रीसमेत्रेलकेमाही शीतलकरफुनिपीवेताही अथवाचंदन-वालाल्यावे कपूरगुलावनीरमेपावे सोजलशीतलसेवेकोई सर्दऋतूनिश्चेसुखहोई मोतिमालगलेलटकाय शुभ्रवस्त्रधरस्वछवनाय ॥ दोहा ॥ तीखाअंवलल्लूनदधितैलधूपमदपांन दिननिद्रापूरवपवनत्यागेसर्दसुजांन ॥ चौपाई ॥ औषधगर्मसर्दअनिहोई गंढेआदनसेवेकोई जाप्रकारऋतसर्दसुहावे आगेऋतहिमंतमनभावे भूपवातकफमंत्रीजांनो सुंठीहरडसेवसुखमांनो सूरजतेजहीनअतिहोई क्षुधाप्रधलवलवृद्धीसोई पादचारप्र तिदिनफिरआवे मर्दनतैलसुगंधलगावे वृषभअश्वगजमहिषीमांन पंछीआदहोतवलवांन गर्मनीरसंगदेहधु-लावे कणकमांसरसभोजनखावे धूणीगर्मसुगंधीसंग कस्तूरीकेशरलेपेअंग गर्मवस्त्रनूतनतनलावे अग्नितेजन-हिधूपसुखावे अतिव्यायामसेविएसोई गौडीमदिराअतिहितहोई मुखप्रसंनससिविंवसमांन सेवेनरनारीहित-जांन ॥ दोहा ॥ ऋतहिमंतवर्णनकरीमारगपौषविचार शिशरमाघमिलफालगुनवर्णतशास्त्रप्रकार राजावात-विचारिएकफमंत्रीदुखदाय ताकरसेवेहरडकोमघमिलायसुखदाय मृदुमोदकवटुकादिवरभोजनरुचिरवनाय जिमीकंदआर्द्रकमिलेरुचिसोंभोगलगाय ऋतहिमंतजैसेकहीसोसभशिशरविचार जाप्रकारखटऋतकहीआ गेअयनसह्लार.

॥ अयनवर्ननम् ॥

॥ चौपै ॥ शिशरवसंतग्रीष्मऋतजोई उत्तरअयननामकहुसोई वरपासर्दहिमंतसुहावे दक्षनअयननाम-प्रगटावे उत्तरअयनउष्णवलपाय दक्षनअयनशीतप्रगटाय धातूमूलजीवजगजांनो उत्तरअयनखुष्कसभमांनो ॥ दोहरा ॥ ऋतऋतकेजोअंतमेंसातसातदिनयौन आगमऋतकीजोविधीतिनमेंवर्तनतौन लक्षणऋत-आगमनकेजिनमेवर्ततआय युगमऋतूसंजोगतेंऋतुकीसंधिकहाय.

॥ अथषटऋतुहरीतकीजोगकथनं ॥

॥ दोहरा ॥ षटऋतुयोगहरीतकीप्रातिदिनसेवेकोय कृष्णकेशतनलालहैजराब्याधिहरहोय ॥ कावित्त ॥ ग्रीष-ममेंसमांनगुडपित्तकोविनासकरेवरषामेंलवणसाथअगनतेजकरहै सर्दऋतूसरकरसोंमलहूंकोदूरकरेहिमऋ-तमेंसुंठीसोंवातहूकोचरहै पीपरकेसंगशिशिरपैनहूंकावेगहरेमधूसोंवसंतऋतूखाएकफजरहै छेईऋतसेव-नित्यलालीतनहोतसदाएकयेहरीतकीअनेकदुखहरहै.

॥ अथदिनचर्याविधानं ॥

॥ दोहरा ॥ नरकोइहगुणउचितहै प्रातसमैउठभोर इष्टदेवकोध्यानधर पाछैवर्तैओर चिंतनकरदिनकीक्रिया कारणकरणाजोय पाछेसेजसोंउतरकर त्यागमूत्रमलसोय उत्तरदिसमुखत्यागमल दिनमोउचितविचार दक्षणमुखनिसकेसमे शास्त्रकारमतधार मलत्यागतबोलैनहीपाछैजलाहिसंजोग दंतधावकरसोधमुख द्वादसकुरलीयोग सेंधानोनफुनखुंठभुंन जीरासमकरपीस पाछेमलैजुदांतको रोगनव्यापैसीस चिकनाईतनदूरकर वुटनामलसुखहोय वुटनेसोवीरजवडे रोगनव्यापतकोय सनानकरेइहगुणधरै गर्मीरोगहरेय हृदयतापदुखरुधिरका तनदुर्गंधटरेय तेजवढेदिक्षीहरै क्षुधारुचीसुवधाय वुद्धिधर्मसुखद्रव्यमो कर्ताजानमनभाय ॥ दोहरा ॥ स्नानकरेआयुवढे होतरोगकोभंग स्नानकरेनरानित्यहीं देखवलावलअंग ज्वरीखेदहिचकीजुनर अतिभोजनअरुक्षीन वमनीकफअरुवातयुत इनकोस्नाननचीन्ह करेस्नानफुनिदानाविध फुनिभोजनमनभाय फुनिमिसरीयुतदूधहित ऊनअधिकनहिखाय भोजनकरसूधासवे वलकोअधिककराय वामेकटिपरलेटजो आयुर्वलवढजाय जोमानसभोजनसकरत दौडेमृत्युतिहसंग तातेंभोजनकरसहज शतपदगमनकरअंग सांझसमैभोजनकरै मैथुननिंद्राजोय रोगवैरैतिहनरहिकोताहिकरैनहिकोय निद्रादरिद्रभोजनज्वरहि मैथुनआयुपाहाग्यातेतीनोवर्जकहि मनमोधारविचार.

॥ अथरात्रिचर्यावर्णनं ॥

॥ दोहरा ॥ निसकीचंदकीचांदनी दाहशरीरनिवार निसअंधियारीउदिततिह आनंदजुगहिविचार प्रथमपहरभोजनकरै शयनसुंदरीस्थांन गावदुग्धमिश्ररीमिलीपांनकरेरतिमांन पाछेभोगसुकीजिये पानतंबोलसुजांन जरानव्यापैदेहको निश्चैकरमनमांन.

॥ अथखट्वस्तूआनंददायक ॥

॥ दोहरा ॥ सजरामांसनवीनअन्न सुंदरस्त्रीहितमांन भोजनक्षीरनवीनघृत उष्णोदकअस्नांन.

॥ अथपट्वस्तूदुःखकारक ॥

॥ दोह ॥ सडामांसवृद्धास्त्रिया धूपसौंनहितनाहि परभातीमैथुनाक्रिया सजरादूधजमाहि.

इतिश्रीरणवीरप्रकाशे षट्ऋतुवर्णनपूर्वक त्रिदोषसंचयशांतिकोप ऋतूआहाराव्यवहारक्रिया जलविधिदिनचर्या नामत्रितीयोअधिकारः ॥ ३ ॥

॥ अथनाडीपरीक्ष्यावर्ननं ॥

॥ दोहरा ॥ कहोंपरीक्ष्यानाडिकी जातेदुःखसुखभास करअंगुष्टकेमूलतें समझलेहुगतितास करपदअंगुष्ठमूलकी वैद्यजुदेखेनार पुरुषकेदहनेहाथकी तिरियावामविचार आदिपित्तमध्यकफलषो अंतपव-

नकोजांन तर्जनिमध्यमनामिका तींनोंसोंपहिचांन ॥ चौपई ॥ गतिकुलंगमेंडकअरुकाक पित्तविकारलषोइहवाक हंसमयूरकपोतगतिलहो कफसंयुकनाडिसोकहो नागजलौकागतिनसजांनो वातविकारताहिमनआनो प्रथमजुनाडिमंदगतिहोय बहुरवेगसोंउटकैसोय इंदजदोषयुकतिसजांन वैद्यग्रंथमतकीनप्रमांन तित्तरलबबटेरगतिजास सन्निपातनाडीलषतास केवलउष्णचलैजोनारि सोलखलीजैरकविकारिइस्थिरसबलचलैनसजवै शुद्धविकाररहितलषतबै जोनाडीचलैअतीगंभीर आंमदोषतिसजांनोधीर दुर्बलचपलचलैजोनारि क्षुधावंतसोलेहुविचारि कामातुरकीनाडिसुजांन शीघ्रगतीतिसकीतुममांन चिंताव्यापतजिसतनमांही क्षीणगतीधमनीलखतांही भयसंयुक्तपुरुषजेजांनो महांक्षीनधमनीतिसमांनो मंदअग्निधातुवलक्षीन महामंदगतिताकीचीन उष्णवेगसंयुतजोहोय ज्वरकीनाडीजांनोसोय अतिशीतलअतिक्षीनलषावै सोरोगीजमपुरकोजावे ॥ दोहरा ॥ क्षणटपकैक्षणगुप्तरहिदुर्वलैताविषराय सोरोगीनिश्चयलषोयमकेधामसिधाय ॥ चौपै ॥ ततक्षणाजिसनराकियास्नांन अथवाभोजनततक्षिणमांन वावुटणातैलजुअंगलगाय अथवाकौउतपंथजुआय क्षुधातृषाकरसंयुतजोय वाकामातुरनरजोहोय मलमूत्रवेगकरसंयुतजांन इनकीनारनहिदेखनमांन अज्ञानभावतेंदेखेजोय भेदकछूनहिसमझेसोय.

॥ अथान्यप्रकारनाडीपरीक्षा ॥

दोहा करअंगूठकेमूलजो प्राणसाक्षिणीनार तिसकीगतसोंदेहकी जानोंसुखदुखसार प्राणपिआरीप्राणकीजानपतीव्रतनार पतिहूकेसुखसोंसुखी पतिदोषेदुखदार दक्षणकरधरपुरुषका तिरिआवामविशेष ऐसेंप्रथमविचारकेपाछेनाडीदेष तर्जनिमध्यानामिका राखअंगुलीतीन करअंगूठकेमूलसों वातापित्तकफचीन तुरतस्नानकिआजिसें अथवासोयाहोय क्षुधातृषाजिसकोलगी वातपसीजोकोय व्यायामीअरुथकततन इनमेजोकोआहि नाडीभावप्रकासतनसमझपरेनाहिवाहि ॥ चौपै ॥ जेकरवातअधिकतनडोले तर्जनितलेतोनाडीवोलेमध्यातलेपित्तपहिचांन कफअनामिकातलेप्रमांन नाडीतर्जनिमध्यातले वोलेवातपित्तजवमिले नाडीअनामातर्जनिपरसे ताछिनप्रवटवातकफदरसे नाडीमध्यमनामातरे वोलेप्रघटपित्तकफधरे तीनोंअंगुरीकेजोनीचे वोलेसंन्निपाततौवीचे जेकरहोवेतनमेवात त्तिसकीनाडीटेढीजात जिसतनहोवेपित्तप्रकासनाडीचलेउछलतीतास जेकरनाडचलेगतिमंद तौजांनोतनकफकोफंद जेकरनाडसीघ्रगतिजात तौजांनोतनसन्नहिपात ॥ दोहा ॥ टेढीव्हेउछलतचलेवातपित्तपरनारि टेढीमंदगतीचलेवातसलेपमकारि प्रथमउछलफुनिमंदगतिचलेनाडजोकोय तौजांनोतिसदेहमेकोपापित्तकफहोय वातवेगपरजोचलेसांपजोंकज्योंकोय पित्तकोपपरसोचलेकाकमेंडुकीहोय कफकोपेतवहंसगतअथवागतीकपोत तींनदोषपरचलतसोतित्तरलवज्योंहोत सोरठा कवहुंमंदगतिहोय नारीसीनारीचले कवहुंसिघ्रगतिसोय दोषदोइतवजानिए॥दोहा॥ ठहरठहरकरजोचलेतोनाडीमृत्युदिखात पतिवियोगतेज्योंप्रियाशिरधूनतपछतात अतिहिक्षीनगतिजोचलेअतीसीततरहोय तौपतिकीगतनासकीप्रघटादिखावतिसोय कांमक्रोधउद्वेगभयवसेचित्तजिहचार ताहिवैद्यनिश्चाधरेचलतक्षीनगतिनार ॥ छप्पै ॥ धातुक्षीनजिसहोयमंदवाअगनीयाकी तिसकीनाडीचलतमंदतेमंदताकी तप्ततौरतनचलतयौनसीभारीनारी ताहिवैद्यमनधरेतौनसीरुधिरदुखारी भारी नाडीसमचलेस्थिरावलवतिजांन क्षुधावंतनाडीचपलस्थिरातृप्तमयमान इतिनाडीपरीक्षा.

॥ अथनेत्रपरीक्षावर्णनं ॥

॥ दोहरा ॥ वातजनेत्ररूखेरहै धूम्रजरंगविकार चंचलखुलेझमकेनहि कालेरंगविकार पित्तनेत्रपीलेरहैं नीलेलालतपेह तप्तधूपनहिदृष्टिदिक लक्षणतांकेयेह कफजनेत्रजोतीरहित चिटेजलभरताहि भारेवहुताही- प्रभा मंददृष्टिदरसाहि कालेखुलेजुमोहसों व्याकुलअरुबिकराल रूषेकवहुलालहोय त्रैदोषजतिहभाल तीनतींनदोषहिजहां त्रैदोषजसोंमांन दोदोदोषलषेजहां द्वंदजतहांपछांन.

॥ अथअसाध्यलक्षणं ॥

॥ दोहा ॥ एकदृष्टस्वाधीननहि *आपहिखुलमिलजाहि पलकांकृष्णताराछिपी अंधकारदरसाहि भ्रमधूम्रआंसोदृष्टपरऔरहिऔरविभाग नेकरंगविकराललख वहुविधचेष्टात्याग.

॥ अथसाध्यलक्षणं ॥

सौम्यदृष्टसुंदरसुषी हसमुखदृष्टमंझार वैद्यकरेऔषधाक्रिया. पथ्यजानतिहसार.

॥ अथान्यप्रकारनेत्रपरीक्षा ॥

॥ दोहा ॥ रूखेधूम्रडरांमनेचंचलझमकितनाहि भीतरसेकारेलखेवातरोगहैताहि पित्तकोपपरपीतरंग- अथवानीलेलाल तप्तरहेलोचनसदासहेनदीपकझाल जोतिहीनसितजलभरेरहतजोभारेएन मंदमंदअवलोक तेकफरोगीकेनैन कालेअलसानेखुलेमोहाकुलविकराल रूषेनैनत्रिदोषकेकवहुंहोतहेंलाल तीनदोषकोचिन्ह- लखतीनोदोषप्रमांन जहांचिन्हदोदोषकेदोइतहांपहचांन ॥ छप्पेछंद ॥ जवएकदृष्टदृगरहेनहीस्वाधीन दुखीके फुनिखुलैआपमिलजाएंपलकखिनमाहिअखीके रहितसदादृगखुलेमिलेवारहितनिरंतर छिपीकृ- ष्णसीसारतारकाभ्रमतधुअंतर विवधरंगविकरालहोचेष्टाविवधादिखाय जिनकेऐसेनैनलखरोगीयमपुरजाय- ॥ दोहा ॥ सौम्यदृष्टसुंदरखुसीजिनकायथाशुभाय ताहिवैद्यलखज्योंकहेरोगमुक्तहोजाय ॥ इतिनेत्र- परीक्षा ॥

॥ अथमुखपरीक्षावर्णनं ॥

॥ दोहरा ॥ जडवतउठमिलेनही रूखाकांतिविहीन पलपलमेंसूकतरहै वातजमुखइहचीन रक्तवर्नमु- खपीतवर तप्तहोयअतिदाह लिसकतउष्टनासाजुमध्य जलनहोतपिततह भारामुखचिकनारहे सून्यरहेति- हचाल अरूफेनलजोमुखरहै ताहीकफहिलषभाल दोदोलक्षणमुखरहै द्वंदजजानप्रवीन त्रैत्रैलक्षणजाहि- मिल त्रैदोषजसोचीन.

॥ अथान्यप्रकारमुखपरीक्षा ॥

॥ दोहा ॥ जढवतउठमिलेनहीरहेकांतिविनरूख वातकोपपरजातहैछिनछिनमेंमुखसूख रक्तवर्णजो- मुखरहेअथवापीतदिखाय तप्तरहतआननजिसेपित्तकोपप्रघटाय भारासितचिकनायथाआननशून्यदिखाय-

कहिएताहिसुनायकेकोप्पोकफदुखदाय लक्षणजहांत्रिदोषकेतहांदोषहैंतीन दोलक्षणदोदोषकेजानतबुद्धिप्रवीन ॥ इतिमुखपरीक्षा ॥

॥ अथजिव्हापरीक्षावर्णनं ॥

॥ दोहरा ॥ हलकीजिव्हापुष्टवर चारोतरस्वछहोय स्वादमधुरपतलीप्रभा सभरसप्रीतकजोय लालविसालसुद्धमैलसो जोजिव्हामुखमाहि ताहिसुद्धजिव्हाकहै बुधजनहितसमझाहि फाटीसुत्तारूक्षवर पतलीदुरवलजांन चंचलधूमररंगहोथ खौरीस्पर्शमोमांन तीक्ष्णइवफाटतरहै तालूसूकनमाहि वातजजिव्हाजानतिह वैद्यदृष्टिकरताहि लालरंगकौडीरहै जढसेपीलीहोय सिंवलकेकांटेसदृश लालअंकुरलखजोय दाहपककलुनीलवर कटुसलूनप्रियताहि पित्तजाजिव्हामानवुध वैद्यककहितसुभाहि मांसअंकुरसंयुक्तजो गाडीश्वेतरंगहोय स्वादमधुरकफलेपकर जडवतरहहैसोय स्वादजुपाछेआवतचष षटरसचाषनचाहि श्लेष्मजिव्हतिहजानवुधग्रंथकहतमतयाहि नीलधूडसदृशजुहैलालपीतमिलमांन सूकीसमतापायगुणथकितरहैजडजांन कांटेउगतमध्यभागतिहफूटीवहुतविकार द्वंदजाजिव्हावातपित्तमानलेहतिहसार नहितरनाहिवहुखुरकहै मंदजडाहिदरसाय वचनअहारकरनहिसकैधूडेरंगप्रभाय श्वेतविकारसंयुक्तअतिभारीमधुरतिहस्वाद वातकफहिसोजानियोऐसेजिव्हविबाद श्वेतपीतअरुलालयुतकांटेकौडीहोय कफपित्तजिव्हाकहितहैवैद्यविचारेसोय कालीनीलीदुष्टरंगकांटेउगतविकराल चेष्टारहितजिव्हाजुनरसन्निपातसोंचाल इतिजिव्हापरीक्षा

॥ अथान्यप्रकारजिव्हापरीक्षा ॥

॥ दोहा ॥ हरीरंगमधुरीफुटीलालेंचलतअचेत जडवतजिसकीजीभतिसकहिएवातनिकेत रक्तवर्णजैसीदगधतीखीदाहकजांन कांटेजैसेछिद्रलखताहिपित्तपरमांन जेतनकफकाकोपहैजिव्हास्थूलविचार भारीखारीलेसलीकफकोप्पोदुखदार दोलक्षणदोदोषकेकिएसास्त्रपरमांन लक्षणतीनत्रिदोषकेजानतवैद्यसुजांन - ॥ इतिजिव्हापरीक्षा ॥

॥ अथमूत्रपरीक्ष्यावर्ननं ॥

॥ दोहरा ॥ वैद्यउचितहैयाहिविधभोरउठेमनभाय रोगीकोंउठवायकर कांसपत्रमुतराय अथवाकाचकोपात्रहो सोराखेमतिमांन कपडेसोंढककेधरेसूर्योदयफुनिआंन वैद्यपरीक्ष्याताहिकर गुणऔगुणहिविचार जोपानीसदृशहुवे कलुनीलावातविकार लालकुसुंभकेतुल्यहोय गर्मपीतरंगजांन थोडाउतरैजानियो सोगर्मीकरमांन ठंडाश्वेतअरुचीकना कफरोगीपहिचांन फुनचारघडीतिहमूतको धूपधरैसोआंन चारघडीपाछैलखै तैलबूंदतिहपाय फैलजायतौजानियेरोगसाध्यसुखदाय तैलबूंदफैलेनहीबिंदुरूपथिरहोय असाध्यकष्टसोहोतेहैमानवैद्यमतसोय डूबजायजोबूंदसो अथवाघूमनधेर तौवहरोगीमृतकवत्

निश्चैकरसिरफेर जाहिबूंदतालावसम हंसपद्मअरुछत्र हस्तीचामररूपधर सोनिरोगहोइमित्र अजामूत्र-कीगंधिलख ताहिअजीरणरोग कालावुदबुदतुल्यजो सन्निपाततिहजोग गर्मलालकेसरसदृश ज्वरहिरोगद-रसाय लालधारउतरेजिसे महांरोगप्रघटाय मूत्रतैलसरसोंसदृश वातापित्तातिहरोग कालीनीलीधारजिह ता-हिमृत्युकोयोग तैलबूंदपडमूत्रमो छिद्रखडगदंडकार धनुषसदृशजोपेखीये तांकीआशनधार कूपोदकसम-मूतजिह लिंगरोगातिहजांन असेजानविचारमन मूत्रपरीक्ष्यामांन

॥ अथान्यप्रकारमूत्रपरीक्षा ॥

॥ दोहा ॥ घडीचारजवरातहैरहैवैद्यतवआय करेपरीक्षामूत्रकी यथाग्रंथमतभाय पहलीधारादूरकरराख-दूसरधार काचपात्रवाकांसमेढककरराखसह्यार भानुउदेफुनिदेखिएमूत्रपात्रकोल्याय ताहिपरीक्षाकीजिएइ-तउतमूतहिलाय जलसमांनरूखावहुतमूतवातपरजांन लालरंगवापीतरंगथोडापित्तप्रमांन श्वेतरंगचिकना-घनामूतकफोकाहोय दोइचिन्हदोदोषकेतीनतीनकेजोय प्रातसमेकेमूत्रकोराखधूपमेल्याय तैलबूंदडारोत-वेंजवतहनिश्चलथाय ॥ छप्पेछंद ॥ पसरजायवहबूंदतवेतुमकुसलपछांनो विंदुरूपथिरहोयरहेतोअसाध्यव खांनो पसरपूर्वदिसजायतैलवापश्चमउत्तर रोगमुक्तकहुताहिदेखकरऐसोमूत्तर दक्षिणदिसईसानअरूअग-नीनैनृतवायु इन्हदिसांनपरधायतौथोडोकिहिएआयु ॥ दोहा ॥ डूबजायवहबूंदवाश्रमेवानिश्चलहोय कहि-एताहिमुनायकेरोगकोपयुतसोय तेलपसरकरमूतमेमूर्तिविकारदि खाय हलखरकछपऊठयोतौरोगीमिर-जाय हंसछत्रध्वजआदियेरूपदिखावेसोय रोगजायरोगीजिएवडीआयुखाहोय ॥ इतिमूत्रपरीक्षा ॥

॥ अथरोगीपरीक्ष्या ॥

॥ दोहा ॥ रोगपरीक्ष्याकहतहों भावप्रकाशअनुसार दृष्टस्पर्शपूछनक्रिया स्वप्नशकुनसुविचार काल-ज्ञानऔषधक्रिया देशअवस्थापेष अग्नीवलक्रमसमझकर साध्यासाध्यसुलेष दृष्टिपरीक्ष्यापूछने मर्मनपा-वैरोग इनकारणवैद्यसुक्रिया समझगुणागुणजोग स्पर्शकरेज्वरजानिये उदरशूलसिरपीड बवासीरउपदं-शफुन गर्मखजाखगंभीर होलदलीपग्मेहइतिभूतादिकआवेश बिनपूछेसमझेनहीं वैद्यचतुरसुघरेश ॥ इ-तिरोगीपरीक्ष्या ॥

॥ अथस्वप्नपरीक्षा दोहरा ॥

जोस्वप्नहिमोदेवता राजाजाचकमित्र ब्राह्मणगौअग्नीलपै तीर्थजुस्नानविचित्र १ होवेशीघ्रनिरोगता निश्चैजा-नप्रवीन स्वप्नपरीक्ष्याअवश्यकर रोगीकोविधचीन जोस्वप्नहिचीकरउलंघ शत्रुजीतघरआय रथपर्वतऊप-रचढै शीघ्ररोगमिटजाय स्वेतवस्त्रधारणकरै मांसमीनफलखाय सोरोगीरोगहिकटै शीघ्रचैन मोआय सोरोठा भृंगमक्षिकाजोंक वृश्चिकसांपडसेजिसे सोनरहोए विसोकधनअरोगतनपायकर मरेरोएवाकोय

आममांसभक्षनकरे रोगीराजीहोय राजीसोवहुसुखकरे ॥ दोहरा ॥ स्वप्नअगम्यागमनकर कायाविष्टालेप रोवेअपमृतलेषपर मांसखाएविनषेप अहिफनमखीस्वप्नमें डसेरोगकीहान औसेस्वप्ननिरोगलष ताहि-स्वप्नशुभमान नग्नमुंडितलालपट पहरेकाहूदेष नकटाबूचाकृष्णहथ आयुधफांसकरपेष गधासवारीकर-तहैदक्षिणादिशकोंजाय सोअसाध्यरोगीरहै भैसाऊठचढाय ऊचेसेनीचेगिरे जलअग्नीडुवजाय सोरोगी-छूटैनही रोगफासमोंआय सिंहादिकहिंसकजीवही सोभक्षणजिहजांन दीपकवुझतादेषहै तैलमद्यकर-पांन खाइपक्वानकूयेगिरे इहस्वप्नाहैहीन जोनरदेखेनहिकहै प्रातसमैमतिधीन भस्मलेपअंगनमलैस्वच्छ-देहपरमांन स्नानकरेअतिशुद्धमन देवपितरजलदांन हवनपाठपूजाक्रिया शांतिचित्तकरदेह इंहकारनदु-स्वप्नको दोषसबैटरलेह. इतिश्रीचिकित्सासंग्रहेश्रिरणवीरप्रकासभाषायांऔषधकालवर्णनपूर्वकस्वप्नपरी क्षाकथननामतृतीयोऽधिकारः ३

॥ अथदूतपरीक्ष्या ॥

॥ दोहरा ॥ जोनरवैद्यवुलावने भेजेरोगीजाहि कानाखोदानककटा नाहिभेजनोताहि अतिनिर्मलव-स्त्रनसहित वाहनचढेरथसोय वैद्यभेटसंयुक्तवर उत्तमवर्णसुजोय प्रथमवर्णअछाउदितदूतसु हितकरचीनवामे-स्वरलषचलरहै वैद्यल्यायपरवीन सोरोगीतिहवैद्यके दारूस्वच्छबलहोय दूतपरीक्ष्यायहउचित भावप्र-काशमतजोय इतिदूतपरीक्ष्या ॥

॥ अथशकुनपरीक्षा दोहरा ॥

वैद्यचलेजवयतनहित सन्मुखशकुनविचार जोशीतलशकुनाहिमिलै रोगीरोगनिवार १ फलफूलहिअन्नले-मिले तुर्तनिवारतरोग पावकआदीगर्मजो सोसन्मुखमंदजोग २ इतिशकुनपरीक्षा.

॥ अथसाध्यपरीक्ष्या ॥

॥ दोहरा ॥ जाकीप्रकृतीदृढरहै अग्नितीव्रहृदमाहि काहूविधरोगीलषै एकअवस्थाताहि १ रोगनिरंत-रएकहोय औरचिकित्सासार प्रथमऔषधीतामगुण अरुवैद्यकजियधार २ तीजोचाकरहितहिवर रोगीजितें-द्रियमान घटनवढनजानतजुगत रोगसाध्यातिहजान ३ ॥ चौपै ॥ दोइवारप्रतिदिनमलत्यागे छेद्वुवारमूतेसु खजागे ऊनअधिकहोवेतवजांनो दोषकोपतनमाहिपछांनो इतिसाध्यपरीक्ष्या.

॥ अथअसाध्यपरीक्ष्या ॥

॥ दोहरा ॥ जिहरोगीनिसानीदनहि कफकंठहिरुकजाय दाहहोयनाडीसुमंद वोलतजीभथकाय सवइंद्रीअ-पनीक्रिया धर्मछोडकरचाय सोरोगीनिश्चयमरै मंदाग्निप्रगटाय क्षीनप्रकृतिनेत्रलालहै स्वासउठतहृदमाहि शूलतंद्राहिडकीरहे तृषाबहुतहोजाहि वहुसोवेअतिदाहहोय अधिकपसीनाआय चिकनाहोवैअधिकतन निश्चेसोमरजाय ॥ इतिअसाध्यलक्षण ॥

॥ अथकालज्ञानवर्णनं ॥

॥ दोहरा ॥ निसगर्मीदिनसीतलग कंठकफहिसंयोग तिहरोगीआसानहीनिश्चेजांनोयोग नासाअग्रहो यसीतअति हाथपैरहृदशीत सिरमोशूलसुचढरहै मरणताहिधरचीत कांतितेजलज्जानही अधिकक्रोधहो जाय आशातिहकीमासषट पाछेतेमरजाय अंगकंपभंगरूपहोय रंगशरीरमिटजाय चितसुगंधदुर्गंधनहि आवैमृतसोभाय वृक्षडालीआगाहिलषैषटऋतुमरैसुरोग कामकरैपरस्वेदनहि तीनमासवसहोग आंषदेहमुखवर्णसव औरहिऔरसमान जीभनासिकाअग्रजुगभृकुटीमध्यनहिजान मुखकोवर्णविवर्णअति नासाअग्रवटमान कानसुनैनहिशब्दको रोगीमरैसुजान अरुवोलनवाणीथके समर्थदेहकोचाव नेत्रलालरोगीमरै इंद्रीग्रहनस्वभाव जलमोछायानहिलषै मरैअवश्यतूंजान मुखपंकजसमलालहो जिव्हाकालीमांन कायामोपीडारहैमरननिकटतिसहोय हृदयनाभिकांधेजुगल कंपवायकरसोय श्लेषाशतभिषआर्द्रा स्वातीमूलनक्षत्र पूर्वाषाडाफाल्गुनी पूर्वाभाद्रपदमित्र भरणीरविशनिमंगलहि छठद्वादशमोजांन जोरोगहिरोगीवरै ताहिमृत्युकरमांन नेत्रपुतालिमोदूसरे अपनोरूपनहिदृष्ट सोरोगीभीमग्तहै निश्चैजानवासिष्ठ जिहरोगीकोरविउदित दहिनासुरप्रगटाहि संध्यावायोचलरहै मरैनजानउपाय जायजोमारुतापित्तग्रहापित्तहोवेकफगेह कफहोवेजवकंठमेप्राणतजेतवदेह ॥ चौपै ॥ ध्रुवअरुंधतीहरिपदतीन नहिदेखेसोप्रानविहीन जिव्हासोअरुंधतीजांनो नासिकाग्रकोध्रुवपहचानो भ्रूकोमध्याविष्णुपदकाहिए नहिदेखेसोअंतकलहिए. ॥

॥ अथऔषधविचार ॥

॥ दोहरा ॥ वैद्यउचितइहसारहै औषधगुणहिविचार रोगीरोगप्रमाणलष औषधक्रमसोंधार जेतोरोगप्रमाणलष औषधतिहसमदेय कडवीअरूकखाइजो रोगग्लाननकरेय नहिषाविद्वेषसुकरै सोरोगीनहिजीय क्रमअनुसारकरऔषधी प्रथमपरीक्ष्यालीय इतिऔषधविचारः

॥ अथदेशविचार ॥

॥ दोहरा ॥ देशतीनपरकारहै अनूपसाधारउद्यान जहांअधिकजलवहितहै तहांअधिककफमांन जैसेपूर्वअनूपदेश जिहलक्षणगुणएक वातपित्तकफसमानहै साधारणसुविवेक वायुअधिकजिहदेसमो सोवनकोतूंमांन देसअनुसारजुदेहहै प्रकृतिप्रमांनसुजांन इतिदेशविचार.

॥ अथकालविचार ॥

॥ दोहरा ॥ कालसुतीनप्रकारहै शीतउष्णवर्षत अधिकशीतवाशीतनहि रोगताहिउतरंत शीतकालग मीवरै सोविपरीतप्रवीन उष्णउष्णताअधिकहोय अथवाउष्णविहीन समकररूपजुनहिटिकै समविप्रीतसो-

चीन वर्षाऋतवर्षाअधिक अथवावृष्टिनहोय तौभीरोगसुआवै मानुषरोगवरजोय जाहीसमताकालकी-जाहिऋतूतिहरूप सोनिरोगकालहिकहै देसअरोगअनूप इतिकालविचार.

॥ अथअवस्थाविचारः ॥

॥ दोहरा ॥ तीनअवस्थासोकहोबालजुवावृद्धमांन उत्तममध्यमअधमतिह मानुषदेहप्रमांन स्त्रीकारूप-पछांनकर गर्भअवस्थातीन देहीकायुस्वरूपलष औषधकरमतचींन बालअवस्थाआदकर षोडशवर्षपर्यंत मात्राउचितप्रमांनलषऔषध करमनचिंत जुवाअवस्थाकायवर बलअनुसारसुदेहि निर्बलच्छीनविचारकर औषधपानस्नेहि वृद्धावस्थाबलरहै कभीच्छीनकभीमंद देषवलावलदेहको औषधकरआनंद ॥ इतिअव-स्थाविचारः ॥

॥ अथअर्थविचारः ॥

॥ दोहरा ॥ अर्थविचारसुपांचविध शब्दस्पर्शअरुरूप रसगंधादिविचारिए इनकेस्थानअनूप शब्दस्था-नसुकांनमो स्पर्शहित्वचामंझार रूपस्थानसुनेत्रमोंरसस्थानमुखसार गंधस्थाननासाकहै घटनवढनपरकार ताकेअर्थविचारकर वैद्यसमझमनधार शब्दघटेतौजानिए अल्पअधिकश्रुतधार मिथ्यासुनैकछुकाकछू इ-हश्रुतघटनाविचार स्पर्शक्षीनतबजानियो थोडाकरैसंचार मिथ्यास्पर्शकछुकाकछू स्पर्शघटनसुसह्मार दृ-ष्टिघटनतौजानिये थोडादृष्टिनआय मिथ्याकछुकाकछुलखै दृष्टिघटनातिहचाय रसइंद्रीघटजानियेअल्प-खायबहुखाय मिथ्याखायसुचाहिकर रसइंद्रीघटभाय सुंघनघटनइहविधकही अल्पसुगंधीधार बहुसूंघै-मिथ्यावरै सूघनसुंघाविचार इनकारणनरवोधकर अर्थविचारदृढधार समझबूझवर्तैसदा रोगरहितसंसार इ-तिअर्थविचारः

॥ अथकर्मविचारः ॥

॥ दोहरा ॥ कर्मतींनविधजानियै कायकमानसवाच कायककायामोरहै मनमहिमानसजाच वच-नवाचिकाजानइह तीनोकर्मविचार विवधप्रकारसोकहितहों चतुरजीयमोधार कायथकनतेजानियै थो-डाकर्मकरेय अथवाबहुकछुकर्मकर कछुकाकछूधरेय मनघटनातबजानियै अल्पइछामनमाहि बहुइछाक-छुहीकछू मानसघटनगिनताहि बाणीघटनतौजानियो बोलैअल्पसुभाय अथवाबहुवकतारहै कछुकाक-छूसुनाय जोनरइहतींनोगुणहि समवर्तैवुद्धअनुसार सोअरोगदेहीरहे इहकर्महिनिरधार.

॥ अथअग्निबलविचारः ॥

॥ दोहरा ॥ अग्नीपांचप्रकारहै सभकीदेहमंझार मंदाग्नीतीक्षणप्रभा विषमाग्निसुविचार समअग्नीचौ-थीकहीभस्माग्नियहपांच सबशरीरवरजानियो पांचप्रकृतितनसांच जाहीकफकीप्रकृतिताहिहोतमंदाग्न कफ-

हिरोगउत्पतकरै सोअतिमंदसबअग्न जाहिपित्तकोप्रकृती तीक्ष्णअग्नतिहहोत खानपानपाचतरहै गर्मरोगउद्योत वातप्रकृतीतनजाहुके विष्माग्नीयुतसोय पचअपचअन्नमुकरै वातरोगतिहजोय समाग्नीसमजोहोतहै सर्वअग्नमोश्रेष्ठ अन्नपचैरोगनालिपैसर्वप्रकारकरइष्ठ भस्मअग्नितिहजानियो भस्मकरोगउपजाय समापायऔषधवरै कायाकफनरहाय पित्तअग्नजववडततिह मारुततीव्रप्रवाहि तीक्ष्णअग्नप्रगटतरहै भस्मकअग्नहोताहि भोजनजलजोनहिमिलै प्यासपसीनाआय मूर्छादाहआदिककरै मारतहैतिहचाय तातैंअग्निप्रभावलख यतनकरैवुद्धवांन ताकोरोगविचारकर प्राणीजीयसमांन जोभस्मकअग्नीपुरुष ताहिचिकित्सानाहि भोजनसोहोवतउदित नाहिपडैमरजाहि.

॥ अथयुक्ताऽयुक्तविचार ॥

॥ दोहरा ॥ युक्तायुक्तविचारिएसातोविधपरमांन विधिविधानवर्णनकरों जातेसारपछान स्नेहपानविधस्वेद विधवमनविधीसुविचार रेचनविधवस्तीविधी धूम्रपांनहितसार रुधिरलुडावनजानतिह जौंकशृंगिअनुमांन विधविधानसातहिकहे युक्तायुक्तप्रमांन.

॥ अथस्नेहपानविधिः ॥

युक्त ॥ दोहरा ॥ सनेहपांनविधिकहितहों सुनलीजैचितधार जैसेसवग्रंथनकही तैसेकरोंउचार ॥ चौपई ॥ कटिउरुजंघपादमंझार जाकोवातकरैसंचार स्नेहपानयतनसोकरै ताकीविधआगैसभ उचरैंस्नेहभोजनादिकजोपान ताकोइंद्रीहोयवलवान इंद्रियव्याकुलतानहिगहै पक्ष्याघातहृदरोगनरहै अन्नसाथपुनकरहैपांन वलअरुवर्णहोयतिसमांन जोकटिपीडाहोवैजास असप्रकारविधिजानोतास प्रथमसनेहपानकरवावै उष्णतोयपाछेहिपिलावै ऐसीविधजोग्रंथनकही कटिपीडामोहितकरलही सरदऋतूकरहैघृतपांन मज्जावसावसंतप्रमांन उष्णतैलवर्षाऋतपीवै ग्रीषममोघृतपानसुथीवे शिशिरहिमंतशीतमोजान सबसनेहकोपांनप्रमांन पित्तविकारकेवलघृतपांन वातविकारसलवणपछांन कफविकारमोतैलपिलावै त्रिकुटाअरुयवक्ष्यारमिलावै शीतकालमोदिनकरैपांन उष्णकालरात्रीपरिमांन जोवातपित्तअधिकलखलीजै तौभीरात्रिसमयसोपीजै वातऔरकफअधिकलखावै तोदिनहूंमैंताहिपिलावै उष्णकालकफपैतिकपीवै मूर्छात्रिपाताहिफुनथीवे वातकफीपीवैशीतकाल शूलअरुचगुरताजुविहाल

॥ अयुक्तः चौपै ॥

अजीरणतरुणज्वरहिमंझार दुर्वलअरुचमूर्छितजुविकार स्थूलछर्दमदपीडितजोय रेचनांतअकालप्रसूतासोय एतेकरेनहिस्नेहविधान करैंतोरोगअनेकपछान जोशुद्धकोष्टसेवैजुसनेह बलवरणधातुवृद्धिलखतेह जरामंदइंद्रीदृढथावे इकशतवर्षसुजीवरहावे ॥ दोहरा ॥ सनेहपानकोविधकही चिकित्साग्रंथअनुसार याप्रकारजोपानकर उठेनकोपविकार इतिस्नेहपानयुक्तायुक्तविधिः

॥ अथस्वेदविधिः ॥

॥ दोहा ॥ स्वेदाध्यायवखांनहो भावप्रकासनुसार जाप्रकारवर्णनकियो सोसुनिएमतिधार ॥ चौपै ॥ जाकोहोवेवातविकार ताकोस्वेदविधीहितकार स्निग्धदेहजाकोलखपावे ताकोस्वेदअवश्यकरावे वासने-हमर्दनकरलेवे पाछेस्वेदताहुकोदेवे स्वेदअन्यथादेवेनाहीं जाप्रकारसमझेमनमांहीं दसमूलक्काथकरदेवेस्वे-द वचावेनेत्रदूरसभखेद तिलअरुमांसमेलकरक्काथ करेस्वेदवावालुकसाथ वामिट्टीकरगोलाल्यावे इहसंगवा स्वेदकरावे वृषनहृदैनेत्रनपरसोई कोमलस्वेदकरेहितहोई वक्षस्थलमध्यममनधार स्वेदविधीकरदोषनिवार-जेकरअतिशीतलतनजांने महास्वेदकरदूरपछांने दुर्वलकोकोमलकरस्वेद मध्यमकोमध्यमलखभेद महांस्वे-दवलहूंपरदेवे ऐसोभेदसमझकरलेवे करेस्वेदतनहलकापावे निश्चेवातविकारनसावे सकलइंद्रिआंनिर्मलहोई रोमद्वारखुलजावेंसोई रोगीपुरुषकफीलखपावे रूक्षवस्तुकरस्वेदछुडावे जेकररोगपित्तअतिहोई कदाचित-स्वेदकरेनाहिसोई जेकरस्वेदताहुकोदेवे दाहतृषाभ्रममूर्छालेवे रक्तपित्तपांडूयुतजोय तृषतक्षीनक्षतदुर्वलहोय-अतीसारवागर्भिनिनार इन्हकोस्वेदनहीहितकार ॥ दोहा ॥ स्वेदविधीऐसेंकही लिखीग्रंथमतजोय करे-वातव्याधीहरे तनहलकादुखखोय ॥ इतिस्वेदविधीः ॥

॥ अथवमनविधिः ॥

॥ दोहा ॥ वमनविधीवर्ननकरो ग्रंथमतीचितधार जाप्रकारविधिवतकही निश्चेदोषनिवार ॥ चौपै ॥ जाकोकफअतिहींप्रघटावे वमनविधीकरसुखउपजावे ऊर्धरोगजाकेतनहोई ताकोवमनविधीहितसोई नवज्वरहोएकुष्टलखपावे श्लीपदवाउन्माददिखावे स्वासकासहृदरोगीजांन इनकोवमनविधीहितमांन तिमर-रुजाविागुल्मीहोई उदरविकारपांडुयुतजोई क्षतकरक्षीनमवेसीजाको वृद्धहोएविधवमननताको प्रमेहीपु-रुषरूक्षतनजांनो तरुणगर्भीणिनारपछांनो निकसेरुधिरकंठकेमाहीं वमनविधीइनकोहितनाहीं जेकरइन्हे-अजीरनहोई अथवाविषनरखावेकोई अधिककोपकफकालखपावे वमनविधीकरसुखउपजावे कफका-कोपअधिकलखपाय उष्णतीक्षनकटुवमनकराय जेकरपित्तअधिकतनहोई करेवमनविधसीतलसोई स्नि-ग्धवस्तुकरवातनसाय जाप्रकारविधवमनसुखाय करेवमनविधवमननहोई करेऔरविधआगेसोई धात्रीकणा-निवसमक्काथसेवेविधिवतऔषधवसाथ वाकेवलजलउष्णापिलावे जाप्रकारविधवमनसुखावे जेकरअधिकव मनबधजाय तौहितवस्तूताहिखुलाय वमनहोएपाछेविधभावे जीरापीसजीभपरलावे अथवाद्राक्षपीसकर-लाय अतरसुगंधिआदमनभाय ॥ दोहा ॥ वमनविधीविधिवतकही सकलग्रंथअनुसार समझचिकित्सा जोकरे सोहैवैद्यउदार इतिवमनविधीः

॥ अथरेचनविधीः ॥

॥ दोहा ॥ आदवमनविधजोकही मांनदोषहरसोय फुनि रेचनविधकहितहो यथाग्रंथमतजोय॥ चौपै ॥ सर्दवसंतऋतूकेमाहीं वमनविरेचनविधहितताहीं आदवमनफुनिपाचनखावे ताकरकफकाकोपपचावे इनरोगनपरनिश्चेजांनो रेचनविधीसदाहितमांनो अजीर्णज्वरपांडूगदजांन वातरक्तमलसंचयमांन भगंद-

ववासीरयुतजोई उदररोगवागुल्मीहोई अरुचीरोगहृदेकाजांनो योनिरोगतनगरमीमांनो कर्ननासिकानेत्र-विचारो विसफोटविसूचीशूलनिहारो मुखप्रमेहशिररोगजोहोई मूत्राघातसोथयुतजोई इनरोगनपरेचनमांनो तातकालदुखदूरपछांनो आगेभेदऔरसुनलीजें रेचनविधइनकोनहिकीजें बालकवृद्धक्षीनतनजोई दुर्बल-तनशस्त्रक्षतहोई भयसंयुक्तखेदयुतजांनो तृष्णादोषस्थूलतनमांनो.नवज्वरनारगर्भिनीजोई अथवासीघ्रप्रसूति-होई मंदाग्निमेदरोगतनमाहीं रूखातनइनकोहितनांहीं पित्तप्रकृतिजाकेतनजांनो कोमलरेचनताहिपछानो कफप्रकृतिपरमध्यमजांन वातप्रकृतिपरकर्डामांन दाषदूधहरडजोकहिए कोमलरेचनइनकालहिए त्रिवीकौ-डकअंगुलजोकोई इनकामध्यमरेचनहोई दंतीथोहरदूधविचारो जमालगोटअरुचोषनिहारो करडारेचनती-क्षणकहिए तीनभेदरेचनकेलहिए पांचसातादिनआगेजांन मुंजसकरविधसोइपछांन सोनामखीसौंफमंगावे मु नक्कापुष्पगुलावरलावे ढाईढाइटंकसमल्याय सवाटंकजीरासंगपाय पाठासोदसटंकामिलावे तींनपाउोज-लक्काथचढावे एकपाउोजलशेषरखाय दिवसचारलगताहिपिलाय प्रतिदिनखिचडीघृतसोंदीजें दिवसपां-चमेजहविधकीजे त्रिवीगुलावताहिंमगवावे सोनमषीअरुपाठापावे दसदसटंकभागसमल्याय जीराढाईटं करलाय पांचोटंकसौंफसंगपावे करेक्काथफुनिताहिपिलावे घृतसोंखिचडीखावेतांही खारीखट्टासेवेनांही तीसदस्तआजावेजवहि उत्तमरेचनकाहिएतवही मध्यमवीसहीनदसजांन जाविधरेचनविधिप्रमांन ऋतुप्र-मानरेचनविधजेसें भिंनाभिंनवर्णनसुनतेसें वसंतऋतूऐसामनभावे त्रिवीगुलावसौंफमंगवावे सोनमषीअरु-जीराल्याय खंडपायशुभदस्तकराय मिसरीत्रिवीग्रीषमऋतमांन आवेदस्तदोषकीहांन वरषाऋतऐसामनभावे त्रिवीसुंठमघदाखमंगावे मधूमेलहितसेवनकरिए आवेदस्तदोपसवहरिए सर्दऋतूऐसामनभाय त्रिवीधमां-सादाषमंगाय वालानागरमुत्थरल्यावे मुलठिचंदनमिसरीपावे सोनामषीतासंगपाय सेवनकरदुखदूरहटाय हिमऋतपाठाचित्राल्यावे त्रिवीवर्चचौखीसंगपावे सोनामखीतासंगपाय गर्मपांनकरखेदहटाय शिसरऋ-तूमघसुंठल्यावे त्रिवीलूणमधुसंगरलावे सोनामखीतासंगपाय सेवनकरदुषदूरहटाय ॥ दोहरा ॥ ऋतुप्रमां नरेचनकह्यो सेवनकरदुखहांन अवमोदककीविधकहों रेचनसुगमप्रमांन हरडछालफुनिमरचतज सुंठी-वायविडंग पत्रजपीपलआमलानागरमोथासंग पिपलामूलइकत्रकरइहऔषधसमल्याय तींनगुनादंतीधरे-त्रिवीआठगुणपाय छेगुणमिसरीसंगकरचूरनकरेसुजांन मधूपायगोलीकरेढाईटंकप्रमांन प्रतिदिनगोलीएकले सीतलजलकेसंग जुलावहोएमनहर्षहै उदरशुद्धरुजभंग राजरोगदुखनेत्रको ववासीरहरजांन कुष्टगंडमा-लाकही कटीरोगकीहांन गर्मनीरपीवेनही तवतकरेचनहोय गर्मनीरपीवेतऊ दस्तवंदकरसोय विषमज्वर-मंदागनी पांडुरोगहरजांन कासभंगदरअश्मरी मूत्रकृछ्रकीहांन उदरवातहिडकीतथा अवरअफाराजोय प्रतिदिनसेवेदूरदुखअभयामोदकसोय इतिरेचनविधि.

॥ अथवास्तिकर्मविधिः ॥

॥ दोहरा ॥ वस्तिकर्मसुनलीजिए पिचकारीविधभाय रोगहोएमलमूत्ररुक अथवाप वनरुकाय गुदावीचवाइंद्रिमों पिचकारीधरलेय जस्तनलीवाहाडकी स्वर्णरजतवातेय गोपुछ-हिंसदशवनी सुवकऔषधीसंग गुदाइंद्रिकेवीचधर करेरोगकोभंग दोप्रकारसोविधकही अनुवास-नऔनिरूह अनुवासनघृततैलहै निरूहमात्राजलजूह तोलप्रमांनदोटकेभर जलसोंरोगनिवार इनरो-

गनकोहितनही भस्मककेवलवाय मूर्छाअरुचिकासतनस्वासक्षईनहिभाय अवजैसेंविधउचितहै वस्तिक-र्महितकार सोतैसेंबर्ननकरो वैद्यग्रंथउरधार वस्तिकर्मछेवर्षतक छेअंगुलपरिमांन उपरंतवर्षद्वादसकहे अं-गुलआठविधांन द्वादससेंउपरंतफुनि द्वादसअंगुलजोय तापाछेमतिमाननर करविचारसुखहोय ॥ चौपै॥ पिचकारीकोवृतहिलगावे सोपिचकारीपूर्णकरावे सीतकालवसंतऋतुमांही स्नेहवस्तिविधकरिएतांही ग्री-षमसदंवर्षऋतजानो रात्रिअनुवासनविधीपछांनो चिकनाभोजनसोनाहिखावे रुचिकरहलकाभोजनपावे-स्नेहसौंफजललवणसुलीजें गर्मनीरयुतगुदमेंदीजें भोजनकरप्रसंनमनहोई फिरायमूत्रमलवाहिरसोई वांम-भागभूमपिरसोवे वामजंघऊचीकरहोवे वांमहाथपिचकारीलेवे स्नेहपिचकारीगुदमेंदेवे दहनेहाथदवावे-सोई जाविधऔषधभीतरहोई देनलेनवालेहैदोय औरपासहोवेनहिकोय इहासिक्षामनमाहिविचार जृंभा-कासछीकनहिधार ताडीतीसहाथपरमारे मुखमेंसौतकगिनतीधारे तवतकगुदपिचकारीदीजें तापाछेवि-धऐसीकीजें तनपसारसूदाहोजावे पगअंगुष्टफुनिदोइखिचावे फुनिसेजापरसूधासोवे आवेनींदवातदुख-खोवे जाप्रकारवस्तीविधभावे गुदादोषमलवातनसावे अनुवासनवस्तीविधजोई एकएकदिनअंतरहोई-छेअरुसातआठनववार वस्तिकर्मकरवातनिवार अनुवासनवस्तीकेपाछे निरूहवस्तिविधकरसुखआछे-मलाशयपक्काशयकेमांहीं रहेअनुवासनशेषतहांहीं स्नेहयुक्तजलशेषजोहोई गुदाद्वारनिकसेनहिसोई तौनि-रूहवस्तीकरवावे वावत्तीकरगुदमेंपावे सखेवातमलस्नेहनिकासे वाजुलावकरसुखपरकासे.

॥ अथअनुवासनवस्तीकातेल ॥

॥ चौपै ॥ एरंडकणगचकीजढल्यावे अडूसागिलोयभडिंगीपावे रोहिपसतावरसुहांजनआंन काग-लहरीसमऔषधठांन दोदोटकेप्रमांनमंगावे आगेऔषधऔरमिलावे अलसीकुलथमाषजवल्याय और-बिल्वजढसंगरल्याय दोदोसेरऔषधीपावे करइत्रकफुनिक्काथचढावे चौसठसेरनीरसंगपाय षोडससेरशे-षरहजाय तासंगमीठातेलमिलावे चारसेरधरआंचजलावे जलेक्काथतैलरहजाय अनुवासनहिततैलसुभाय एकटकाभरगुदमेंदीजें वातविकारसकलहरलीजें अनुवासनविधऐसेंहोई निरूहवस्तिआगेसुनसोई निरू-हवस्तिआस्थापनकहिए अधिकभेदअतिकारणलहिए अवजिनकोहितसोसुनआगे निरूहवस्तिकर-तनसुखजागे हृदयचोटाचिकनातनहोई वमनअफाराहिडकीजोई मवेसीस्वासकासमनधारो सोजगु-दाअतिसारविचारो मूर्छातृषाउदरदुखजांन उदवर्तविशूचीपथरीमांन वातरक्तविष्मज्वरजांनो अमल-पित्तहृदरोगपछांनो मंदाग्नीचरणरोगजोहोई मूत्रकृछ्रशूलक्षीनतनजोई निरूहवस्तिइनकोहितजांनो करे-सीघ्रदुखदूरपछांनो वातविकारअधिकतनहोई कसैलीकटुसनेहयुतसोई पित्तविकारअधिकलखपावे दूध-संगवस्तीविधभावे कफकाकोपअधिकतनहोई मूत्रादीकटूकसैलीसोई जेकरवालकवूढाजांने कोमल-बस्तिविधीमनआंने अवजारांविधभेदविचारो आगेभिंनभिंनमनधारो.

॥ अथवस्तिकर्मग्यारहविधीः ॥

॥ दोहरा ॥ वस्तीकर्मप्रमाणहैजारारूपपछांन उत्क्लेशनअरुदोषहरलेखनशोधनजांन शमनवृंहणपि-छलकहैमधुअरुतैलविचार स्थापनासिद्धजुफलकहेजारारूपसह्मार.

॥ अथउत्क्लेशनवस्तिविधीः ॥

॥ दोहरा ॥ अरंडोलीमहुआवचलेपीपलसेंधाजान झाउवूटबकलवरैइहकाढापरमांन.

॥ अथदोषहरवास्तिविधीः ॥

॥ दोहरा ॥ सौफमुलठीविल्वसमइंद्रजवहिपरमांन पीसकांजीगोमूत्रसोंकीजैंवस्तिविधांन.

॥ अथलेषणवस्तिविधिः ॥

॥ दोहरा ॥ त्रिफलाकाथवनायकेमधुगोमूत्रमिलाय जवक्षारफुनिपायकरलेखनवस्तिशुभाय.

॥ अथशोधनवस्तिविधिः ॥

॥ दोहरा ॥ हरडकिरमालाआदलेजुकाबताहिपरमांन यापिचकारीदीजिएशोधनवस्तिविधांन.

॥ अथशमनवस्तिविधिः ॥

॥ चौपै ॥ प्रियंगूफलरसौतमंगवावे मुलठीनागरमोथापावे दूधपायपीसेंजवकोई सभनवस्तिविधकहिएसोई.

॥ अथवृंहनवस्तिविधिः ॥

॥ दोहा ॥ पुष्टाईकिऔषधीकाढाकरमतिमांन मीठाद्रव्यघृतमांसातिलपिचकारीवृंहनजांन.

॥ अथपिच्छिलवस्तिविधिः ॥

॥ दोहा ॥ बेरंपातशतावरीलसुआमोचरसपाय दूधमधूयुतक्वांथकरपिछलवस्तिकहाय.

॥ अथनिरूहवस्तिविधिः ॥

॥ चौपै ॥ घृतमखीरइकसेरमंगावे तामेंकिंचितलूणरलावे तीनोमथपिचकारीदीजें पांचसातवारीविधकीजें एकदिबसकाअंतरहोई निरूहवस्तिविधकहिएसोई.

॥ अथमधुतैलवस्तिविधिः ॥

॥ दोहा ॥ जढएरंडकाढाकैअवरतेलमधुडार एकटकापरमानतिहसौंफपैसाभरकार सैंधानोनअधेलभरपीसमथनकरलेह इहपिपचकारीदेनसौंएतेरोगटरेह गोलाकमीतिलीमेदहरमलकेरोगहटाय उदावर्तरोगहिहरैबलदेहीप्रगटाय.

॥ अथस्थापनवस्तिविधिः ॥

॥ दोहा ॥ मखीरदूधघृततैलसमदोपैसेभरल्याय झाउरसअरुलूणलेपैसाआधमिलाय मथपिचकारीदीजिएस्थापनकहिएसोय रोगजायमनहर्षहैबलवृद्धितनहोय.

॥ अथसिद्धवस्तिविधिः ॥

॥ दोहा ॥ पीपलपिपलामूलचव्याचित्रकसौंठमिलाय काढाकरतिहमोधरैतेलसहतसमपाय लूणमुलठीपायकरफुनीकाथकरकोय पिचकारीताकीधरेसिद्धवस्तिकहुसोय.

॥ अथफलवस्तिविधिः ॥

॥ दोहा ॥ गुदअंतरअरुवाह्यकोंघृतलगायतिहमांन अंगुष्टसमाणडंडीसुपुष्टवारहिअंगुलपरिमांन अ. धंगुदामेंडारतिहचतुराईकेसंग फलवस्तियाकोकहेवैद्यप्रभावउमंग निरूहवस्तिकाभेदयहउत्तरवस्तिइहध- र्म वस्तिकर्मकारकजुनरन्नानकरैजलगर्म दिनसोवनमैथुनतथाकछकुपथ्यनकरेय अनुवासनवस्तीक्रियाआदि- ककरहैतेय.

॥ अथहुक्कादिधूम्रपानविधिः ॥

॥ दोहा ॥ धूम्रपांनषट्प्रकारहैशमनवृहनकासहर्त व्रणधूपनतीक्ष्णकहैसोधनऔषधकर्त इनरोगनमोउचि- तनहिखेदयुक्भयभीत दुखीदांतरोगीजुनररात्रिउनीदाहिमीत उदररोगप्रमेहपांडुमस्तकरोगअफराह छार्दि- घावकेरोगजोक्षीणपुरषनहिचाह तृषितदाहतालूदुःखीफुनीगर्भिनीनार वृद्धपुरषइनवर्जहैधूमरपांनविचार

॥ युक्त ॥

॥ दोहरा ॥ वायूकफकेरोगजोदूरकरैहितचाय सबइंद्रीअरुमनहिकोप्रसन्नकरावेभाय दांतपुष्टकारक- कहैवुद्धिवंतजनजोय लाचीआदिसुगंधकेशमनधूंमहैसोय रालआदिजोधूम्रहैवृंहनधूंमविचार तीक्ष्णऔष- धधूंम्रजोरेचनकाहियेसार मिरचआदिकाधूम्रजोकासघ्नसोजांन खालइत्यादिकधूम्रजोवमनधूमातिहमांन निंववचादिकधूम्रजोसोव्रणधूपनहोय इहषट्धूम्रपानहिकहेभावप्रकाशमतजोय.

॥ अथापराजिताधूप ॥

॥ दोहरा ॥ मोरपंपअरुनिंवपतकटेलडोडछटमांन मिरचीहिंगुकपासगिरवकरीवालप्रमांन सांपकां- चलीविडालविटहाथीदांतसमांन इहपीसेघृतपायकरधूनीदेदुःखहांन भूतप्रेतराक्षसवहूडाकिनिशाकिनि- जाहि सबदोपनकोदूरकरज्वरकोकाटतताहि

॥ अथमाहेश्वरधूप ॥

॥ दोहा ॥ हिंगुदेवदारूतथावेलपत्रघृतपाय कुकटहाडसरसोतथानिंवपत्रमनभाय मस्तककेससर्पकां- चलीविडालविष्टातुषचाय गोशृंगीअरुमैनफलजुगाहिकटेलीभाय वीजकपासअजरोमअरुचन्दनमोरपंप- जांन अजामूत्रसमपीसकरधूपधुषाएमांन भूतपिशाचराक्षसाजितेडाकिनिप्रेतचुरेल इहसबधूपनदूरकरज्वरइ- त्यादिहरेल

॥ अथरुधिरछुडानेकीविधिः ॥

॥ दोहा ॥ मानुषउचितसोहोतहैरुधिरछुडानेयोग्य रुधिरविकारसववूझकरभलेप्रकारलषजोग्य रुधिरनि- कासेसेरइकआधसेरयापाव सर्दऋतूथोराहिवरजोविकारघटभाव

॥ अथरुधिरस्वरूप ॥

॥ दोहा ॥ रुधिररसहिजिहमधुरवरलालरंगशीतलाय गर्मनाहिभारीचिकनदुर्गंधीसहितसुभाय औररुधिरजोदग्धहोगर्मविकारकमांनदुष्टहोयकायारुधिरपीडादाहसुजांन चक्राकारतनखाजअतिफुनसीसूजनचार सभविकारइहरुधिरकेआगेऔरसह्मार नेत्रलालभारीनसेंकायरुधिरमंदसोय तौखटमीठाचाहिकरमूर्छादेहसुहोय तौकायारूखीरहैनसैसिथिलपडजाय यहविकारलखजानियोफस्तकरनमनभाय

अथवायुदुष्टरुधिरलक्षणं

॥ दोहा ॥ अरुणरंगआवैजुझगकठोरशीघ्रगतहोय सूक्ष्मधारकायाचुवैचलैलालरंगसोय ऐसेलक्षणरुधिरकेवातविकारातिहमांन दुष्टरंगजिहरुधिरलषताहिनिवारसुजांन.

॥ अथपित्तदुष्टरुधिरलक्षणं ॥

॥ दोहा पीतुहराअरुनीलरंगकृष्णदुर्गंधितजाहि चलैनहींउष्णासुरहैमखीकीटनहिखाहि जाविधलक्षणरुधिरकेताहि निवारसुजांन पित्तप्रभावऐसोउचितवैद्यसमझमतिमांन

॥ अथकफदुष्टरुधिरलक्षणं ॥

॥ दोहा ॥ शीतलअतिकरचीकनोगेरीरंगसमांन मांसपोटलीसदृशहोधीरेचलतप्रमांन जाहिरुधिरऐसीप्रभासोकफकरतूमांन दुष्टरुधिरजानोतिसैसोसुखकारकजांन

॥ अथसन्निपातदुष्टरुधिरलक्षणं ॥

॥ दोहरा ॥ जामोयहसभरूपहोयकांजीसदृशगंभीर ताहिसन्निपातहिरुधिरमानलेहुमतिधीर .

॥ अथविषकरदुष्टरुधिरलक्षणं ॥

॥ दोहरा ॥ जाहिरुधिरकालाचलैनासासेभिप्रवाह दुर्गंधिकांजीरंगजिहताहिकुष्टप्रगटाह सावनकीडीसदृशरंगकायासूजनहोय ॥ दाहपरैकायातिसैयहलणातिहजोय.

॥ अथरुधिरछुडाना युक्त ॥

॥ दोहरा ॥ सूजनऔरशरीरमोंदाहप्रगटहोयलाल अंगनफोडेफुनसीयांऔरशरीरपकवाल वातरक्तकारोग करव्याईआदफुनहोय स्तनअंगभारीदेहहैनेत्रलालरंगजोय तन्द्राआवैनासरसोंमुखकेरोगविकार गोलातिलीविसर्पफुनविद्रधिआदिप्रकार छालेआदमस्तकदुखैउपदंशहिंगर्मसुजांन रोगरक्तपित्तीजिसैरुधिरकाढहितमांन इत्यादिकरोगाहिउचिततूंवीजौकप्रमांन सींगीवारगछोडिएताहिरोगकीहांन ॥

॥ अथअयुक्तरुधिरछुडाना ॥ दोहरा ॥

क्षीनविषयरतअत्यंतुकराविहंडुलहोयभयभीत गर्भस्त्रीअरुप्रसूततहोयपांडुरोगबरचीत जिहआगेनहिकर्तहैपंचकर्मरेचकाद बवासीरसर्वांगसोथकासस्वासइत्याद छर्दिरोगकोनाहिवरऔरपसीनजिहकाय पो-

डशावर्षपर्यंतनरसत्तरतेवाधिजाय जोइनरोगनवशिपडैजौकलगावनताहि विषकरदुष्टजुहोयनरशिराछुटन-हितताहि वायुपित्तकफतीनमिलरुधिरदुष्टपडजाय ताहियोग्यासिंगीतथातूंबीजौंकलगाय रक्तएकहथजौ-कखिचशोषैइतनोभाय सींगीतूंबीद्वादसअंगुलरक्तलेयमनचाय पछनएकअंगुष्टभरशिराकायसर्वांग शोषै-रक्तविकारयहजानरोगकरभंग ॥

॥ शीतऋतुप्रमान अयुक्तरक्तं ॥

॥ दोहरा ॥ क्षुधामूर्छनानींदभ्रममदमलमूत्रजुआय इनपुरुषोंकोनाहिउचितरक्तछुडावनभाय जिह-रोगीरुधिरनचलैजलौकादिकरभाय सोमुखव्रणकेइहथैंतुर्तछूटैरतजाय कुठसौंडमिरचांपिपलसैंधनोनधर-खार समलावैतौछूटैहैरुधिरचलैशुभचार धूपशीतसमहोय जबभोजनहलकाखाय तौरुधिरहिकाढनउचि-तहैजानवुद्धमतभाय

॥ अथरुधिरथंम्मणेकायत्न ॥

॥ दोहरा ॥ लोधरालरसौंतजवगेहूंआटाआंन धाईबक्कलगेरूफुनीसांपकंचपरमांन रेशमवस्त्रकीखार-फुनसांबरपालमिलाय व्रणकेमुखकोंधरतहींरुधिरवंदहोजाय अन्यच शिराछुडानेनसहिकोऊपरदाहसुदेय-याउसनसकोखारवरयाकटुतैललिपेय जोसूजनहोयबायअंगदाहनहाथनसदग्ध दहनेअंगसूजनवैरैवायेअंग सुदग्ध जोवायअंगूठेनसहिकोसूजनलखैसुजान दहनेहाथनसछोडियेयाहिजानप्रमांन दहनेअंडमजनपरै-वायशिराछुटवाय वांयहाथअंडसूजलखदक्षाशिरामनभाय सूजनजावैइहविधीग्रंथनकह्योविचार याविधकर केऔरभीविशूचिकरोगनिवार.

॥ रुधिरछुडानगुणागुण ॥

॥ दोहरा ॥ अत्यंतरुधिरछुडावनेअंधहोतजियधार अर्धांगशून्यपडजातहै तृपारोगहोएसार अंधेरीम-रतकदुषैस्वासकासउपजाय हिचकिदाहअरुपांडुरुजअतिरक्तछुटेमरजाय याकायामोरुधिरहै जीवनकला-विचार रुधिरजायतौनाहकछू तांतेवुद्धिसह्लार रुधिरछुडायतौशीघ्रहीं प्रवंन्धकरैसुविचार रुधिरकाडसूजन-करैगर्मसेकघृतसार पाछेसैंतिहपुरषकोहरणमांसरसंयोग्य अथवासोरामांसकावकरेकातिसभोग्य अथवा-पीवैदूधसौसठीचावलकोय जवतकपीडानामिटैतवतकपथ्यसुहोय.

॥ अथरुधिरछुडानेकाकुपथ्य ॥

॥ दोहरा ॥ मैथुनक्रोधशीतलजलहिस्नानकरनहितनाहि बाहरपवनबैठनअधिकदिनसोवनतजताहि-कटूषटाईलवणतजशोचबादनहिकार अजीरणभोजननाकरै रुधिरछुडावनहार ॥ इतिश्रीचिकिसासग्र-हेश्रीरणबीरप्रकासभाषायांदूतपरीक्षावर्णनपूर्वकरुधिराविधिवर्ननंनामचतुर्थोऽधिकारः ॥ ४ ॥

॥ अथहितउपदेशप्रमाणं ॥

॥ चौपई ॥ षोडशवर्षनकेमंझार सत्तरवरषऊपरनिरधार इनमोइस्त्रीसंगनकरै आयुरकामजेऊलखपरै जोकदाचितइन्हकेमंझार करैतोअर्शश्वाससंचार ज्वरस्वरमंदपांडुप्रघटावै इत्यादिकरोगनेकलषपावै जोजिसमध्यअवस्थाहोवै पुष्टदेहपुनजाकीजोवै तीसरतीसरदिनमंझार सहमदरासेवेसोनार इहसमस्तऋतमोपरकार ग्रीषमविधीभिनमनधार पंद्रापंद्रादिनउपरंत ग्रीषमऋतरतिकरहै कंत जोअन्यथाइस्त्रीसंगकरै तौताकोबहुरुजसंचरै अवरहुजोरजस्वलाहोय अवरअकामालषियेजोय मलिनरहैअरुवंध्याजेऊ वर्णावृद्धाहोयफुनितेऊ वयोवृद्धाअरुपीडितव्याध योनिदोषजिसहोयउपाध द्वेषसाहितसंन्यासनजोय स्वगोत्रागुरुपतनीजोहोय उत्तमवर्णअधमजिसवर्ण वैश्याअरुअंतजजोधरण संबंधीमित्रवधूद्विजनारी भूपवधूविधवाजुकुमारी इन्हकेसाथसंगनहिकरै करैतोघोरनरकमोपरै संध्याअरुपर्वणमंझार वर्जतजानोसंगसुनार जोइनसमयजुकरहैसंग आयुषतेजधर्महैभंग ॥ दोहरा ॥ वाजीकरणवषान्योहितउपदेशविचार याकोसुनअरुसमझकैलीजोउरमेंधार.

॥ अथरोगप्रमाणं ॥

॥ दोहरा ॥ प्रमांनरोगकाकहतहौंवैद्यग्रंथअनुसार सुनहोसकलप्रवीनजननीकेकरौंउचार ॥ चौपई ॥ सर्वरोगपरमांनानिदांन मलकाकोपअहैमनुमांन मलकाकोपकहांतेहोय वस्तुअहितसेवनतेजोय ॥ दोहरा ॥ जैसेज्वरसंतापतेंरक्तपित्तप्रगटाय रक्तपित्तकीअधिकताज्वरकौंसोउपजाय ॥ चौपई ॥ वृद्धउदरज्योंसोजाकरै दुखउदरजुमवेसीधरै अरुवहउदरगुल्मउपजावै शयनदिवसपीनसप्रगटावै पीनसहूंतेषांसीहोय षांसीक्षईउपजावेसोय क्षईहोतदुर्बलतनपावै निर्बलपुरुषताहिहिजावै रोगारंभकदोषजुकरै अवरविकारकरैनहिटरै इकविकारमोदूसरलहै वुधजनताहिउपद्रवकहै ॥ दोहरा ॥ आदिपरीक्ष्यारोगकीकरनिदांनअनुसार वैद्यचतुरपुनताकरैऔषधादिउपचार ॥ चौपई ॥ औषधदकियेहुयेउपरंत प्रायश्चित्तकरैवुधवंत कर्मविपाकग्रंथअनुसार प्रायश्चित्तकरैसविचार देशकालआयुर्विधिजांन करैचिकत्सावैद्यसुजांन ऐसोवैद्यसिद्धितापावै याहीमोंसंसानहिल्यावे रोगपछांननचारप्रकार भिन्नभिनअवकरौंउचार प्रथमयुरोगीदर्शनकीजै ताहीतैंरोगहिलषलीजै दूसरनाडीआदिसपर्श तातेलषियतरोगअदर्श तीसरप्रश्णहुकेअनुसार तनकोरोगकरैनिरधार मूत्रपरीक्षाचतुर्थपछांनै इहप्रकाररुजानिश्चयठांनै रोगीकेजोतीनप्रकार प्रथमलषैपुनिकरैविचार कवनसुतीनप्रकारसुनावौं जैसेंग्रंथहुतेंलषपावौं कष्टसाध्यइकरोगकहीजै दूसरपुनसुखसाध्यलहीजै तीसरकौंजुअसाध्यपछांनो रोगत्रैपरकारज्योंजांनो वैद्यजुयसकीइछाधरै असाध्यचिकित्साकवीनकरै रोगविकारजअल्पपछांन मगरूरीनाहिकरैनरस्यांन जैसेअग्निअल्पअतिहोय त्रिणसंयोगतेंबहुहोयसोय पुनजुरोगहोयतींनप्रकार तिनकोविवरौंकरौंउचार इककर्मजइकदोषजमांन एकउभयलषलेहुसुजांन कर्मजप्रायश्चिततेंनाशै दोषजऔषधकरजुविनाशै कर्मदोषक्षयहोवैजबै रोगउभयगतनाशैतबै औषधतैंरुजशांतिनहोय रोगउभयगतजांनोसोय प्रायश्चित्तसहऔषधकरै रोगउभयगतनिश्चैहरै विनारोगसमझैपरवीन नहीदेवैऔषधविनचीन विनासमझऔषधविषकहिये वज्रपातसमताकोलहिये रोगसमझपुनऔषधदेवै अंमृतकेसमसो-

लखलेवै सोऊसमझशास्त्रबिनजानै हृदैनआवतलषैस्यानै पठतवैद्यचतुराजोहोय कार्याकार्यविचारैसोय करनोअनकरनोजुविचारै तापाछैऔषधविस्तारै वैद्यआरबलकोनहिस्वामी चिकित्साकरैसमझअनुगामी रोगप्रमांणनिदांनइहसार ग्रंथप्रमांणकियोविस्तार.

॥ अथबालकसेंवृद्धपर्यंतमात्राप्रमाणं ॥

॥ दोहरा एकमासलगबालकोएकरतीपरमांन मिश्रीदूधअरुसहतघृतदीजोताहिसुजांन जैसेंबालबलवढतहैतैसीमात्राजोग्य षोडशवर्षलगजानजवतवमासाहैभोग्य सहत्तरवर्षपर्यंतफुनमात्रायाहिप्रमान कल्कचूर्णग्रंथसुकहै विधिविधांनमनजांन काढाचौगुणउचितहै वालककोकरस्नांन मासप्रतीवालकवमनकहतग्रंथपरमांन हरडरगडघुट्टीकरैनितप्रतिवालकदेय अन्नग्रासपांचहिवर्षषोडसरेचनसेय मैथुनवीसवर्षहिउचितयाविधनरजोकार ताकोरोगनव्यापहै चर्कग्रंथअनुसार तीसवर्षतकतनवढैरुधिरमधुरपनहोय चालीतकवुद्धवलप्रभात्वचागाढपनजोय साठवर्षजोतीनयनस्वरथतीक्ष्णवरहोय सत्तरवर्षपर्यंतनरवीर्य्यअधिकतनजोय अस्सीवर्षकेअंतरेकायपराक्रमहोत ज्ञातानव्वेवर्षतकसभमोकृपासुजोत हाथपगोमेंवसरहैमूत्रत्यागकोहोश इकसौदसमोजानियेरामनामहृदकोश इकसौबीसप्रमांनहैआयुर्वलकानेम जोनरकायनिरोगरहितांकोईश्वरप्रेम

॥ अथतोलप्रमाणं. ॥

॥ दोहरा ॥ तोलप्रमाणसुअबकहोवैद्यकग्रंथविचार औषधादिसववस्तुकोतोलेइन्हअनुसार ॥ चौपै ॥ झलकझरोषेअंतरमांहि सूक्ष्मरेणुजोलषिएताहि सोऊरेणुकठेकरचार तासुनामलिख्यासुविचार षट्लीख्या जुइकत्तरकीजैं सर्षपएकसोजानपतीजैं षटसर्षपएकोजवजांन तींनजवोंकीरत्तीमांन दशरत्तीकोमासाक हिये चारमासकोशानभनैये दोईसाणकोलकहुएक दोयकोलइककर्षविवेक चारकर्षकोपलइकजांनो दोपलकीइकप्रसृतीमांनो सोलांप्रसृतिकुडवहोएएक चारकुडवइकप्रस्थविवेक चारप्रस्थइकआढकमांनो चारआढकइकद्रोणपछांनो दोइद्रोणइकसूर्पकहावै सप्तसूर्पइकषारीगावै दोयसूर्पकीगोणीएक ताकोकहैंभारसुविवेक चारोभारइकत्रकरीजैं तासुनामइकवाहकहीजैं ॥ दोहरा ॥ औरअचारजमतकहोंसर्वप्रमांणप्रकार सोसुनलीजोचतुरनरवरनोसमझविचार ॥ चौपै ॥ मासेचारइकत्रजुकीजैं तासुनामइकटंकभनीजैं दसटंकनकोइकपलजांनो चारोपलइककुडवपछांनो चारकुडवइकप्रस्थजुहोय चारप्रस्थइकआढिकसोय अष्टआढकइकद्रोणलखावै दोयद्रोणइकसूर्पकहावै इकषारीसतसूर्पलषीजै दोयसूर्पकीगोणिकहीजै भारनामइककहिएतास इहविधतोलप्रमांणप्रकाश ॥ दोहरा ॥ चारभारकोवाहइकजांनो पुरुषसुजांन ऐसेभाषसुनायहोनीकेतोलप्रमांन

॥ अथचिकित्साचारपादवर्णनं ॥

॥ दोहरा ॥ वैद्यजुव्याधीऔषधीफुनसेवकयहचार अवआगेवर्ननकरोंभिनभिनउरधार प्रथमवैद्यप्रमाणं ॥ चौपै ॥ श्रेष्टवैद्यऐसोसुनकहिये ज्ञाताशास्त्रतत्वकोलहिये अपनेकर्मनानिष्टाजास रहैपवित्रस्वच्छअ-

तिभास आपबनाईऔषधकरै लघुजिहहाथसभनलषपरै चिकित्सामोसूरबीरकहावै रोगपरीक्षकभलोसु-हावै सकलीवस्तुचिकित्साकेरी सदारखैअपनेढिगनेरी निश्चलबुद्धीधीरजधारै प्रियमीठेमुखवचनउचारै-सतवक्ताप्रसन्नमुखहोय उज्जलब्रस्त्रतनधारेसोय सदास्वधर्मविषेरतिलहिये प्रथमपादअसवैद्यसुकहिये ॥ अथद्वितीयपादरोगीप्रमाणं ॥ दोहरा ॥ साध्यधनीजुविचारयुतपुनसतवक्ताजोय सोरोगीशुभजानिएपाद-दूसरासोय ॥ अथतृतीयपादऔषधप्रमाणं ॥ चौपै ॥ औषधश्रेष्ठनवीनजुहोय श्रेष्ठदेशमोउपजीजोय अ-रुदिनश्रेष्ठमांहिजुउषारी वर्णगंधरसयुक्तनिहारी थोहडीभीप्राक्रमबहुकरै भक्षतमनगिलाननहिधरै दोषविकार-नाशकरदेय ऐसीऔषधलषकरलेय ॥ अथचतुर्थपादसेवकप्रमाणं॥ चौपै ॥ सेवकप्रीतयुक्तसुभहोय व्याधी-रक्षणबलवतसोय वैद्यवचनमोप्रीतजुकरै शांतिवांनदृढतामनधरै ॥ दोहरा ॥ पादचतुर्थोयकहह्योसेवकश्रेष्ठ-विचार तभीचिकित्सासिद्धहै इनपादनअनुसार इतिचारपादवर्णनं

॥ अथनिंदरोगीवर्णनं ॥

॥ चौपै ॥ चंडस्वभावहोयअविचारी अवरमहाजुकृतघ्नविकारी व्यग्रचित्तजोस्वेच्छावरती देषिवैद्यउपका-रहिहरती अवरजुवैरीराजाकोजोय अरुजिसकोमरनकीइछयाहोय अरुअपनोजोशत्रुकहावै इंद्रीशक्ती-हीनलषावै शंकायुतश्रद्धाकरहीन महाअपथीलषोपरबीन ॥ दोहा ॥ ऐसेरोगीवैद्यलषकरैचिकित्सा-नाहि करैतोदूषनप्राप्तहोयनहिसंसायामाहि ॥ चौपै ॥ वैद्यनिरोगाजिसकरैशरीर होयअरोग्यतनरहैनपीर सोरोगीजुभलीपरकार पूजावैद्यकीकरैसुवार उसशरीरकरजीवैजबलग पुण्यधर्मजोकरहैतवलग सो-सभवैद्याहिप्रापतजांनो यामोरत्तीझूठनमांनो पुनतुममुनहोअवरप्रकार चिकित्सानिष्फलनाहिसंसार कहीं-मैत्रीफलप्रापतहोय कहींफलप्राप्तधनादिकजोय कहींपुन्यफलप्रापतजांनो कहींप्राप्तफलयशपहिचांनो ॥ दोहा ॥ कहिंहोएअभ्यासफलइत्यादिकफलजांन नाहिचिकित्साविफलजगशास्त्रनकींनबषांन.

॥ अथनिंदवैद्यनिरूपणं ॥

॥ दोहा ॥ पांचवैद्ययहनिंदहैंजोधन्वंतरसमांन तिनकोविवरोंकहितहोंसुनलीजैधरकांन ॥ चौपै ॥ र-हैकुचालमलनतनधारै वचनअहितसहकोपउचारै अवरजुधूरतस्वभावहैजांको स्वाधीनकह्योनहिमानैका-को विनबोलहिआपेचलआवे पांचवैद्यनहिपूज्यकहावै

॥ अथान्यप्रकारसुगंधदाराविधवनंनं ॥

प्रथमअंबीरवनानेकीविध ॥ चौपै ॥ ब्रह्मीछडगुडीमंगवावे छलीरालादनसंगरलावै बालाइयांमलालमि-लदोई तोलाएकएकसमहोई वनफसाजढइकटंकरलाय छेमासेअसहअवरपाय करइकत्रफुनिदर्डकरा-वे गुलावअर्कताहीसंगपावे मलेएकसमगोलाहोई किंवएकफलआनोसोई किंवकाटअवलनिकसावे-

गोलावीचताहुकेपावे करेमुखबंदताहिछिनकोई देगमंगायवीचधरसोई सेवतीपत्रपुष्पमंगवावे किंवपास-चौगिदरखावे जाविधदेगअगन रधरिए मध्यमआंचतेजनहिकरिए जवहिंखूपकिंवपकजावे निकालता-हिसीतलकरवावे औषधवीचनिकालेजवहिं काचपात्रमेराखेतवहीं दिवसतीनलगधूपलगावे तौफुनियुक्ति-समांनरखावे चंदनसेररगडकरलीजे पाउोएकभरतामेदीजें अंवीरसुगंधदारहोजावे सभावीचाछिडकेसुखपा-वे फैलसुगंधअधकसुखदाई सभावीचअतिहींछवछाई ॥

॥ मोमकिसुगंधदारवत्तिवनानेकीविध ॥

फारसी शम ऽ मा ऽ तवर कहतेहैं चौपै चंदनतोलेछेइमंगावे रालश्वेतत्रैतोलेपावे छेमासेघारमेलिएसोइ छेतोलेतगरताहिसंगहोई तौफुनिअंवरअगुरमंगावे अह्लीनखताहिसंगपावे मोईआसाइलाऔषधलीजें तोलाएकएकसमकीजें चौवीतोलेमोममंगावे अंवरमोमजुदानिकसावे औरऔषधीपीसेकोई गुलावअर्कमें-मिसरीहोई वीचताहुकेऔषधपावे आठपहरतकसेडरखावे वत्तीवीचाभिगोवेकोई वारंवारसुकावेसोई गा-लमोमअंवरसंगपावे वतीऊपरसोईचढावे शेषसुगंधरहीजोहोई मेलेमोमसंगसभसोई वत्तीमोमबनायज-लावे अतिसुगंधअतिलज्जतआवे ॥

॥ सुगंधितधूणीवनानेकिविध ॥

॥ चौपै ॥ अगुरसोईदसटंकमंगावे कस्तूरीएकटंकसंगपावे अंवरएकटंकसंगपाय खंडगुलावअर्कमंगवाय सर्वतसोइचासकरलीजें औषधवीचदर्दकरदीजें सुकावेताहिराखिएसोई धूणीकरसुगंधअतिहोई ॥ धूणी-वलदेनवाली फारसीपवहैयः कहतेहै ॥ चौपै ॥ पुष्पगुलावसेवतील्यावे छिलकाकिंवनुरंगीपावें औषधचा-रवरावरहोई अगुर मेलसभकेसमसोई खंडगुलावअर्कमंगवावे करेचासफुनिऔषधपावे मलमलखूपगो-लिआंहोई सुकाय जुगतसंगराखोसोई धूणीकरसुगंधलखपावे दिमागमिंझमेंवलप्रघटावे ॥

॥ धूणीनिद्राकर्नवाली ॥

फारसी वहैया ख्वावकहतेहैं ॥ चौपै ॥ वल्लजुआंइनवीजमंगावे चवेकेफुनिपुष्पमिलावे पुष्पधतूराआ-नोसोई खसखसकालीतासंगहोई चंदनश्वेतसोईमंगवावे तीनोंतीनटांकसमपावे अगुरटांकदससंगरलाय-गुलावअर्कमेरगडमिलाय गोलीवांधमुकावेकोई धूनीकरनिद्राअतिहोई सभावीचजवधूमधुखावे धूमसंग-निद्रागशआवे. ॥

॥ सुगंधितसुंघानेवास्ते ॥

फारसी. लखलखः कहतेहैं ॥ चौपै ॥ कस्तूरीअंवर अगुरमंगावे कपूरलोहवांनसंगपावे इकइकटंकबरा-वरलीजें पंचटांकनीलोफरदीजें मरुआदूनःपुष्पजोहोई पांचोपांचटंकलेसोई वालाकालाश्वेतमंगावे द.

सदसटांकवरावरपावे दसतोलेअर्कगुलाबमिलाय वनफसाघृतत्रिगुणासंगपाय कस्तूरीअंबरअगुरकपूर इनविनऔरदर्दकरचूर गुलाववनफसाघृतसोलीजें दर्दअौषधीतामेदीजें निरंतरआठपहरजवहोई चाढअग-नघृतसाधेसोई वनफसाघृतजबहीरहजावे कस्तूरीआदतवऔषधपावे काचपात्रमेंराखेसोई मर्दनकरसुगंध-अतिहोई नासिकाग्रवाताहिसुंघावें दिमागहृदेअतिवलप्रघटावे कफकरनाडवंदजोहोई रोमद्वारखुलजावे-सोई. मूर्छानिद्राकरऔषधी फार्सी. गालीयकहतेहै. ॥ चौपै ॥ कालीवझजुआंइनल्यावे कालीखसखससंगरलावे इकइकटंकलीजिएदोई कपूरफींममिसरीसंगहोई लोहवांनसोसंगरलाय दोदोमासेचारोपाय अंवरडूडटांकमंगवावे कस्तूरीमासाएकरलावे करइकत्रसभऔषधलीजे वनफ-साघृतत्रिगुनाकरदीजें पीसमेलघृतराखोसोई मर्दननासिकाग्रजवहोई ताहीछिननिद्राप्रघटावे अति-सुंहनकरमूर्छाआवे. वत्तीअंवरकीवनानेकीविधफारसी. फतीलःकहतेहै ॥ चौपै ॥ केसरतोलाएकमंगावे दस तोलेमिसरीसंगपावे अगुरलोहवांनसंगदीजें दसदसतोलेदोनोलीजें चंदनश्वेतसोइसंगपाय तोलेवीसतोलकर ल्याय त्रैतोलेछडताहिमिलावे कंटूनाइकतोलापावे वल्लीतोलेदोइमंगाय लादनदसतोलेसंगपाय केसर-आदजुदाकरसोई औरपीसचूरनसभहोई तौंकुनिकेसरनीरमिलाय मलेखूपसमएकदिखाय मोइआ-साइलाऔषथहोई छेतोलेतवमेलोसोई करइकत्रवत्तीवनवावे राखधूपअतिहींसुकजावे वत्तिताहिधुखा-वेकोई अतिसुगंधसुखदायकहोई सभावीचजवधूपधुखावे अतिलज्जितसभकेमनभावे ॥ इतिश्रीचिकि-त्सासंग्रहे श्रीरणवीरप्रकासभाषायां हितोपदेसवर्ननपूर्वकसुगंधदार औषधवर्ननंनाम पंचमोऽधिकारः ॥ ५ ॥

॥ स्वस्तिश्रीगणेशायनमः ॥

॥ अथतिथिवारनक्षत्रकष्टावलीलिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ तिथीवारनक्षत्रहिंअवरजुयोगविचार इनकीभाषानारचीसंस्कृतकीनउचार प्रथमतःतिथिनि-र्णयमाह प्रतिपत्पंचदिवसंद्वितीयासप्तरात्रकम् तृतीयैकादशाहानिचतुर्थ्यांद्वादशान्हिकं पंचम्यांषोडशदिनंष-ष्ठ्यांपक्षत्रयंस्मृतम् सप्तम्यांषोडशाहानिचाष्टम्यांदिनविंशतिः नवम्यांतुदिनान्यष्टौदशम्यांद्वादशस्मृतःएकाद-श्यामर्धरात्रंद्वादश्यांतुमहद्भयम् त्रयोदश्यांसप्तदिनंचतुर्दश्यांमहद्भयम् अमावास्यांतुमरणंतिथीनांव्याधिसंभवः इतिवृद्धगार्ग्येणोक्तम्

॥ अथवोद्धायनोक्तम् ॥

ज्वराद्युत्पत्तौशांतयः प्रतिपदादिकष्टसंदेहोवादिनान्यष्टदशाः ० १ अग्निर्देवता अग्निस्तिमितशोचिषाया-सद्विश्वन्यत्रिणं अग्निर्नोवनतेरयिम् इतिपूजामंत्रः हैमीप्रतिमाघृतधूपोघृतदीपश्चयथासंभवनैवेद्यम् घृतंहोम-द्रव्यंशांतिर्भवतिःअत्रप्रथमांतंतत्रदेवतामंत्रजपः सहस्राधिकःपश्चात्पूजाहोमदानानिसंख्याचाष्टोत्तरसतादि-व्याधितारतम्येनकल्पासहस्रंमृत्युनिर्देशो इतिप्रतिपदातिथिपूजा

॥ अथद्वितीयातिथिपूजोपक्रम ॥

द्वितीयायांदिनानिषोडशब्रह्मादेवता ब्रह्मजज्ञानंप्रथमंपुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनआवः अबुध्न्याऽउपमाअस्यविष्ठःसतश्चयोनिमसतश्चविवः इतिपूजामंत्रः अगुरुधूपःघृतदीपःसर्वत्रशर्करायानैवेद्यम् तिलयवाज्यअग्निहोमद्रव्यंहैमीप्रतिमः इतिद्वितीयातिथिपूजापक्रमः

॥ अथतृतीयातिथिपूजोपक्रमः ॥

तृतीयायांदिनानिनवः पार्वतीदेवता गौरीर्मिमायसलिलानितक्षत्येकपदीद्विपदीचतुष्पदीअष्टापदीवभूवुषीसहस्राक्षरापरमेव्योमन् इतिजपपूजामंत्रः दूर्वाभिपूजाकुंकुमधूपंगुग्गुलंवाघृतदीपः द्राक्षाक्षीराज्यनैवेद्यंपायसत्रिमधुराक्तांदूर्वाश्चहोमद्रव्यं प्रतिमाहैमी इतितृतीयातिथिपूजोपक्रमः

॥ अथचतुर्थीतिथिपूजोपक्रमः ॥

चतुर्थ्यादिनानिषोडशः गणपतिदेवता गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहे प्रियाणान्त्वाप्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहे वसोमम आहमजानिगर्भधमात्वमजासिगर्भधम् इतिजपपूजाहोममंत्रःहैमीप्रतिमाकुंकुमरक्तचंदनगंधःकरवीरादीनिपुष्पाणिअगुरुधूपोलड्डुकोद्राक्षखंडानिनैवेद्यम् नारिकेलसकलानिद्राक्षासकलानिकदलीफलानिचहोमद्रव्यम् इतिचतुर्थिपूजाक्रमः

॥ अथपंचमीतिथिपूजोपक्रमः ॥

पंचम्यांदिनान्येकविंशतिः नागोदेवता नमोस्तुसर्पेभ्योयेकेचपृथिवीमनु येऽअन्तरिक्षेयेदिवितेभ्यःसर्पेभ्योनमः इतिजपपूजाहोममंत्रःहैमीप्रतमाचंदनगंधः सुरभिपुष्पाणिघृतधूपः पयोनैवेद्यंतिलयवाज्यपायसशर्करामधुमिश्रि तयथायोग्यंहोमद्रव्यम् इतिपंचमीतिथिपूजोपक्रमः

॥ अथषष्ठीतिथिपूजोपक्रमः ॥

षष्ठ्यांदिनानिद्वादशः स्कंदोदेवता द्रप्सश्चस्कंदपृथिवीमनुद्यामिमश्चयोनिमनुयश्चपूर्वःसमानयोनिमनुसञ्चरन्तन्द्रप्संजुहोम्यनुसप्तहोत्रः इतिजपपूजाहोममंत्राः हैमीप्रतिमापीतंचंदनंरक्तंवागंधः रक्तानिपुष्पाणिजातिपुष्पाणिवातिलयवाज्यहोमद्रव्यम् इतिषष्ठीतिथिपूजोपक्रमः

॥ अथसप्तमीतिथिपूजोपक्रमः ॥

सप्तम्यांदिनान्यष्टौसूर्योदेवता उदुत्यञ्जातवेदसंदेवंवहन्तिकेतवःदृशेविश्वायसूर्य्यम् इतिजपपूजाहोममंत्रः हैमिवाताम्रजाप्रतिमाकुंकुमगंधःकरवीरादीनीपुष्पाणिगुग्गुलुधूपः शर्करसंयुतं पायसनानाफलानिचनैवेद्यं अर्कसमिधः पायसंहोमद्रव्यम् इतिसप्तमीतिथिपूजोपक्रमः

अथअष्टमीतिथिपूजोपक्रमः

अष्टम्यांदिनानित्रयोदशः ईश्वरोदेवता:तमीशानंजगतस्तस्थुषस्पतिन्धियंजिन्वमसेहूमहेवयम् पूषाणोयथावेदसामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये इतिजपपूजाहोममंत्रः राजतीप्रतिमाकर्पूरमिश्रिनचंदनगंधः बिल्वदलानि अर्कपुष्पाणिचनीलोत्पलानिपुष्पाणिचवाजटामांशीधूप:पायसनानाभक्ष्याश्चनैवेद्यं मधुराक्तास्तिलाहोमद्रव्यम् रोगशांतिर्भवति इतिअष्टमीतिथिपूजोपक्रमः

॥ अथनवमीतिथिपूजोपक्रमः ॥

नवम्यांदिनान्यष्टादशःभगवतीदुर्गादेवता जातवेदसेसुनवामसोममरातीयतोनिदहातिवेदःसनःपर्षदतिदुर्गाणिविश्वानावेवसिंधुदुरितात्यग्निः इतिजपपूजाहोममंत्रः हैमीप्रतिमारक्तचंदनगंधः कुंकुमादिकवाजपाकुसुमादिकंवापुष्पंगुग्गुलुधूपः घृतपक्वंत्रिमधुराक्तंनैवेद्यंपायसंहोमद्रव्यम् देव्यैदधिभक्तपात्रदानंतदुक्तंवा इतिनवमीतिथिपूजोपक्रमः.

॥ अथदशमीतिथिपूजोपक्रमः ॥

दशम्यांदिनानिपंचविंशति यमोदेवता यमायत्वाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा स्वाहाघर्म्मायस्वाहाघर्म्मःपित्रे- इतिजपपूजाहोममंत्र हैमीलौहीवाप्रतिमा चंदनमृगमदसुगंधः मधुसर्जरससर्षपधूपःतिलतैलधूपंवा बिल्वपत्राणिकृष्णातिलाश्चपूजाद्रव्यंकृसरान्नंनैवेद्यं घृतमधुतिलमुद्गहोमद्रव्यम् इतिदशमीतिथिपूजोपक्रमः.

॥ अथएकादशीतिथिपूजोपक्रमः ॥

एकदश्यांदिनानिसप्तविश्वेदेवादेवता विश्वेनोदेवाऽअवसागमंतुविश्वमस्तुद्राविणंवाजोऽअस्मै इतिजपपूजाहोममंत्रः हैमीप्रतिमाश्वेतचंदनगंधः कृष्णागुरुधूपः घृतदीपः तुलसीपत्राणिपूजायांयवमोदकंनैवेद्यंतिलयवमध्वाज्यंहोमद्रव्यंम् रोगशांतिर्भवति इतिएकादशीतिथिपूजोपक्रमः.

॥ अथद्वादशीतिथिपूजोपक्रमः ॥

द्वादश्यांदिनानिदशः विष्णोर्देवतावारुद्रोदेवता विष्णोरराटमसि एवंमंत्र वा यातेरुद्रशिवातनूरघोरापापकाशिनी तयानस्तन्वाशन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि इतिजपपूजाहोममंत्रः हैमीप्रतिमाचंदनश्रीखंडंअगुरुधूपोघृतदीपःपायसंनैवेद्यंचंपकपुष्पंकमलंवा तिलयवाज्यंव्रीहीमधूनीहोमद्रव्यम् रोगशांतिर्भवति इतिद्वादशीतिथिपूजोपक्रमः

॥ अथत्रयोदशीतिथिपूजोपक्रमः ॥

त्रयोदश्यांदिनान्यष्टौ कामोदेवता आप्यायस्वसमेतुतेविश्वतःसोमवृष्णम् भवावाजस्यसंगथे इतिजपपूजाहोममंत्रः हैमीवाराजतीप्रतिमा पूजादौश्वेतचंदनगंधःचंदनधूपः घृतदीपः दधिशर्करानैवेद्यंतिलयवमध्वाक्ताहोमद्रव्यं रोगशांतिर्भवति इतित्रयोशीतिथिपूजोपक्रमः.

॥ अथचतुर्दशीतिथिपूजोपक्रमः ॥

चतुर्दश्यांदिनानित्रिअष्टादशः सर्वादेवता इमारुद्रायतवसेकपर्दिनेक्षयद्वीरायप्रभरामहेमती यथाशमसद्द्विपदेचतुष्पदेविश्वम्पुष्टङ्ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरं इतिजपपूजाहोममंत्रः हैमीप्रतिमाकुंकुमादिगंधःनानासुगंधिपुष्पाणि कृष्णागुरधूपःपूपिकादिनैवेद्यंशर्कराघृतपायसंहोमद्रव्यं रोगशांतिर्भवति इतिचतुर्दशीतिथिपूजोपक्रमः

॥ अथपूर्णिमायांतिथिपूजोपक्रमः ॥

॥ पूर्णिमायांदिनानिषोडशः चंद्रोदेवता आप्यायस्वसमेतुतेविश्वतःसोमवृष्ण्यं भवावाजस्यसङ्गथे इतिजपपूजाहोममंत्रः मदर्कपूजार्थैराजतीप्रतिमा पूजादौ श्वेतचंदनगंधः चंदनधूपः घृतदीपः दधिशर्करा नैवेद्यं तिलयवमध्वाक्ताहोमद्रव्यं रोगशांतिर्भवति इतिपूर्णिमायांतिथिपूजोपक्रमः

॥ अथअमावास्यांतिथिपूजोपक्रमः ॥

॥ अमावास्यादिनान्यष्टादशापितरोदेवता ॥ अंगिरसोनःपितरोनवग्वाऽअथर्वाणोभृगवः सोम्यासः तेषांवयꣳसमितौयज्ञियानामपिभद्रेसौमनसेस्याम ॥ इतिजपपूजाहोममंत्र ॥ हैमीप्रतिमाश्वेतपुष्पादिनापूजा दध्योदनंनैवेद्यंतिलयवमध्वाज्यंहोमद्रव्यं रोगशांतिर्भवतिइ इतिअमावास्यांतिथिपूजोपक्रमः ॥ इतितिथिकष्टावलीनिर्णयसमाप्तं.

॥ अथवारकष्टावलीनिर्णयालिख्यते ॥

॥ वृद्धगार्ग्येणोक्तं आदित्येचाष्टरात्रंस्याचंद्रेपंचदिनानिच भौमेद्वादशरात्रंतुबुधेसप्तदशैवहि जीवेचैका. दशोह्यानिभार्गवेदिनसप्तकं शनैश्वरेत्रयोविंशत्यहव्याधिज्वरोभवेत् इतिवारविचारः

॥ अथअन्यप्रकारवारविचारवौद्धायनोक्तं ॥

आदित्यवारस्य रुद्रोदेवता हैमीराजतीवामूर्ती यातेरुद्रशिवातनूरघोरापापकाशिनी तयानस्तन्वाशन्त. मयागिरिशन्ताभिचाकशीहि इतिजपहोममंत्र चंदनगंधः अगुरधूपःघृतदीपःपायसंनैवेद्यंतिलहोमद्रव्यंरो. गशांतिभवति इतिआदित्यवारस्यपूजोपक्रमः

॥ अथसोमवारस्यपूजोपक्रमः ॥

सोमवारस्य पार्बतीदेवता गौरीमिमायसलिलानितक्षत्येकपदीद्विपदीचतुष्पदीअष्टापदीनवपदीवभूवुषी सहश्राक्षरापरमेव्योमन् इतिजपपूजाहोममंत्रः राजतीमूर्तिःचंदनंवाकुंकुमगंधः अगुरधूपः सुगंधीपुष्पंघृतंदीपःनानाभक्ष्यालिनैवेद्यंतिलजवहोमद्रव्यंदेवभक्तसंतर्पणम् रोगशांतिर्भवति इतिसोमवारस्यपूजोपक्रमः

॥ अथभौमवारस्यपूजोपक्रमः ॥

भौमवारस्यस्कंदोदेवता यदक्रन्दःप्रथमंजायमानऽउद्यंत्समुद्रादुतवापुरीषात् श्येनस्यपक्षाहरिणस्यबाहुउपस्तुत्यंमहिजातंतेअर्वन् इतिजपपूजाहोममंत्रः हैमीप्रतिमापीतचंदनंरक्तंवागंधः रक्ताणिपुष्पाणिजातिपुष्पाणिवातिलयवाज्यंहोमद्रव्यंरोगशांतिर्भवति इतिभौमवारस्यपूजोपक्रमः

॥ अथबुधवारस्यपूजोपक्रमः ॥

बुधवारस्य विष्णोर्देवता इदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदंसमूढमस्यपांसुरेस्वाहा इतिजपपूजाहोममंत्रः हैमीमूर्तिःपीतपुष्पाणिकमलानिचअगुरधूपः घृतदीपः यवलडुकनैवेद्यंतिलयवाज्यंहोमद्रव्यं रोगशांतिर्भवति इतिबुधवारस्यपूजोपक्रमः

॥अथगुरुवारस्यपूजोपक्रमः ॥

गुरुवारस्य ब्रह्मादेवता ब्रह्मजज्ञानंप्रथमंपुरस्ताद्विसीमतःसुरुचोवेनआवः सबुध्न्याऽउपमाअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविवःइतिजपपूजाहोममंत्रः हैमीप्रतिमाकुंकुमगंधः सर्षपपुष्पंगुग्गुलुधूपः शर्कराज्यंनैवेद्यंतिलयवधान्याज्यंहोमद्रव्यं रोगशांतिर्भवति इतिगुरुवारस्यपूजोपक्रमः

॥ अथशुक्रवारस्यपूजोपक्रमः ॥

शुक्रवारस्य इंद्रोदेवता ॥ त्रातारमिंद्रमवितारमिंद्रंहवेहवेसुहवंशूरमिंद्रम् ह्वयामिशक्रंपुरुतमिंद्रंस्वस्तिनोमघवाधात्विंद्रःइतिजपपूजाहोममंत्रः ॥ राजतीप्रतीमाचंदनगंधःचंपकपुष्पंअगुरधूपःघृतदीपःघृतपक्वंनैवेद्यंतिलयवाज्यंमधुनिहोमद्रव्यम् रोगशांतिर्भवति इतिशुक्रवारस्यपूजोपक्रमः ॥

॥ अथशनिवारस्यपूजोपक्रमः ॥

शनिवारस्य यमोदेवता ॥ यमेनदत्तंत्रितएनमायुनगेन्द्रऽएणम्प्रथमोऽअद्ध्यतिष्ठत् गन्धर्वोऽअस्यरशनामगृभ्णात्सूरादश्वंवसोनिरतष्ट इतिजपपूजाहोममंत्रः ॥ हैमीलौहीवामूर्तिःताम्रजाइतिकेचित् चंदनगंधःकृष्णपुष्पंमधुधूपःतिलतैलदीपःमधुमत्साश्चनैवेद्यंतिलमधुचहोमद्रव्यम् रोगशांतिर्भवति इतिशनिवारस्यपूजोपक्रमः ॥ इतिवारविचारनिर्णयपूजोपक्रमःसमाप्तम् ॥

॥ अथनक्षत्रणांनिर्णयशांतयःनिरूप्यंते ॥

बृद्धगार्ग्यमतेन ज्वरस्त्वजातःषड्रात्रमश्विनीषुनिवर्तते भरणीषुचपंचाहात्सप्ताहात्कृत्तिकासुच त्रिसप्त-
रात्रादथवारोहिण्यामष्टरात्रतःएकादशाहाद्दिवसांमृगेषुनवरात्रतःपंचाहात्स्वास्थ्यमार्द्रायांत्रिपक्षंसंशयोथवा पु-
नर्वसौप्रवृत्तस्तुज्वरोपेतित्रयोदशात् दिवसादेकविंशाद्वाअहात्सप्ताहतोपिवातिष्येश्लेषासुमरणंचिरेणापिमघार
सुच अवश्यंस्वास्थ्यमाप्नोतिद्वादशाहांमृतोनचेत् फाल्गुण्योरुभयोःस्वास्थ्यंज्वरःशाम्येदशाहतः हस्तेचसप्त-
मेशांतिश्चित्रायामष्टमाहतः पुनश्चित्रागमेस्वातौदशाहादथवामृतिःपक्षेस्वास्थ्यंविशाखायांद्वाविंशेहनिनिर्दिशे
त्नवमेन्हिभवेच्छांतिर्मैत्रेमृत्युरतःपरम् ज्येष्ठायांपंचमेमृत्युर्नचेत्स्याद्वादशेसुखंस्वास्थ्यंदशाहात्सूलेतुत्रिसप्ताहा
तथाभवेत् पूर्वाषाढोत्तरायांचस्वास्थ्यंस्यान्निश्चयेनतुअष्टभिःश्रवणंस्वास्थ्यंनवभिर्वाभवेच्छुभं आज्येष्ठांतंधनि-
ष्ठायांदशाहाद्दारुणीभवेत् पंचाहाद्वादशाहाद्वास्वास्थ्यंभाद्रपदासुच उत्तरासुत्रिसप्ताहात्प्रशाम्येद्रेवतीसुच-
चतुरात्रेष्टरात्रेवाक्षेमामिच्छंतिशाश्वतं एवंव्याधिविचारस्तुकार्योनित्यंमनीषिभिः अदानजन्मानिधनप्रत्यहराविप-
त्करी नक्षत्रैर्व्याधिरूपत्तौक्लेशोत्पत्तिनसंशयःषद्वैषज्यंनशक्नोतिसाक्षाद्धन्वंतरिःस्वयं अथरोगमुक्तस्नानम् ह-
स्तेंद्रयोश्चरेवत्यांयाम्येचंद्रपुनर्वसौस्नातोरोगविमुक्तस्तुपुनर्व्याधिंनपश्यति इंद्रोवारेभार्गवेचध्रुवेषुसार्प्पादित्ये-
स्वातियुक्तेषुचेषु पित्र्येचांत्येनैवकुर्यात्कदाचिन्नैवस्नानंरोगमुक्तस्यजंतोःलग्नेचरेसौम्यकुजार्कवोरीरक्तेतिथौचं-
द्रबलेविहोने केंद्रत्रिकोणारिगतैश्चपापैस्नानंहितंरोगाविमुक्तजंतोः इतिनक्षत्रेषुकष्टानिर्णयः ॥

॥ अथनक्षत्राणांबलिपूजा शांतिविधाननिर्णयः ॥

बृद्धवसिष्टोक्तम् रोगशांतिंप्रवक्ष्यामिरोगार्तानांशरीरिणांबलिपूजांगहोमंचजपब्राह्मणभोजनैः यस्मिन्नृ
क्षेनृणांरोगोसंजायतेतन्नक्षत्रपूजाकर्तव्यातदीश्वरतुष्टये कर्षेनतदर्द्धेनतदर्द्धार्द्धेनवापुनःधिष्णेशप्रतिमाकर्तव्याय-
थावित्तानुसारतः ईशान्यामथवाप्राच्यांउदीच्यांदीशिसल्लिखेत् तंडुलोपर्य्यष्टदलंपद्मंगोमयमंडलेपंचामृतैसले
पैःनत्तन्मंत्रैःपृथक्पृथक्स्थाप्यकल्पोक्तमंत्रेणप्रातिमास्थापयेत्पुनःकार्णिकायांतुसंस्थाप्यध्यात्वादेवंसमर्चयेत् त-
दवर्णवर्णगंधाद्यैःरक्तधूपोपहारकैः असूक्तवर्णकुंभंचपंचत्वक्पल्लवैर्युतंशुक्लवस्त्रंस्वर्णरत्नसर्वौषधीसमन्वितं देव
स्यपूर्वतःस्थाप्यजलमंत्रैःसमर्चयेत् प्रतीच्यांस्थंडिलेवान्हिविधिवत्स्थापयेत्ततः मासांतेजुहुयादुक्तद्रव्येणाष्टसह-
स्रकंतिलहोमव्याहृतिभिरष्टोत्तरसहस्रकं पूर्णाहुतिभिजुहुयात्सम्यक्संकल्पपूर्वकं नीराजनंसशुद्धात्मापूजा-
स्थानंसमागतः देवंहुतासनंभक्त्याप्रणम्यप्रार्थयेदिति अमृतोभवधिष्णेशयतस्त्वंकलशात्मकः रोगादस्माच्च-
मांरक्षतववश्याश्चधिष्णपःइतिप्रार्थततोदद्यात्प्रतिमांवस्त्रसंयुतां दक्षिण्यासहितंभक्त्याआचार्यायकुटुंबिने ब्रा-
ह्मणाययथाशक्त्याब्राह्मणान्भोजयेत्ततः कृत्वानक्षत्रपूजांतेतिथिवासरयोरपि सर्वान्कामानवाप्नोतिरोगीरोगा
त्प्रमुच्यते ॥

॥ अथअश्विनीनक्षत्रपूजोपक्रमः ॥

अश्विन्यांचभवेत्पीडाअर्धगात्रनिपीडनं वातज्वरभवेत्कष्टमतिसारस्तथैवच निद्रानाशोमतिभ्रंशोपीडाभव-
तिदारुणानंद रुद्र घृति श्चैवपादेवेदशराणिच अश्विनौतत्रदेवत्यामश्विनीतेचमंत्रकं जप्यंपंचसहश्रंचहोमेखंड

जवाज्यकं हिरण्यंघृतकुंभंचब्राह्मणान्भोजयेत्तथा श्वेतवर्णौसुधापूर्णौकुंभौभोजयेत्पृथक् चंदनोत्पलपुष्पाढ्य गुग्गुलीनुगुडप्रियौ क्षीरलड्डुकभोक्तारौसमिधःक्षीरवृक्षजः गुडोदनवलीदद्यादीपैसार्द्धंनिशामुखे सौवर्णमूर्ति-अश्विनातेजसाचक्षुःप्राणेनसरस्वतीवीर्य्यम् वाचेन्द्रोवलेनेंद्रायदधुरिन्द्रियम् इतिजपपूजाहोममंत्रः॥अन्य-मते अश्विन्याछायाअंशात्त्राशात्भूतकाद्यदोषःशिरःकर्णनासिकातालुव्यथा कंडुभवति वातपित्तकोपः आगमेदशाहंमध्येनवमुक्तेपंचदशानिशायांवलिदानं हस्तेनस्पृशतिपुनःआदित्यमहेशंचयजेत् चतुष्पथेपूजयेत् होमंश्चकार्यः पुनर्वसुरोहिणीहस्तस्वातिश्रवणाभिषजिपादेष्वहानि ९ १३ १२ ३ आमान्नदानम् इतिअश्व नीनक्षत्रपूजोपक्रमः

॥ अथभरणीनक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः ॥

भरण्यांतुर्यपादेचक्षयरोगाःप्रजायते ज्वरंतीव्रमङ्गाघोरंनानाव्याधिसमुद्भवं शून्य ० मशीति ८० खवेदा ४० रुद्राः११ पादक्रमेणतु नमंत्रंनौषधंतत्रनदानंनजपादिकं दशरात्रंयदाजीवेत्कृत्वाजाप्यंयथोदितम् जप्यायुतं-प्रकुर्वीतगायत्र्याश्चायुतंतथा छायादानंप्रकुर्वीतखंडाज्यघृतपूरकम् अजामहिषदानंचतुरंगंतत्रदापयेत् द्विजे-भ्योभोजनंदद्यात्क्षेत्रपालंचपूजयेत् हैमिवालौहीप्रतिमा यमोदेवता यमायत्वामखायत्वासूर्य्यस्यत्वातपसे-देवस्त्वासवितामद्धानक्तपृथिव्याःसंस्पृशस्पाही अर्चिरसिशोचिरसितपोसि इतिजपपूजाहोममंत्रःवात्र्यंव-कमंत्रस्यप्रोक्ताछंदार्षिदेवताअगुरुगंधःकरवीरपुष्पाणिगुग्गुलधूपः अष्टांदीपांश्चसर्वेषांनैवेद्यंगुडोदनंपाशदंडध-रोरक्तरूपाज्यमध्वाक्षतैर्हविः महिषीनायकारूढाकृशरान्नैर्वालिंहरेत् वक्ष्माणेनमंत्रेणवलिंसम्यक्प्रदापयेत्-अन्यमते भरण्यांभूतदोषः शिरोर्तिः सर्वांगपीडारोमहर्षश्चदंताः कटकटायंते चंद्रागमेसप्ताहं मध्येमृत्युः पिष्टस्यमेषं कृत्वापंचान्नैःसहचतुष्पथेभूतयागःकर्तव्यःकुमारिपूजनंगृहेकर्तव्यंश्मशानेवलींदत्वाअष्टौदीपान्-दद्यात्दक्षिणादानं गुरुयजनंकर्तव्यं शदेष्वहानि ५ ११ १४ १७ कृष्णदानम् इतिभरणीनक्षत्रनिदान-पूजोपक्रमः

॥ अथकृतिकानक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः ॥

कृतिकासुभवेत्पीडारक्तनेत्रश्चदृश्यते चक्षुपीडाभवेत्तस्यऊरूःशूलंतथैवच १ महत्कष्टंभवेत्तस्यज्वरंतीव्रंचदा-रुणम् ग्रहशांतिप्रकुर्वीतदानब्राह्मणभोजनैः २ दिनानितस्यसंख्यानिनवै ९ कादश ११ षोडश १६ अष्टविंशतिकंचैवदानंदत्वासुखीभवेत् ३ कृतिकाह्यग्नीदैवत्यातिलाज्यंजुहुयात्ततः कृतिकोत्थंतुदोषंयत्तत्क्ष-णान्नश्यतिध्रुवं ॥ अग्निर्देवता ॥ अयमग्निःसहस्रिणोवाजस्यशतिनस्पति मूर्द्धाकवीरयीणाम् इतिजपपूजा-होममंत्रः ॥ हैमीप्रतिमाचंदनगंधायूथिकापुष्पंघृतदीपः गुग्गुलुधूपः तिलमाषान्नंवरमन्नेनसंयुतंनैवेद्यंगुडोद-नंहविस्तत्रपायसेनवालिंहरेत् इतिकृतिकानक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः ॥

॥ अथरोहिनीनक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः ॥

रोहिण्यांहिक्किकाशूलंज्वरपीडाचदारुणा प्रलापंचक्षुर्वदाहमाकुलंव्याकुलंतथा १ दिनानीचाष्ट ८ दशच १० अष्टादशच १८ त्रिंशकै ३० प्राजापत्यंचदैवत्यंब्रह्मयज्ञानमंत्रकं २ पंचशतंकृतंजप्यंतिलाज्ययवहोमत-

भोजयेत्पंचकौमारीपायसंशर्करातथा ३ कृष्णाधेनुःप्रदातव्यासप्तव्रीहिसुवर्णकं रोहिणीसंभवंकष्टंततत्क्षणादे वनश्यति ४ब्रह्मजज्ञानंप्रथमंपुरस्ताद्विसीमतःसुरुचोवेनआवःसबुध्न्याउपमाअस्यविष्ठाःसतश्चयोनिमसतश्चविवः इतिजपपूजाहोममंत्रःहैमीप्रतिमाकुंकुमगंधः सर्षपपुष्पंगुग्गुलुधूपःशर्कराज्यंनैवेद्यंतिलयवधान्याज्यंहोमद्रव्यंरोगशांतिर्भवति अन्यमते रोहिण्यांतीव्रज्वरोरक्तप्रकोपंविंदतेप्रलापंवदतिप्रपलायतेश्लेष्मपिच्छिलंदारुणंपूतिगंधित्वंजायतेचरणचतुष्टयेदिनानिप्रत्येकं ८ १६ ७ ० पिष्टमयंवृषंकृत्वाअन्नपूरितेपुटकेस्थाप्यपूजयित्वानिशिग्रासजलंदत्वाजनदृष्टिंबालिंहरेत् द्वितीयेदिनेविनायकंपूजयेत् रोगमुक्तस्नानं चित्रायामनुराधायांचपुनर्वसौच मतांतरे रोहिणीपादेषु ० २० १४ ३८ आमान्नदानं इतिरोहिणीनक्षत्रनिनदापूजोपक्रमः ॥

॥ अथमृगशिरानक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः ॥

मृगशीर्षेभवेदेवपीडाचार्द्धशरीरके अतितीव्रंमहाघोरंव्यथाभवतिदारुणा दिनानिषोडश१६त्रिंश३० द्विश२०तिश्चैकविंशतिः२१होमस्तस्याधिदैवत्यसोमोदेवेतिमंत्रकं सहस्रंतुभवेजप्यंहोमश्चदधिपायसं दधितंडुलदानंचसवत्सांगांतथैवच अष्टौविप्राःप्रपूज्यंतेकुलदेवंप्रपूजयेत् मृगशीर्षोत्थरोगश्चतत्क्षणादेवनश्यति सोमोधेनुꣳसोमोऽअर्घन्तमाशुꣳसोमोवीरंकर्म्मण्यन्ददातिसादन्यंविदथ्यꣳसभेयंपितृश्रवणंयोददाशदस्मै इतिजपपूजाहोममंत्रः राजतीप्रतिमाचंदनगंधाकुंकुमपुष्पाणीदशांगधूपंघृतदीपः पयसोदनंनैवेद्यंमंडुकापूपघृतक्षौद्रसमन्वितं शर्करादधिमिश्रेणशुक्लान्नेनबलिंहरेत् रोगशांतिर्भवति अन्यमते मृगे तीव्रदृष्टिप्रलापंवदातिहृदयंद्रवतेपृष्ठंभिद्यते सोदरहृदयार्त्तिःपीडातृषामहतीचरणचतुष्टयेप्रत्येकंदिनानि १२ १० ५ १८ पिष्टमयंमृगंकृत्वा पुटकेअन्नसुरातिलैः सहस्थापयित्वा धूपदीपैःसहजनदृष्टंबलिंहरेत् द्वितीयदिनेचतुष्पथेभूतमंडलंवास्तुपूजांचकुर्यात् रोगमुक्तिस्नानं हस्तेनुराधामूलार्द्राशतभिषक्सुमतांतरे मृगशिरसिमासपर्यंतंपीडाकुंदपुष्पदशांगधूपपायसेनपूजा सोमंसंपूज्यदधिपयसीजुहुयात् चरणचतुष्टये ३० १८ २२ १८ इतिमृगशिरानक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः

॥ अथआर्द्रानक्षत्रानिदानपूजोपक्रमः ॥

आर्द्रायांव्याधिरुत्पन्नोग्रहपीडासमाकुलं सर्वांगंपीडितंतस्यनिद्रानाशोमतिभ्रमः नमंत्रंनौषधंतत्रवर्जयेन्नवरात्रकं त्रिदोषश्चमहत्कष्टंम्रियतेनात्रसंशयः शून्य० मष्टादश १८ शून्यं० अंतेचैवचशून्यकं० रुद्रोपिदेवतातस्यनमस्तेरुद्रईरितः अयुतंचजपंकुर्यात्मधुनाज्यंचहोमयेत् वृषभश्चात्रदातव्योकृष्णवस्त्रंतथैवच होमांतेब्राह्मणेदद्यात्तस्यरोगस्यनाशने आर्द्रयोत्थंमहदुःखंतत्क्षणान्नश्यतिध्रुवं हैमीप्रतिमावाराजतिप्रतिमाचंदनगंधः सौरभंपुष्पंदशांगधूपंपायसोदनंमध्वाज्यहविष्यान्नंदध्योदनबलींहरेत् नमस्तेरुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवेनमः बाहुभ्यामुततेनमःइतिमंत्रः अन्यमते आर्द्रायांस्कंधौभिंदतिचक्षुःस्रावोगात्रंपण्डुवर्णंवेपथुःरात्रौजागर्तिदिवास्वपतिपार्षेष्वहानि. १५ ३० १५ १७ पैष्टौस्त्रीपुरुषौकृत्वा पुटकेनतिलक्षीरसंयुक्तेस्थापयित्वाएकवृक्षेबलिंदद्यात् षड्गदेदेवताःपूजयेत् पायसांनैर्लिंगपूजागोप्रदानंच मतांतरेचआर्द्रायांमृत्युर्धत्तूरपुष्पैर्धूपपायसोपहारैर्नमस्तेरुद्र-

मन्यवःइत्यनेनसंभुपूजनं मधुसर्पिः खंडंयुहुयात् पादेष्वहानि ११ ७ २७ १७ श्वेताश्वदानंवृषदानंवा. इतिश्रार्द्रानक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः

॥ अथपुनर्वसुनक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः ॥

पुनर्वसौतदापीडाकटिपीडाचजायते सप्त ७ चतुर्दशं १४ चैवादिश १० श्चैवैकविंशति २१ आदित्योदेवतातस्यादितिर्द्यौरितिमंत्रकं एकाशतंकृतंजाप्यंघृततंडुलहोमतः सुवर्णकमलंदद्यात्कुमारीः पंचभोजयेत् वस्त्रदानंकुमारीणांतत्क्षणाद्रोगनाशनं मतांतरे हैमीप्रतिमाहरिद्राकुंकुमगंधः पुष्पंसेवंतिकंअगरुधूपःघृताक्तंडुलहविपीतान्नेनवलिंहरेत् मंत्रः अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षभदितिर्म्मातासपितासपुत्रः विश्वेदेवाऽअदितिपंच जनाऽअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् इतिजपपूजाहोममंत्रः अन्यमते वक्त्रालालास्रवतेभृशंकंपतेगुरुतरेजंघायांपीडांविदतिअन्नस्यारुचिः पादेष्वहानि ॥ २५ ॥ २१ ॥ १८ ॥ २८ ॥ माषपिष्टेनस्त्रीरूपंपुरुषंकृत्वासंपूज्यसिद्धान्नैः सुरयामोदकैमत्स्यैरपूपैर्निशाकालेवलिंहरेत् शिवंपूजयेत् आदित्यवारेशांतिः कार्याचतुष्पथेवलिदानं पीतवस्त्रदानं रोगशांतिर्भवतीति इतिपुनर्वसुनक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः

॥ अथपुष्यनक्षत्रनिदानसंख्यापूजोपक्रमः ॥

पुष्येणव्याधितश्चैवज्वरपीडाचदारुणा शूलपीडांगआक्रांतोवुद्धिनाशस्तथैवच सप्त ७ सप्त ७ तथाविंश २० देकविंश २१ दिनानिच घृतंचपायसंहोमेपीतवस्त्रंहिरण्यकंब्राह्मणायदद्यात् यथाशक्त्याब्राह्मणान्भोजयेत् पंचगोधूमं तत्रदापयेत् अन्यमते हैमीप्रतिमाकुंकुमगंधावरिजपुष्पंनैवेद्यंघृतपायसंमंडकाघृतसंयुक्तमेवंचहाविर्भवेत् मंत्रः ब्राचस्पतयेयवस्वधृष्टोऽअंशुभ्यांगभस्तिपूतः देवोदेवेभ्यः पयस्वभ्यांगयेषाम्भागोसि ८ इतिजपपूजहोममंत्रः अन्यमते तिष्येभुजौहस्तौचवक्षश्चभिद्यंतेप्रलापोजिव्हांदंतांश्वखादातिजंघेपादौचशीतलौपादेष्वहानि २। २०। २१। ३१। पुट्केतिलान् अन्नमद्यमांसादिकंपद्मपत्रेकृत्वाश्मशानेवलिंहरेत्स्नानेहस्तेश्रवणेच मतांतरे पुष्येसप्ताहः मरुवकपुष्पखादिरधूपखण्डवर्तिकोपहारैवृहस्पतेपरिदीपंतिवृहस्पतिपूजापयसार्पिषजुहुयात् पादेष्वहानि ७। १०। २४। १९ घृतदानं रोगशांतिर्भवतिइतिपुष्यनक्षत्रनिदानपूजोपक्रपमः

॥ अथऽश्लेषानक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः ॥

अश्लेषायांचभवेत्पीडासर्वगात्राणिपीडयेत् अतिपीडामहाघोराउौषधंतत्रभिद्यते कुलमातृश्चयोगिन्योगोदानंचप्रयत्नतः छागदानंचदातव्यंपीडितैसर्वव्याधिभिः दिनानिशून्य ० शून्यं ० चएकविंश २१ तथांवरं ० सर्पोहिदेवतातस्यनमोस्तुसर्पेभ्यमंत्रकं अयुतंजप्यमंत्रैवशर्कराघृतहोमजादानंचमहिषीतत्रसवत्सांगांचनीलिकां मंत्रः नमोस्तुसर्प्येभ्योयेकेचपृथिवीमनु येऽअन्तरिक्षेयेदिवितेभ्यः सर्प्येभ्योनमः ९ इतिजपपूजाहोममंत्रः हैमीप्रतिमाकुंकुमागुरुगंधाअगस्तिपुष्पंवाकोडपुष्पंघृतगुग्गुलधूपः मध्वाक्षतैर्नैवेद्यंक्षी-

रसर्षिशाहाबिसाज्यमुग्ध्यान्नंदध्योदनवलिंहरेत् अन्यमते श्लेषायांमृत्युः स्वभागेनजीवति वातश्लेषत्मको-व्याधिः पीडावात्तिशूलंत्रिकस्थानंभज्यते प्रथमभागेमासत्रयंद्विभागेवामरणमवश्यं पिष्टमयंनागंकृत्वासप्तवक्त्रं-त्रिशीर्षकंअष्टपत्रेगणसाहितांशिवंपूजयेत् सप्तव्रीहियुतमन्नमद्यमांसयुक्तंचतुष्पथेवींलहरेत् जलमध्यनिवासिनी-राक्षसीपूजनं अनुराधामघाभरणीपुनर्वसुषुस्नानं मतांतरेच अश्लेषांमृत्युरगस्त्यपुष्पघृतगुडधूपोपहारैःसर्पां-संपूज्यवटपत्राणिजुहुयात् अष्टधातुदानं इत्यऽश्लेषानक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः

॥ अथमघानक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः ॥

मघायांचभवेत्पीडाअर्द्धगात्रेशिरव्यथातिथि १५ सप्ततथातत्रविंशतिश्च मनु ७ २० १४ क्रमात् पितरोदे-वतातस्यपितृभ्याः स्वधामंत्रकं सहस्रेकंकृतंजाप्पंतिलतंडुलहोमतः तिलमाषसुवस्त्राणिदानंदत्वासुखीभवेत्-मंत्रः पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः अक्षन्तपितरोमीमदन्तपितरोतीतृपन्तापितरः पितरःशुन्धद्धम् इतिजपपूजाहोममंत्रः हैमीप्रतिमाचंदनगंधः चंपकपुष्पंघृतगुग्गुलः धूपंघृतमिष्टान्ननैवेद्यंतिलाज्यंहोमद्रव्यंतिलान्नंचमुद्गान्नंपितृत-प्तयेवलिंहरेत् अन्यमते मघयां हृदयंभिद्यतेपित्तकोपोव्याधिः शीर्षदाहःहृच्छूलंडाकिनीदोषः भुक्ताभुक्तेनजा नीयाश्छांतिर्मध्येनजायते पिष्टमयंसिंहंकृत्वाअतिविकरालंसुराभिर्मोदकैः पक्वान्नैश्चसहपुटकेस्थापयित्वाशां-ति कार्यापद्दवस्त्रंद्विजातयेदद्यात् रोगस्नानंस्वातौआर्द्रायांशतभिषजिमृगशिरसिरेवत्यां इतिमघानक्षत्रनिदा-नपूजोपक्रमः

॥ अथपूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः ॥

पूर्वाफाल्गुन्यांभवेत्पीडाअर्द्धगात्रेशिरस्यथ पीड्यंतेसर्वगात्राणिज्वरपीडामहद्भयं शून्यं पंचदश श्चैवशून्यं-त्रिंश द्दिनानिच भगोपिदेवतातस्यभगप्राणेतिमंत्रकं अयुतेजप्पमंत्रोपिप्रयंगुजुहुयात्तिलैः पीतधेनुप्रदानंच-माषमेकंसुवर्णकं मंत्रः भगप्रणेतर्भगसत्यराधोभगेमान्धियमुदवाददन्नः भगप्रनोजनयगोभिरश्वैर्भगप्रनृमा-भिर्नृवंतःस्याम इतिजपपूजाहोममंत्रः अन्यमते अर्द्धमासेनमुंचतिसिंहासनस्थिता हैमीप्रतिमाचंदनगंधो-मालतीपुष्पंविल्वधूपोघृतोदनंनैवेद्यंशर्करापूपलड्डुकाभिश्चसंयुतं घृतोदनंहोमद्रव्यंपायसेनवलिंहरेत् अन्यम-ते पूर्वाफाल्गुण्यां हृदयंमेढ्रंभिद्यतेनेत्रलोहितेदेवदोषोडाकिनीदोषश्चवस्तिशूलंकुकुटांडनिभेनेत्रेतीब्रहिक्कादा-हःपंचाहेद्वादशाहेविंशोद्दिमासकेदाधिभक्तेरष्टांगंमातृयागंकुर्यात् मतांतरेच पूर्वायांमृत्युःकरवीरपुष्पविल्वधूप-कृसरोपहारैर्भगएवेतिभगंसंपूज्यमाषयुक्तांयवांजुहुयात्पादेष्वहानि ॥ १ ॥ २७ ॥ २८ ॥ १७ ॥ सुवर्णदानं-इतिपूर्वाफाल्गुणीनक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः

॥ अथउत्तराफाल्गुनीनिदानपूजोपक्रमः ॥

उत्तराफाल्गुनीपीडाकुक्षिशूलंप्रजायते शरीरंत्वाधितंचैवशिरोरोगंतथानृणां सप्त ७ चैवदशा १० त्रैव-सप्त ७ षाष्टि ६० तथापुनःअर्यमादेवतातस्यअर्यम्णे इतिमंतत्रःसहस्रंचकृतंजप्पंतिलाज्यंहोमयेत्ततःहिर-

ण्यंरजतंदद्यादन्नदानंतथैवचगोदानंवस्त्रदानंचततःशांतिंकरोत्ययं मंत्रः दैव्यावध्वर्य्यू ऽआगतꣳरथेनसूर्य्यत्वचा मद्ध्वायज्ञꣳ समंजाथेतंप्रत्नथा यंवेन श्चित्रंदेवानामइतिज पपूजाहोममंत्रः पद्मस्थितहैमीप्रतिमाकरपूरकुंकुमगंधारक्तोत्पलपुष्पंघृतगुग्गुलधूपःपायसंनैवेद्यंघृतान्नंहोमद्रव्यंशाल्यन्नेनवलिंहरेत् अन्यमते उत्तराफाल्गुण्यां दारुणोज्वरोगृहदेवालयात् भयंलोहिताकृष्णाजिव्हाहृदयंभज्यतेहृच्छूलंपिष्टेनस्त्रीरूपंवासिंहरूपंकृत्वा अन्नैः पुटकंपूरयित्वा निशाकालेवलिंदद्यात् स्कंदंयक्षंकापिलांचयजेत् जलस्थानेदेवींमहेश्वरींचयजेत् रोगमुक्तस्नानं श्रवणरोहिणीपुष्यपुनर्वसुषुग्रहशांतिंकुर्यात् मतांतरेच उत्तरायांदशरात्रंतत्ररक्तोत्पलपुष्पंगुग्गुलधूपंघृतक्षीरोपहारैरर्यमाणंसंपूज्यशकुंप्रियंगुंजुहुयात् पादेष्वहानि ॥ ७ ॥ १५ ॥ ११ ॥ २८ ॥ गोदानंकार्यं इतिउत्तराफाल्गुनीनक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः

॥ अथहस्तनक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः ॥

हस्तेवेदनंसर्वांगेउरशूलंचदारुणं दह्यंतेसर्वगात्राणिप्रभिद्यंतेह्यनारतं ॥ १ ॥ पंचदश ॥ १५ ॥ तथासप्त ७ तिथि १५ वाणा ५ दिनानिच सवितातस्यदैवत्याविभ्राड्इतिमंत्रतः शतानिपंचत.जप्यं ५०० दधिनार्पिश्चहोमयेत् हिरण्यंवस्त्रदानंचधेनुंदद्यात्पयस्विनीं अन्यमते मंत्रः विभ्राड्वृहत्पि.वतुसोम्यम्मद्ध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम् वातजूतोयोऽअभिरक्षतित्मनाप्रजाःपुपोषपुरुधाविराजति इतिहोमजपपूजामंत्रः हैमीप्रतिमारक्तगंधकुंकुमंचराजेवसंज्ञकंपुष्पंगुग्गुलधूपः घृतपायसंनैवेद्यं मधुपुष्पंतिला.ज्यान्नंदूर्वाभिःसहितंहोमद्रव्यं गुडशर्करामध्वाज्यापिष्टान्नेनवलिंहरेत् अन्यमते हस्तेदारुणोव्याधिः अतिप्रलापःअतीसारग्रंथिःहृदयंभिद्यते नेत्रवंधःचंद्रागमेसप्ताहं क्षेत्रेशदोषः यवपिष्टेनस्त्रीकार्यापूतनारूपापुटकेधूपंदद्याद्वलिंहरेत् चतुष्पथे गत्वाविनायकस्कंदौपूजयेत् रोगमुक्तस्नानं धनिष्ठाश्विनीचित्रासुज्येष्ठायांचस्नातागोक्षीरतिलसर्पिषिजुहुयात् जलपूर्णंघटंसप्तान्नेनपूरयेत्चतुष्पथेवृक्षेवावलिंदद्यात् त्रिभिर्दिनैः मतांतरेचहस्तेपक्षपर्यंततत्ररक्तकर्वीरपुष्पमल्लिकाधूपपुष्पोपहारैः उदुत्यमितिसवितारंसंपूज्यदधिजुहुयात् पादेष्वहानि ॥ १५ ॥ १६ ॥ १४ ॥ २६ ॥ इतिहस्तनक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः ॥

अथचित्रानक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः

चित्रायांव्याधिनाशोपिदारुणंकष्टमेवच रुद्रो ११ नंदो ९ वसु ८ श्चवषोड १६ शैवादिना.निचत्वष्टापत्यधिदैवत्यंत्वष्टांतुरयितिमंत्रकंजाप्यंपंचशतं ॥ ५०० ॥ कुर्यात्तिलतंडुलहोमतः विचित्रंवृषभंदद्याद्गुडान्नंतुतिलानपि अन्यमतेमंत्रःत्वष्टातुरीयोऽ अद्भुतऽ इंद्राग्नीपुष्टिवर्धना द्विपदाच्छंदऽ इंद्रियमुक्षागौर्नवयोदधुः इतिजपपूजाहोममंत्रःहैमीप्रतिमासकुंकुमागुरुगंधः घृतधूपः सुगंधपुष्पंगुग्गुलधूपः मोदकान्नाज्यंनैवेद्यंचित्रान्नंसघृतंहोमद्रव्यं तदन्नेनवलिंहरेत् अन्यमते चित्रायांचंद्रागमेदारुणोव्याधिःपार्श्वस्थिभिद्यतेत्रयोमासाचेःष्टतेवमतेश्रोत्रेग्रीवायांचवाधाःऊर्ध्वदृष्टिऽडाकिनीदोषःपिशाचस्यरूपंकृत्वागंधपुष्पैरर्चयेत्पुटकंपूपकान्नैपूरयेत् मद्यैर्मांसैश्चलोपिकैःकुवेरंपूजयेत् मतांतरेच चित्रायामेकादशाहं तत्रजपापुष्पपद्मकधूपमोदकोपहारैस्त्वष्टारंपूजयेत् चित्रोदनंजुहुयात्पादेष्वहानि ॥ ११ २६ १८ १६ आमान्नदानं इतिचित्रानक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः

॥ अथस्वातीनक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः ॥

स्वात्यामुत्पद्यतेव्याधिर्बहुधारोगसंभवःग्रहहोमंतथाजाप्यंपीवोऽअन्नारमंत्रकं खंच ० सप्तदश १७ त्रिंश ३० दपरंचदिनानिवै जाप्यंपंचसहस्रंच ५००० तिलाज्ययवहोमतः पीवोअन्नेतिमंत्रेणवायुस्तत्राधि. देवता आरक्तवर्णागांदद्यात्सुवर्णंचयथाविधि अन्यमते मंत्रः पीवोऽअन्नारयिवृधःसुमेधाःश्वेतःसिषक्तिनियुतामभिश्रीःतेवायवेसमनसोवितस्थुर्विश्वेन्नरःसपत्यानिचक्रुःइ तिजपपूजाहोममंत्रः स्वात्यर्क्षेएकद्वित्रिश्चतुष्पंचमासैर्विमुच्यते हैमीवाराजतीप्रतिमाअगुरुगंधोमदनकंपुष्पंगुग्गुलुघृतधूपंपायसंनैवेद्यंपायसाज्यंहोमद्रव्यंस्तेनवलिंहरेत् अन्मते स्वातौदारुणोव्याधिःतीव्रज्वरःश्लेष्मजंकटिशूलं चंद्रागमेसप्तदिनानिवीरस्थानदोषःचत्वरेपत्तनेमाषापिष्टेनपशुंकृत्वापंचान्नंचकृत्वाचतुष्पथेदद्यात् अंगंभूमौनिपतति कुक्षौदाहश्चयदिदृश्यतेतत्रचवलिमन्यंचकुर्यात् पिष्टमेषंकृत्वा एकविंशत्यपूपान् मद्यमांससहितान् पुटकेपूरयेत् निशाकालेवलिंहरेत् एकवृक्षेश्मशानेअर्घपुष्पादिकैर्भूतयागंकुर्यात् ततःशांतिःरोगमुक्तस्नानं अश्विन्यांपुष्येच मतांतरेस्वातौमृत्युःदमनकपुष्पनखधूपदध्योदनंपादेष्वहानिः १ । १५ । ३८ । १८ । रौप्यतण्डुलदानं ॥ इतिस्वातीनक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः ॥

॥ अथविशाखानक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः ॥

विशाखायांकुक्षिशूलंसर्वगात्रप्रपीडनंतिथि १५ खवेद ४० वन्हींदु १३ रुद्रा ११ श्चैवदिनानिच इंद्राग्नीदेवतातत्रइंद्राग्नीतिचमंत्रकं द्विसहस्रेकृतेजप्येदध्योदनादिहोमतःरक्तंपीतंचवस्त्रंचकृष्णंदद्यातुगोपतिं विशाखासंभवोरोगस्तत्क्षणादेवनश्यति मंत्रः इन्द्राग्नीऽआगतꣳसुतङ्गीर्भिर्नभोवरेण्यम् अस्यपातन्धियेषिता-इतिजपपूजाहोममंत्रः हैमीप्रतिमाश्रीखंडकुंकुमगंधःकमलपुष्पंदेवदारुधूपंघृतपायसंनैवेद्यंघृतपायसान्नंहोमद्रव्यंचित्रान्नेनवलिंहरेत् अन्यमतेविशाखायां वक्त्रंविस्तृतेदारुणंदंतजिव्हादिशूलंश्लेष्मवेष्टनकर्णवादित्रघोषःघूर्णितीश्चरूपेणवलिंदद्यात् अष्टांगंचक्षिपेद्दिशिसप्तान्नैस्तिलैरक्षोटैर्यवैःपूजयेत्मांसैःपायसैरुद्रशांतिःगोदानंनिशाकालेवलिदानं मतांतरे विशाखायांपंचदशरात्रंकृष्णतुलसीदेवदारु धूपगुडकोपहारैःवलिदानंपूजयेत् पादेष्वहानिः । १५ । ३८ । १९ । श्वेतदानं इतिविशाखानक्षत्रनिदानपूजोपक्रम; ॥

॥ अथअनुराधानक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः ॥

रोगोत्पत्यनुराधायांज्वरंतीव्रंमहाभयं षष्टि ६० द्वादश १२ षट्त्रिंश ३६ तथात्रिंश ३० दिनानिच मैत्रोपिदेवतातस्यमित्रावरुणश्चमंत्रतःजाप्पंसहस्रमेकंचयवाज्यैर्होमएवच अन्नंहिरण्यगोदानंछायादानंतथैवच तस्यानुष्टानमात्रेणरोगनाशश्चजायतेमंत्रः नमोमित्रस्यवरुणस्यचक्षसेमहोदेवायतदृतꣳसपर्य्यत दूरेदृशेदेवजातायकेतवेदिवस्पुत्रायसूर्य्यायशꣳसत इतिजपपूजाहोममंत्रः हैमीवाराजतीप्रतिमाकमलपुष्पंचंदनगंधःकुंकुमचंदनधूपंपायसंनैवेद्यंपायसाज्यंहोमद्रव्यं मधुशर्करापायसंघृतपूरितमाषान्नंमुद्गाभिश्चसंयुतंसूरणकंदंवलिंहरेत् अन्यमते गुदंमेढ्रेभिद्यते पैत्तिकोव्याधिःनेत्रस्रावःगात्रदाहोभूतदोषःसप्ताहंपक्षेचज्वराःसप्तमेन्हिभूतयागं-

सग्रहंकुर्यात् पायसेनघृतेनच सूर्यादीन्यजेत्वैश्रवणंदेवंचपितृपिंडंचदापयेत् कुवेरस्यसप्तान्नसहितंदानंदद्यात् ततःस्नातव्यं मतांतरेपिष्टस्यमृगंकृत्वाकुलत्थान्नमुखेदेयविसर्जयेत्चरणेषुगोदानं । १० । १ । ११ । । १८ । इतिअनुराधानक्षत्रनिदानपूजोमक्रमः ॥

॥ अथज्येष्टानक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः १८ ॥

ज्येष्टायांचभवेत्पीडापित्तरोगश्चजायते क्रंदतेव्याधितःसोपिश्राकुलोप्याकुलीनरःनव ३ पंच ५ त्रिवाणंच ५३ रसवेद ४६ पदक्रमात् इंद्रोपिदेवतातस्यसऽइषुहस्तैःसमंत्रकं त्रिसहस्रेकृतेजप्येतिलतंडुलहोमतःतिलावस्त्रंहिरण्यंचदानंक्लेशस्यनाशनम् मंत्रःसऽइषुहस्तैःसनिषङ्गिभिर्वशीसंस्रष्टासयुधऽइंद्रोगणेन संसृष्टजित्सोमपावावाहुशर्द्युग्रधन्वाप्रतिहिताभिरस्ता इतिजपपूजाहोममंत्रःहैमीप्रतिमाचंदनकुंकुमगंधाकरपूरधूपंचित्रान्नंनैवेद्यंसूरणकंदंमधुपायसंहोमद्रव्यंविचित्रगंधपुष्पेनदध्यान्नेनवलिंहरेत् अन्यमते ज्येष्टायांगुदावाहूचाभिद्येते पित्तकोपदाहः चंद्रागमेपक्षं द्विपक्षंमध्ये अंतेत्रयः पक्षाः पथिकस्यभयंभवेत् पिष्टेनगजंकृत्वाघटियंत्रंकृत्वाचतुष्पथेस्थापयेत् पुटकमन्नैः पूरयित्वानिशिवलिंहरेत् एकवृक्षेवलिंदद्यात् इष्टदेवतायजेत् मद्यैर्मांसैःसमस्तैःनैवेद्यैःशिवपूजांचकारयेत् मतांतरे पादेष्वहानिः । १ । १४ । ३८ । २७ । तिलतैलदानं इतिज्येष्टानक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः ॥

॥ अथमूलानक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः ॥

मूलारोगेमहत्कष्टंमहाक्लेशः प्रजायते उदरेचशूलपीडास्यात्सन्निपातोमहाभयंव्याधितोजीवितःसोपिकष्टंप्राप्नोतिवैध्रुवं शून्यं ० नंद ९ तिथि १५ रुद्रः ११ दिनानिचरणक्रमात् निर्ऋतिर्देवतातस्यमातेचपुत्रमंत्रतः जपेत्पंचसहस्रंचकंदमूलानिहोमयेत् कृष्णांगोस्तत्रदातव्यासप्तधान्यंसुवर्णकं छायादानंप्रदातव्यंस्वर्णवस्त्रंविशेषतः मंत्रः मातेचपुत्रम्पृथिवीपुरीष्यमाग्निंस्वेयोनाचभारुषा तांविश्वैर्देवैर्ऋतुभिः संविदानःप्रजापतिर्विश्वकर्म्माविमुंचतु इतिजपपूजाहोममंत्रः शीसकप्रतिमाकृष्णागुरुगंधा पद्मनीलोत्पलंपुष्पंकृष्णागुरु धूपः माषमिष्टान्नःनैवेद्यंमाषमिष्टान्नःहोमद्रव्यंमाषान्नेनवलींहरेत् अन्यमते मूलायांस्त्रीदोषोदेवदोषश्चमूर्ध्निपादयोश्चदाह अतीसारश्चवाश्लेष्मरोगः कंठशोषःवेपथुश्चंद्रागमेपक्षः अंतेपंचपक्षाः धनुर्हस्तेकार्यपंचभिःस्त्रीभिः सप्तान्नैःकुम्भंपूरयेत् अग्नौतण्डुलघृतयवहोमःमातृकायजनंभूतवलिंदद्यात् रोगमुक्तःधनिष्ठारेवतीरोहिणीहस्तेषुस्नानंकुर्य्यात् दानंदद्यात् मतांतरे पादेष्वाहानिः १ १९ ११ माषान्नदानंब्राह्मणभोजनंच इतिमूलानक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः

॥ अथपूर्वाषाढानक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः ॥

पूर्वाषाढेतुरोगश्चनानाव्याधिप्रपीडनं शिरोरोगंमहारोगंकंपतेक्रंदतेनरःशून्यं ० पंचदशं १५ चैवचतुर्विंश २४ तथांवरं ० आपोवैदेवतातस्यआपोस्मानितिमंत्रकं द्विसहस्रकृतेजप्येतिलतंडुलहोमतः वस्त्रतंडुलगोदानंघटंचसहिरण्यकंमंत्रः अपाधमपकिल्बिषमपकृत्यामपोरपःअपामार्गत्वमस्मदपदुःष्वप्न्यंसुव इतिजपपूजाहोममंत्रःचंदनगंधः कमलपुष्पंशैलेयधूपः घृतपायसंनैवेद्यंमसूरापिष्टअन्नंहोमद्रव्यंतदन्नेनवलिंहरेत् अ-

न्यमते पूर्वाषाढायांहृदिक्लेश:श्वाश:सन्निपात:नासिकाधमतेऽग्रमूलेदुर्गंधि:चक्रदोष: रविंपूजयेत् कुंभंपूरयेत् यागाग्रेचंडिकांदेवींयजेत् राक्षसींचयजेत् महादेवंचयजेत् गोदानंदद्यात् रोगमुक्तस्नानं रेवत्या ऽश्विनीचित्रामूलेषुपादेष्वहानि ॥ १० ॥ १५ ॥ ७ ॥ १८ ॥ मुक्तादानं इतिपूर्वाषाढानक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः

॥ अथउत्तराषाढानक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः ॥

उत्तराषाढकेरोगेकटिपीडाचदारुणा प्रलापंविक्रमंचैवोदरशूलंतथैवच त्रिंशद्दिनान्यथोविंश त्यष्टिंश २६ त्षोडश १६ स्तथाविश्वेदेवादेवताचविश्वेऽग्यसमंत्रकं जाप्यमेकसहस्रंतुतिलाज्ययवहोमतः ब्राह्मणान्भोजयेद्दानंहिरण्यमपिचांबरं मंत्रः विश्वेऽग्यमरुतोविश्वःऽऊतोविश्वेभवन्त्वग्न्यःसमिद्धाःविश्वेनोदेवाऽअवसागमन्तुविश्वमस्तुद्रविणांवाजोऽअस्मे इतिजपपूजाहोममंत्रःहैमीवाराजतीप्रतिमाचंदनगंधः कमलपुष्पंसघृतगुग्गुलुधूपंपायसाज्यान्नंनैवेद्यंपायसाज्यान्नंहोमद्रव्यंतदन्नेनवलिंहरेत् अन्यमते उत्तराषाढायांत्रासः शिरःशूलंमकररूपंकुर्यात् तिलौदनंदद्यात् पथियागःजनदृष्टिंवलिंहरेत्भूताष्टकयुक्तमहादेवपूजाषोडशान्नपक्वान्नमोदकापूपकैःसहग्रहशांतिकुर्यात् द्विजांदेवांश्चतर्पयेत् कुमारीतर्पणं खेचरीपूजनं एतेषांचवलिः दद्यात् पादेष्वहानि ॥ ३० ॥ २७ ॥ १८ ॥ १७ ॥ गोदानं इतिउत्तरषाढानक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः

॥ अथश्रवणनक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः ॥

श्रवणेश्रुतिरोगश्चवातपित्तसमुद्भवःविव्हलंचातिसारश्चगात्रेषुपरिपीडनंषष्टि ६० श्चैवचतुर्विंश २४ षष्टा ६ ष्टानि ८ दिनानिच गोविंदोदेवतातस्यइदंविष्णुसमंत्रकंजपायुतंप्रकुर्वीताततिलाज्ययवहोमतःगोदानंस्वर्णदानंचब्राह्मणान्भोजयेत्ततः अन्यमतेमंत्रःइदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदंसमूढमस्यपांऽसुरेस्वाहा इतिजपपूजा होममंत्रःहैमीप्रतिमाचंदनगंधःमालतीपुष्पंकरपूरगुग्गुलधूपः शाल्यन्नंखंडरसोपेतंभक्षभोज्यादिभिःसहनैवेद्यं पायसेनवलिंहरेत् अन्यमते श्रवणेभूतदोषःआदौसताहःमध्येदशअंतेषोडश १६ इच्छाव्याधिस्तुवैष्णवी कष्ट वातंपार्श्वेशूलंअतीसारश्च ज्वरोघोरःमूर्ध्निपादयोर्दाहःवैष्णवीशांतिःकार्यापिष्टमयंपशुंकुर्यात् कुंभसप्तान्नैमघ मांसातिलैःसहपूजयेत्चत्वरेवलिंदद्यात् पादेष्वहानिः ११ ३६ ३४ २९ ब्राह्मणभोजनदानं इतिश्रवणनक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः ॥

॥ अथधनिष्ठानक्षत्रनिदानपूजोपक्रम ः ॥

धनिष्ठायांभवेत्पीडामूत्रकृच्छ्रेणपीडितःज्वररक्तातिसारैश्चक्रंदतेचमुहुर्मुहुःतिथियुग्मरदाश्चैवएकविंशतथैवच १५ २ ३२ २१ वसवोदेवतातस्यवसोःपवित्रमंत्रकंजाप्यायुतंप्रकुर्वीतछत्रोपानहप्रदापयेत्योगिन्यापूजनीयाश्चगोदानंसहिरण्यकं अन्यमतेमंत्रःवसोपवित्रमसिशतधारंवसोःपवित्रमासिसहस्रधारम् देवस्त्वासवितापुनातुवसोः पवित्रेणशतधारेणसुध्वाकामधुक्षःइतिजपपूजाहोममंत्र :राजतीप्रतिमाकर्पूरचंदनगंधःकमलपुष्पंगुग्गलधूपः घृतपायसंनैवेद्यंउदंवरसमिधःअगुरुपायसाज्यसंयुक्तंहोमद्रव्यंलड्डुकापूपमध्वाज्यतिलापिष्टवलिंहरेत्अन्यमते ध

निष्ठायांव्याधिक्षोभःकुरुतेकुलदोषःनेत्रदाहःदारुणज्वरःआदौविंशाहंमध्येमासद्वयंसूकररूपंकृत्वाजलपूरितोघटःक्षीरसिद्धान्नदध्यन्नेनपुटकंपूरयेत् एकाकीवलिपूर्वकंऊषाकालेपरीक्षेत् आरोग्यंपूर्वतोभुंक्तेदक्षिणेमृत्युमाप्नुयात् कालस्याप्तिपश्चिमायांउत्तरेरोगहीनता पादेष्वहानि १५ । २५ । १८ । २७ । जयेत्रकुलदैवस्यंगृहे पंचान्नदेवता नवग्रहशांतिंकुर्यात् इतिधनिष्ठानक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः ॥

॥ अथशतभिषानक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः ॥

शतभिषायांभवेत्पीडापवनोव्याप्यतेध्रुवं शरीरेक्लेशमाप्नोतिशीतांगंतत्रदारुणं शून्यं ० वेदा ४ नृपतयो १६ द्वात्रिंशति ३२ दिनानिच वरुणोदेवतातस्यवरुणस्योत्तभनंमनुःजाप्यायुतंप्रकुर्वीत आज्यदध्योदनाहुतिः सहिरण्यंकुंभदानंतिलपिष्टंप्रदापयेत् अजादानंगोप्रदानंदत्वाचान्नंसुखीभवेत् शतभिषोद्भवरोगस्यतत्क्षणादेवनाशनं मंत्रः वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्थोवरुणस्यऋतसदनमसिवरुणस्यऽऋतसदनमासीद इतिजपपूजाहोममंत्रःराजतीप्रतिमाअगुरगंधाःकमलोत्पलंपुष्पंकर्पूरचंदनंधूपंघृतपोलिकानैवेद्यं अश्वत्थसमिधाघृतपोलिकाहोमद्रव्यंचित्रान्नेनवलिंहरेत् अन्यमते शतभिषायांश्लेष्माधिकपीडाशरीरंकंपतेभुक्तभुक्तेनक्षत्रेषोडशदिवसास्तिलमिश्रपायसेनाष्टांगतर्पणंदधिभक्तेनकुमारीपूजनंद्वितीयदिनेपंचब्राह्मणांभोजयेत् अन्नैःसुरामिश्रैर्यवैस्तिलैःपुटकंपूरयेत् नद्यांदीपंचदद्यात् उषःकालेवलिंहरेत् वरुणांविष्णुंचपूजयेत् पुनर्व्याधिर्नस्यात् लक्ष्मीप्रवर्धते पादेष्वहानि १८ । २७ । १८ । २० । वृषभदानं इतिशतभिषानक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः ॥

॥ अथपूर्वाभाद्रपदानक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः ॥

पूर्वाभाद्रपदेरोगंसर्वगात्रनिपीडनं छर्द्दिरोगकृतंदोषंत्रिदोषंजायतेन्यथा शून्यं० द्वादश १२ संख्यानिएकविंश २१ नवै ९ वचअजैकपाद्देवतास्यउतनोहिश्चमंत्रकं जाप्यंपंचसहस्रंचक्षीराज्यंशर्कराहुतिः श्वेतवस्त्रंसुवर्णंचरुक्मकांचनदानतः अजैकपादोषरोगस्तत्क्षणादेवनश्यति मंत्रः उतनोहिर्बुध्न्यःशृणोत्वजएकपात्पृथिवीसमुद्रः विश्वेदेवाऽऋतावृधोहुवानास्तुतामंत्रः कविशस्ताऽअवन्तु इतिजपपूजाहोममंत्रः अन्यमतेहैमीप्रतिमाकुंकमचंदनगंधः श्वेतार्कसंभवंपुष्पंशतौषधीमिश्रितधूपंदधिपायसंनैवेद्यंपायसकूष्मांडंहोमद्रव्यं कूष्मांडदध्यान्नेनवलिंहरेत् अन्यमते पूर्वाभाद्रपदायां ब्रह्मदोषःअष्टादशदिनानिचंद्रागमेमध्ये द्वादशअंते अष्टाविंशतिदिनानिपंचकुंभः श्मशानेचत्वरेवलिंदद्यात् तत्रवटुकंपूजयेत् तैलपूर्णंकटाहंकुर्यात् आतुरोहमितिकटाहंलंघयेत् घटिकांचएनंक्षिपेत् पुष्पेश्विन्यांमघायांविशाखायांस्नानंकुर्य्यात् पुनर्व्याधिंनपश्यतिसुवर्णदानं पादेष्वहानि १० १५ १७ १४ इतिपूर्वाभाद्रपदानक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः

॥ अथउत्तराभाद्रपदानक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः ॥

उत्तराभाद्रभेरोगःकामलापित्तसंभवः ज्वरातिसारःशूलानिव्रणपीडाक्रमानिच सूर्याः १२ षोडश १६ नंदाश्च ९ तथाष्टादश १८ चक्रमात् अहिर्बुध्न्योदेवतातस्यशिवोनामासिर्मंत्रतःअयुतंचकृतंजाप्यंतिलाज्यः

यवहोमतः रुक्मंचातिलदानानिकृष्णवस्त्रंहिरण्यकं मंत्रः शिवोनामासिस्वधितिस्तेपितानमस्तेऽअस्तुमामाहिंसीः निवर्तयाम्यायुषेन्नाद्यायप्रजननायरायस्पोषायसुप्रजास्त्वायसुवीर्य्याय इतिजपपूजाहोममंत्रः अन्यमते राजतीप्रतिमाचंदनकर्पूरगंधः पद्मोत्पलसविल्वपुष्पंगुग्गुलधूपः घृतपायसंनैवेद्यं मुद्गमाषतिलानाज्ययवव्रीहिहोमद्रव्यंतदन्नेनवालिंहरेत् अन्यमते उत्तराभाद्रपदायांपादपीडा उदरपीडाअनागतेपक्षं प्राप्तिर्मार्गेविमुच्यते अष्टाविंशतिदिनानियक्षदोषः पंथानदोषः पिष्टस्यमत्स्यंकृत्वा मातृबलिःद्वितीयदिनेस्थालीपाकंजलंक्षिपेत् मांसंगुडंपायसंचपूजयेत् मातृमण्डलं रोगमुक्तिस्नानं आर्द्राज्येष्टाहस्तासु पादेष्वहानि ७ १३ १ १८ आमान्नदानं इतिउत्तराभाद्रपदानक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः

॥ अथरेवतीनक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः ॥

रेवत्यांसंभवोरोगोवातपित्तप्रकोपतः पित्तभ्रमोभवेतस्य उरशूलंतथानृणां शून्यं० दिक १० शून्य० संख्याचचरणेविंशतिः २० क्रमात्पौष्णोपिदेवतातस्यपूषन्तवव्रतमंत्रकं जाप्पमेकसहस्रंचतिलतंडुलहोमतः फलानिदिव्यवस्त्राणिरुक्मंचवृषभंददेत् मंत्रः पूषन्तवव्रतेव्वयन्नरिष्येमकदाचनस्तोतारस्तऽइहस्मसि इतिजपपूजाहोममंत्रः हैमीप्रतिमारक्तचंदनगंधः मंदारपुष्पंघृतगुग्गुलधूपःघृतपायसंनैवेद्यंतदेवसकलंहोमद्रव्यंदध्यन्नेनवलिंहरेत् अन्यमते रेवत्यांमहाघोरेज्वरःपथिकलक्षणं आगमेत्रयोदशदिनानि अंतेचाष्टौमुच्यमानेषोडशः पादयोशिरः शूलंवेपथुः पिष्टस्यमत्स्यान्नंक्षीरयुक्तंतिलोमूर्ध्निप्रदातव्यः पुष्पाणिविविधानिच अश्विनीपुष्पशक्रानुराधाविशाखासुस्नानंकार्यंशुभंभवेत् पादेष्वहानि १२ १८ २० १४ इतिरेवतीनक्षत्रनिदानपूजोपक्रमः

॥ अथबलिदानमंत्रः ॥

भूतेशत्वङ्कृतोयस्माद्रोगनाथोमहाज्वरः रोगादस्माच्चमांत्राहित्वंगृहीतोत्तमांबलिं अथमृत्युयोगानिर्णयः जन्मर्क्षाधिक्षनक्षत्रेराशिलग्नेषु यमघंटेप्रत्यारिनैधनतारकेऽष्टमचंद्रेचरोगोत्पत्तौमृत्युः रविमघाद्वादशीनां बुधोत्तराषाढातृतयिनां गुरुशतभिषकषष्ठीनां शुक्राष्टमीअश्विनीनां शनिपूर्वाषाढानवमीनांचयोगेमृत्युः भरन्यऽनुराधावाचंद्रार्कौ आर्द्रेत्तराषाढावासोमे मघाशतभिषकवाभौमे अश्विनीविशाखावाबुधे ज्येष्टामृगशिरोवागुरौ श्रवणअश्लेषावाभृगौपूर्वाभाद्रपदाहस्तावाशनौचमृत्युयोगः अतोऽन्नोक्तास्तिथिवारर्क्षशांतयोविस्तृताय.

॥ अथतिथिवारर्क्षेपुसाधारणप्रयोगः ॥

मासपक्ष्याद्युलिख्यममोत्यत्रस्यव्याधेर्जीवशरीराविरोधेनसंमूलनाशार्थममुकनक्षत्रममुकदेवता मंत्रस्यजपंकरिष्ये इतिसंकल्प अष्टशताष्टसहस्रयुतान्यतमसंख्यमावक्ष्माणतत्तद्देवतामंत्रस्यजपंकृत्वा अन्येनवाकारयित्वा-मासपक्ष्याद्युलिख्यममोत्पन्नव्याधेर्जीवशरीराविरोधेनसमूलनिवृत्तयेऽमुकशांतिकरिष्ये इतिसंकल्पःगणेशादिपुजनंआचार्यपुजनंचकृत्वा ततआचार्येणभूमौतंडुलैश्चतुरस्त्रंमंडलंकृत्वा तत्रहैमींतत्तन्नक्षत्रदेवतांवस्त्रद्वय

परिवृतांवक्षमाणतत्तद्गंधधूपादिभिःधूपयेत् तदीशान्येधान्येकुंभंसंस्थाप्यजलमापूर्य्यगंधसर्वौषधीदूर्वापल्लवपंच त्वक्सप्तमृत्फलंपंचरत्नंपंचगव्यहिरण्यानितत्तन्मंत्रैःक्षिप्तावस्त्रद्वयेनावेष्टयसर्वेसमुद्राइतितीर्थान्यावाह्य तत्वाया मीतितत्रवरुणमावाह्यसंपूज्याग्निंग्रहांश्चप्रतिष्ठाप्याज्यभागांतेतत्तन्नक्षत्रदेवतामंत्रेणतत्तद्द्रव्येणचाष्टो त्तरष्टयासाह स्त्रशताय्ष्टाविंशत्यन्यतमसंख्ययाहोमंकृत्वाशांतिकलशेनजयमानाभिषेकोविहितेतोप्रतिमां रोगीब्राह्मणायद द्यात् उक्तगंधाभावेचंदनं पुष्पाभावेशतपत्रं धूपाभावेगुग्गुलुःनैवेद्याभावेघृतोदनंहोमद्रव्याभावेतिलाःमंत्रावि ज्ञानेगायत्री अष्टोत्तरसहस्त्रंमृत्युनिर्देशेअष्टोत्तरशतमन्यद्वाजुहुयात् ततः कुशोदकेनवरुणसूक्तैर्पुराणमंत्रैश्चाभि षेकंकुर्यात् पूर्णाहुतिं वसोर्धारांचहुत्वाशांतिपाठंकृत्वा आशिषंदद्यात् अतःसर्वशांतिर्भवति ततःआचार्याय सुवर्णप्रतिमांवस्त्रयुग्मेनवेष्टितांसवत्सांगांसालंकारांदद्यात्इतरेभ्योपिदक्षिणांदद्यात् ब्राह्मणाश्चभोजयेत्इतिरो गोत्पत्तिशांतिप्रयोग ॥ इतिकष्टावलीसमाप्तः

॥ अथवारनक्षत्र ॥

संयोगकष्टानिर्णयसंख्यावालिपूजाविधानांलिख्यते अश्विनीनक्षत्रे रवि. शनिवारे क्लेशिनः पीड्यंते- रविशनिवारेदिन १२ अन्यवारेदिन ९ प्रथमपादेअहोरात्रं द्वितीयेदिन १० तृतीयेपादेदिन १८ चतु- र्थपादेदिन ९ अश्विनौदेवता माषसंख्यकौ हिरण्मयंकारयेत् नीलोत्वलपुष्पं भूतकेशीधूपः मोदकोपहा- रैर्नैवेद्यं सिततंडुलपिष्टेनअश्वंकृत्वा श्वेतपुष्पंमुखेदेयं मधुसर्पिचमुखेदत्वा ओंस्वाहा अश्विनातेजसा- इतिपूजामंत्रः अश्वत्थसमिधाहोमः अष्टोतरशतगायत्रीमंत्रेण अपामार्गमूलंकरेबध्वास्वर्णदानं पिष्टस्य- गंधर्वमूर्तिंकृत्वा क्लेशांनाशयति.

॥ अथभरणीनक्षत्रे ॥

सोमबुधशनिवारे महताकष्टेनजीवति अन्यवारेनजीवति यमोदेवता माषसंख्यकंहिरण्मयंमूर्तिंकृत्वा कृष्णतुलसीपुष्पं गजदंतधूपः गुडकंनैवेद्यं पिष्टस्यमाहिषंकृत्वा गुडमधुघृतरजतंमुखेदेयम् ओंस्वाहा यमा- यत्वेतिपूजामंत्रः तिलाक्षतमधुघृतहोमः अष्टोतरशतगायत्रीमंत्रेण अगस्त्यमूलंकरेबध्वा महिषदानं पिष्ट- स्यमहिषमूर्तिंकृत्वा क्लेशांनाशयति.

॥ अथकृतिकानक्षत्रमाह ॥

गरुवारेदिन ६० अन्यवारेदिन ९ अग्निर्देवता माषसंख्यकहिरण्मयं अग्निमूर्तिंकृत्वा यूथिकापुष्पं- सर्ज्जरसघृतधूपां घृतोदनंनैवेद्यं दधियुक्तं मुखेदेयं ओंस्वाहा अग्निर्दूतमितिमंत्रेण संपूज्य घृतहोमःअष्टो- त्तरशतसंख्यकगायत्रीमंत्रेण कार्पासमूलंकरेबद्ध्वा शुक्लवस्त्रदानं पिष्टस्यछागमूर्तिं कृत्वासुगंधिपुष्पं मुखे- दत्वा क्लेशंनाशयति.